॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं श्री जीराउला-पावापुरी-शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः ॥
॥ श्री प्रेम-भुवनभानु-पद्म-जयघोष-हेमचंद्र-जयसुंदर-कल्याणबोधिसूरिसद्गुरुभ्यो नमः ॥
॥ ॐ ह्रीँ ऐँ क्लीँ श्री पद्मावतीदेव्यै नमः ॥

हेमकलिका-3

श्री बृहद्धारणायंत्र

एवं

श्री धारणागतियंत्र

-: ग्रंथ संशोधन-संपादन हेतु :-

मारा प्रभुना संघनी सर्वतोमुखी उन्नति हो !
मारा प्रभुना संघमां सर्वत्र सुख ने शांति हो !
मारा प्रभुनी भक्ति काजे संशोधन जिन-यंत्रनुं,
मारा प्रभु ! देजो मने वरदान अेक ज मोक्षनुं ।

-: प्रकाशक :-

श्री जिनशासन आराधना ट्रस्ट

शिल्पविधि प्रकाशन

ग्रंथनाम : **श्री बृहद्धारणायंत्र एवं श्री धारणागतियंत्र (हेमकलिका-3)**

ग्रंथ विषय : श्री संघमंदिर या गृहमंदिरमें परमात्मा बिराजमान करने से पूर्व श्री संघ या श्रावकका परमात्मा के साथ देखा जाता षड्वर्गशुद्ध मेलापक, जो यहाँ कोष्टक द्वारा सविशेष सरलता से शुद्धिपूर्वक दिखाया गया है ।

मूल ग्रंथकार : प.पू. विद्वद्वरेण्य मुनिराजश्री **दर्शनविजयजी** म.सा. **'त्रिपुटी'**

संशोधन+संपादन+संवर्धन+हिन्दी भाषांतरण : प.पू. वर्धमानतपोनिधि आ.भ.श्री **कल्याणबोधिसूरीश्वरजी** म.सा. के शिष्य प.पू. मुनिश्री **सौम्यरत्नविजयजी** म.सा.

प्रथम आवृत्ति : वि.सं. 2074 ● ई.स. 2018 ● प्रति : 500

किंमत : रु. 150/-

प्राप्तिस्थान :

- **अहमदाबाद : सिद्धांतमहोदधि श्री प्रेमसूरीश्वरजी श्रुतसदन**
  'प्रेमकुंज', परिमल जैन संघ उपाश्रय की सामने गली में, आनंदमंगल कोम्पलेक्ष-3 के पास, तुलसीबाग सोसायटी, हीराबाग क्रोसींग, पालडी, अहमदाबाद-380006 दूरभाष : 99745 87879 (योगेशभाई)
- **अहमदाबाद : श्री बिजुलभाई शाह**
  4, आनंदकुंज सोसायटी, कोठारी टावर के पास, रामनगर, साबरमती, अहमदाबाद-380 005
  दूरभाष : 94277 11209, 84908 21546
- **मुंबई : श्री अक्षयभाई शाह**
  506, पद्म एपार्टमेन्ट, जैन देरासर के सामने, सर्वोदयनगर, मुलुंड (प.), मुंबई-400080
  दूरभाष : 95945 55505

कायमी संपर्क : **मुनि सौम्यरत्नविजय C/o. शिल्पविधि**
11, बोम्बे मार्केट, रेल्वेपुरा, अहमदाबाद-380 002
दूरभाष : 94265 85904
Website : www.shilpvidhi.org
E-mail : shilp.vidhi@gmail.com

अक्षरांकन : जय जिनेन्द्र ग्राफिक्स, 30, स्वाति सोसायटी, नवरंगपुरा, अहमदाबाद-14
जय जिनेन्द्र : 98250 24204, कुश : 99256 17992
E-mail : jayjinendra90@yahoo.com

© Copyright held by Publisher & Author under India copyright act, 1957
http://copyright.govt.in/documents/copyright rules 195

–: दिव्यकृपा :–

सुविशालगच्छसर्जक परमब्रह्ममूर्ति प.पू.आचार्यदेव श्रीमद्विजय

प्रेमसूरीश्वरजी महाराजा

युगप्रभावक, न्यायविशारद प.पू.आचार्यदेव श्रीमद्विजय

भुवनभानुसूरीश्वरजी महाराजा

समतासागर पूज्यपाद पंन्यासप्रवरश्री

पद्मविजयजी गणिवर्य

–: अमीवर्षा :–

पूज्यपाद समर्थ गीतार्थ गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीमद्विजय

जयघोषसूरीश्वरजी महाराजा

पूज्यपाद भवोदधितारक वैराग्यदेशनादक्ष आचार्यदेव श्रीमद्विजय

हेमचंद्रसूरीश्वरजी महाराजा

प.पू. संघशासनकौशल्याधार आचार्यदेव श्रीमद्विजय

जयसुंदरसूरीश्वरजी महाराजा

प.पू. वर्धमानतपोनिधि आचार्यदेव श्रीमद्विजय

कल्याणबोधिसूरीश्वरजी महाराजा

प्रकाशक की कलम से...

- धारणागति यंत्र अर्थात् संघ, ट्रस्ट या व्यक्ति के लिए संघमंदिर अथवा गृहमंदिर में पधरावनी के लिए कौन से भगवान सविशेष अनुकूल है वह देखने का कोष्टक ।
- प्रस्तुत ग्रंथरत्न, ऐसे ही दो ग्रंथों का संग्राहक है, (1) श्री बृहद् धारणायंत्र और (2) श्री धारणागति यंत्र ।

(1) श्री बृहद् धारणायंत्र :

वि.सं. 1987 (ई. 1931) में, 'त्रिपुटी' महाराज से प्रसिद्ध और उनमें से एक विद्वद्वर्य मुनिवर्यश्री **दर्शनविजयजी** महाराजने अति परिश्रम से षड्वर्ग की निश्चित रुप से स्पष्टता बनी रहे ऐसे स्वरुप में संस्कृत भाषा निबद्ध शताधिक श्लोकमय श्री बृहद् धारणायंत्र नाम के ग्रंथ की रचना की ।

यह ग्रंथ श्री चारित्र स्मारक ग्रंथमाला (मु. विरमगाम, गुजरात) से प्रकाशित हुआ था । इस में अनेक विषयों की विस्तृत स्पष्टता होने के कारण यह विषय अत्यंत पारदर्शी बना । जिस के लिए उन के प्रति बहुत आभार व्यक्त करते हैं ।

अलबत्त, बृहद् धारणायंत्र ग्रंथ के कोष्टकों के संदर्भ में श्री शांतिनाथ भगवान के जन्मनक्षत्र के बारे में विसंवादिता हुई, परिणामस्वरुप प्राचीन शांतिनाथ चरित्रों के आधार पर उनका निर्णय करके कोष्टकों को शुद्ध करने की जरुरत पडी ।

हमारे ट्रस्ट के सबल और सक्षम प्रेरणास्रोत प.पू.वैराग्यदेशनादक्ष प्राचीनश्रुतोद्धारक आ.भ.श्रीमद्विजय **हेमचंद्रसूरीश्वरजी** महाराजा के शिष्यरत्न प.पू.वर्धमानतपोनिधि आ.भ.श्रीमद्विजय **कल्याणबोधिसूरीश्वरजी** महाराजा के शिष्य पूज्य मुनिराजश्री **सौम्यरत्नविजयजी** ने अपने संसारी मातृश्री **नीरुबहन** के समर्पणार्थे प्रस्तुत संस्कृत ग्रंथ का '**निरुपमा**' नाम से भाषाटीका स्वरुप में हिन्दी भाषांतरण किया है, जो साथ में ही प्रकाशित हो रहा है ।

इस पुनः प्रकाशन के अवसर पर विद्वद्वरेण्य त्रिपुटी मुनिराजश्री **दर्शनविजयजी** तथा **पूर्व प्रकाशक** के प्रति आभार प्रदर्शित करते हैं ।

(2) श्री धारणागति यंत्र :

बृहद् धारणायंत्र ग्रंथ के आधार पर हरवक्त साधक अक्षर पर से अनुकूल भगवान देखने में कालक्षेप होता था, इसलिए वह कल्याणकलिका ग्रंथ के कोष्टक जितना प्रसिद्ध नहीं बन पाया । फिर भी बहुत सारे अनुभवी-पूज्य आचार्य भगवंत, प्रस्तुत ग्रंथ की पारदर्शिता के कारण इस ग्रंथ के आधार पर ही मेलापक देखते थे, इसलिए पूज्य मुनिराजश्री **सौम्यरत्नविजयजी**ने कल्याणकलिका की तरह सभी को उपयोगी हो, ऐसे स्वरुप के बृहद् धारणायंत्र ग्रंथ के आधार पर ही साधक अक्षर पर से अनुकूल भगवान देखने के दो प्रकार के सरल मेलापक-कोष्टक बनायें । जो दो साल पूर्व '**श्री धारणागतियंत्र**' ग्रंथ स्वरुप में ट्रस्ट द्वारा ही गुजराती में प्रकाशित हुआ था । कोष्टक-मेलापक उपरांत, इस में बहुत सारे विषयों के बारे में स्पष्टता होने से वह संपूर्ण ग्रंथ राष्ट्रभाषा हिन्दी में भी प्रकाशित होने जा रहा है ।

प्रस्तुत कोष्टक थोडे छोटे (Reduce) करके प्रचलित पंचांग की साईज में बराबर समा जाएं और कम से कम पेज में, पढने में सरलता रहें ऐसे तैयार करने के बाद प्रकाशित करने का प्रयत्न किया गया है । (जो लोग अपने वार्षिक पंचांगो में इन कोष्टकों को छपवाना चाहतें हैं वो खुशी से ऐसा कर सकतें हैं ।)

पूज्यपाद गुरुदेवश्री की कृपा और प्रेरणा से गत ३३ सालों से श्रुतसर्जन-संशोधन-संपादन मढ़ा श्रुतप्रकाशन का कार्य चल रहा है । इसी श्रृंखला में नवीनतम संशोधित प्रस्तुत प्रकाशन से अंत:करण में उजास की अनुभूति हो रही है ।

लि.

श्री जिनशासन आराधना ट्रस्ट
श्री चंद्रकुमार जरीवाला
श्री पुंडरिकभाई शाह
श्री ललितभाई कोठारी
श्री विनयचंद्र कोठारी



आनंद की बलिहारी...

- श्री शंखेश्वर तीर्थ शणगार तथा श्री पावापुरी तीर्थ (राज.) श्रृंगार परमाराध्यपाद् श्री **शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान,** जगजयवंत श्री **जीराउला पार्श्वनाथ भगवान** तथा शत्रुंजयतीर्थाधिपति श्री **आदिनाथ भगवान** के अवर्णनीय, अचिंत्य और अनुपम अनुग्रह के परिणाम स्वरुप प्रस्तुत ग्रंथ सकल श्री जैन संघ के करकमल में अर्पित करके धन्यता का अनुभव करता हूँ ।
- वर्तमान प्रणालिकानुसार श्री संघ अथवा श्रावक, प्रस्तुत ग्रंथ के आधार पर स्वानुकूल तीर्थंकर भगवंत को मंदिर में बिराजमान करके, स्व और पर, उभय के लिए सर्व प्रकार के कल्याणों की परंपरा को प्राप्त करें, वही उसका सदाशय है ।

धारणागतियंत्र : कल और आज

- श्री संघ या साधक के लिए अपने अनुकूल तीर्थंकर भगवंत कौन से है वह देखने का यंत्र है धारणागतियंत्र । इस के द्वारा षड्वर्गशुद्ध मेलापक देखना होता है, जिसकी विशेष समज 'धारणागतियंत्र भूमिका' अध्याय में प्रस्तुत है ।
- इस तरह, षड्वर्गशुद्ध मेलापक देखने की परंपरा कितनी प्राचीन है, वह संशोधन का विषय है । अलबत्त, जिनशासन में वर्तमान उपलब्ध प्राचीन हस्तलिखित प्रति में 14-15 वीं सदी में हो गये सहस्त्रावधानी श्री **मुनिसुंदरसूरीश्वरजी** महाराजा, पूर्वाचार्यश्री **गुणरत्नसूरीश्वरजी** महाराजा आदि कृत पाँच-छः पत्रमय धारणागतियाँ मिलती है, जो अति संक्षिप्त होती है ।

  बाद के समय में लिखी गई प्रतिष्ठाविधियाँ और जिनबिंबप्रवेश विधि की हस्तलिखित प्रतिओं में तत्कालीन गुरुभगवंतो के द्वारा उन्हीं का यथाशक्य विस्तार किया गया, वो देखने को मिलता है ।
- इस तरह, षड्वर्गशुद्धि देखना, सिर्फ जैन धर्म को ही संमत है ऐसा नहीं है । पंद्रहवी सदी के सूत्रधार (शिल्पकार) **मंडन**ने स्वरचित शिल्पग्रंथ देवतामूर्ति प्रकरण में कोई भी (धर्म-संप्रदाय की) देवप्रतिमा को स्थापित करने से पहले षड्वर्गशुद्धि अवश्य देखने का निर्देश किया है ।
- शिल्प तथा विधिविधान के प्रखर ज्ञाता प.पू.पंन्यासप्रवरश्री **कल्याणविजयजी**ने कल्याणकलिका भाग-1 में प्राचीन पत्रों के आधार पर षड्वर्गशुद्ध कोष्टक प्रस्तुत किये।

इस स्वरुप में वह सर्व प्रथम होने से सकल श्रीसंघ में अति प्रचलित हुए। वार्षिक पंचांगो में भी अद्यापि उनका चलन रहा है। सकल संघ को वे बहुत उपकारक बने है।

- वि.सं. 1987 (ई. 1931) में त्रिपुटी म. से प्रसिद्ध और उनमें से एक विद्वद्वर्य मुनिवर्यश्री **दर्शनविजयजी** महाराजने अति परिश्रमपूर्वक षड्वर्ग की निश्चित स्पष्टता बनी रहे ऐसे स्वरुप में बृहद् धारणा यंत्र नाम के ग्रंथ की रचना की। जिन में बहुत सारे विषयों की सविस्तर स्पष्टता होने के कारण यह विषय ज्यादा पारदर्शी बना।
- जो कि, वह ग्रंथ के आधार पर हर वक्त साधक अक्षर पर से अनुकूल भगवान देखने में कालक्षेप होता था, इसलिए वह कल्याणकलिका कोष्टक जितने प्रसिद्ध नहीं बनें। हमारे पूज्य दादा-गुरुदेवश्री आदि कुछ पूज्य इस ग्रंथ के आधार पर मेलापक देखते थे। इसलिए हमने उस के आधार पर कल्याणकलिका की तरह सभी को उपयोगी हो, ऐसे स्वरुप के साधक अक्षर पर से अनुकूल भगवान देखने के सरल कोष्टक बनाएँ।
- उपरांत, पूज्यपाद तर्कसम्राट संघशासनकौशल्याधार आ.भ.श्री **जयसुंदरसूरीश्वरजी** महाराज के कहे अनुसार वर्तमान लोकमाँग के अनुरुप जो तो निश्चित पार्श्वनाथ इत्यादि भगवान, कौन कौन से साधक अक्षर अ, आ, इत्यादि पर आतें हैं, वही बताते कोष्टक भी उपयोगी बन सके ऐसा होने के कारण, उसे भी तैयार करके इस पुस्तिका में प्रस्तुत किया गया है।
- हमारे बनाए हुए सरल कोष्टकों का वर्तमान पंचांगों में छापे गये प्रचलित कोष्टकों के साथ तालमेल करतें कुछ स्थान सोचनीय लगे। उपरांत, बृहद् धारणा यंत्र ग्रंथ संदर्भ में श्री शांतिनाथ भगवान के जन्मनक्षत्र के बारे में भी विसंवादिता हुई, जिस के कारण प्राचीन शांतिनाथ चरित्रों के आधार पर उसका निर्णय करके कोष्टक को शुद्ध किया गया।
- इन कोष्टकों को तैयार करने में सकल श्रीसंघ मान्य मुहूर्तप्रदाता उपाध्यायप्रवर श्री **विमलसेन विजयजी** महाराजा का सविशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। तैयार किए गये कोष्टक अभिप्राय-सूचनादि के लिए स्व-पर समुदाय के अनेक गुरुभगवंतो को भेजने से उनके अभिप्राय और अनुभवों से भी प्रस्तुत ग्रंथ ज्यादा शुद्ध और समृद्ध बना है। इस संदर्भ में 'मेलापक के बारे में अनुभव की डकार' नाम का अध्याय अवश्य पढें। वे सर्व पूज्यों का भी मैं अंतःकरण से आभारी हूँ।

- सकल श्रीसंघ परमात्मा के साथ मेलापक देखने में यह कोष्टक का उपयोग करेंगे तो हमारा यह परिश्रम सार्थक रहेगा ।
- षड्वर्गशुद्धि विषयक प्रस्तुत ग्रंथ मेरी आत्मा के षड् अरिवर्ग से शुद्धि करनेवाला हो, ऐसी हार्दिक भावना के साथ, जिनाज्ञाविरुद्ध कोई भी प्ररुपणा हुई हो तो अंत:करण से मिच्छामि दुक्कडम् ।

– मुनि सौम्यरत्नविजय

* * *

–: श्रुतलाभ :–

श्रावक-श्राविका उपाश्रय के ज्ञानद्रव्य के सहयोग से...

卐

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार



शा. वीमलाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाला भवन

हीराजैन सोसायटी, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५

(O) 22132543 (M) 94265 85904 E-mail : ahoshrut.bs@gmail.com

- **ज्ञानभंडार की विशेषता :**

: ज्ञानभंडार उद्घाटन निश्रा व प्रमुख मार्गदर्शक :

प.पू. प्राचीनश्रुतोद्धारक वैराग्यदेशनादक्ष आ.भ.श्री हेमचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजा

1) संवत 2063 में स्वद्रव्य से निर्मित अविरित प्रगतिशील संस्था...
2) जैन धर्म के प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी, गुजराती व अंग्रेजी भाषा के 2500 प्रताकार और 21000 पुस्तकोंका अनूठा संग्रह...
3) पूज्य गुरुभगवंतो को 29000 पुस्तके स्वाध्याय के लिये इस्यु...
4) अहो ! श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जिर्णोद्धार के तहत डीझीटलाइजेशन के द्वारा प्राय: जीर्ण अप्राप्य 222 पुस्तको का पुन: प्रकाशन...
5) जिनशासन की धरोधर हस्तलिखित प्रतों के 40 ज्ञानभंडार को डीझीटलाइजेशन के द्वारा श्रुतरक्षा और विद्वानों को संशोधन संपादन के लिये 1500 हस्तप्रत की प्रतिलिपि उपलब्ध कराई-भेजी...
6) अहो ! श्रुतज्ञानम् स्वाध्याय संग्रह के अंतर्गत प्रकरण ग्रंथो के गाथा व अर्थ हिंदी भाषा - देवनागरी में प्रकाशन...
7) बच्चों के लिये अंग्रेजी में चरित्र कथाओं का सचित्र प्रकाशन...
8) अहो ! श्रुतज्ञानम् के अंतर्गत प्रियम् के बहुजन-उपयोगी 51 पुस्तको का प्रकाशन...
9) अहो ! श्रुतज्ञानम् - चातुर्मासिक के 42 अंक स्वद्रव्य से प्रकाशित...

'निरुपमा' भाषाटीका सह

श्री बृहद्धारणायंत्र

नमः श्रीयशोविजयवाचकपादेभ्यः ।

किंचिद्वक्तव्यं

इहहि जयति जैनं शासनं व्याकरण-न्याय-साहित्येतिहास-ज्योतिष्क-यंत्र-तत्त्व प्रमुख-विषयाकीर्णैर्ग्रन्थैरर्हद्वदनप्रभवैरागमैश्च । न तत्रास्ति काचिदपि ग्रंथक्षतिः । तथापि जिनशासनगौरवाय ज्ञानाभिवृद्धये "शुभे यथाशक्ति यतनीयमिति" कृत्वा, श्रीसंघचरणेषु समुपदीक्रियते, धारणागतिदेशकोयमपि एको ग्रंथः ॥

ननु क्वचित् काचित् कालीसरस्वती-सूरिशेखर-श्रीमुनिसुंदरसूरिपाद-प्रमुखाचार्यैर्विरचिता परस्परविरुद्धा गहना तिक्ष्णधीगम्या पंच-षट्पत्रमया धारणागतिः प्राप्यते । न तथा निश्चयाऽऽत्मकं झटीति ज्ञानं भवति "यदस्मिन्ग्रामेण वाऽनेनाचार्येणायं जिनः प्रतिष्ठाप्य इति" ।

ततोऽद्यावधि धारणागतिदृष्टारोऽपि पश्यन्ति तत् राशिकूटेन विशोपकेन वर्गेण वा । तदपि महताऽऽयासेनाधिककालक्षेपेन ॥

एवमेतत्सर्वं प्रयत्नसाध्यं विचिन्त्य तेषामेवसूरिपुंगवानां वचनानुसारेण गुरुकृपया मुग्धबोधकरः सरलो स-यंत्रो बृहद्धारणाग्रंथस्समर्थितो ममगुरुभ्रात्रा मुनिदर्शनविजयेन ॥

ग्रंथेस्मिन्कि किमस्ति तत्तु ग्रंथादेवावलोकनीयं विद्वद्भिः ॥

अनेन सर्वो लोकः सुखं धारणागतिमवाप्य स्वाभीष्टपूरकं जिनं स्थापयिष्यति । वाञ्छितं च प्राप्स्यति । तदेवमुक्तं ग्रंथेऽपि—

ग्रंथात् ज्ञानं विधिवादः, प्रतिष्ठार्चासुदर्शनम् ।
भावश्चरणं नैजर्य्यं, क्रमशो भवतु नृणाम् ॥117॥

वीर सं. 2457
कलकत्ता

इति निवेदयति,
श्रीयशोविजयजैनगुरुकुलसंस्थापकार्य
श्रीचारित्रविजय-चंचरीको
मुनि-ज्ञानविजयः

* * *

किञ्चिद् वक्तव्य

इस जगत में व्याकरण, न्याय, साहित्य, इतिहास, ज्योतिष, यंत्र, तत्वप्रमुख अधिकांशविषयों के ग्रंथरत्नों से व तीर्थंकरों के मुखकमल से उद्भवित आगमग्रंथो से जैनशासन जगजयवंत है । जहाँ कोइ भी विषय के ग्रंथरत्न से न्यूनता नहि । तथापि जिनशासन के गौरव के लिये ज्ञान की अभिवृद्धि हेतु ''शुभकार्य में यथाशक्ति प्रयत्न करना चाहिए' ऐसा मनोनिर्धार कर श्रीसंघ के चरणों में धारणागतिदेशक यह ग्रंथ उपस्थित किया जा रहा है ।

यद्यपि क्वचित् पूर्वकाल में कितनेक कालीसरस्वतीसूरिशेखर श्रीमुनिसुंदरसूरीश्वरजी महाराजा आदि आचार्यवर्यो कृत, परस्पर विरुद्ध, गहन और तीक्ष्णबुद्धिगम्या ऐसी पांच-छः पत्रमय धारणागति उपलब्ध होती है, फिर भी उस से ''इस ग्राम के लिये या इस आचार्य के लिये यह जिन प्रतिष्ठा करने योग्य है'' ऐसा निश्चयात्मक ज्ञान सरलता से नहि हो सकता ।

उस कारण से आज तक धारणागति का उपयोग करनेवाले भी राशिकूट से, विशोपक से या वर्ग निकालकर उसका उपयोग करते है, वह भी बहुत प्रयत्न से और अधिक समय निकालने पर ।

अतः यह सब कार्य प्रयत्नसाध्य जानकर वही पूर्वसूरिपुंगवों के वचनानुसार गुरुकृपा से मुग्धजन को भी सुखबोधक सरल एसे यंत्र सहित बृहद्धारणाग्रन्थ की मेरे गुरुभ्राता मुनि दर्शनविजयजीने रचना की ।

इस ग्रन्थ में क्या है ?—वह तो ग्रन्थावलोकन से ही विद्वानों को जानना चाहिए ।

इस ग्रन्थरचना से सर्वलोक सुखरुप से धारणागति को प्राप्त कर इच्छितपूरक जिन की स्थापना करेंगे एवं वांछित को प्राप्त करेंगे । इसी ग्रंथ में (प्रशस्ति में) कहा भी है कि —

''ग्रंथ से ज्ञान होता है, जिससे उत्तरोत्तर क्रमिक रुप में मनुष्यों को विधिवाद (विधिज्ञान-आचरणादि), प्रभुप्रतिष्ठा, प्रभुपूजा, सम्यक् शुभभाव, चारित्र एवं मोक्ष की प्राप्ति हो ।''

निवेदक

श्रीयशोविजयजैनगुरुकुलसंस्थापक

श्री चारित्रविजयचंचरीक

मुनि ज्ञानविजय

* * *

अनुक्रमः

	पृष्ठांकः
अध्याय-1	
— मंगलाचरणम्	१
— उद्देशः	२
— द्वारम्	२
— नक्षत्राणि	३
— अक्षराः	३
— योनिः	४
— नक्षत्रयंत्रम्	५
— तारा गणश्च	६
— गणमेलकयंत्रम्	७
— नाडी	७
— द्वादशारपादवेधयंत्र	८
— युजि राशयश्च	९
— राशियंत्रम्	१०
— अंतरयुति-राशिकूटः	१०
— जातिवश्यं, वर्णाः पतिग्रहाश्च	१२
— ग्रहचक्र	१३
— ग्रहमैत्र्यादिः	१३
— राशिकूटचक्रम्	१५
— वर्गाः, वर्गवैरयंत्रम्	१६
— विशोपकः	१६
— लभ्यदेययंत्रम्	१७
— साधकसाध्यविशोपकयंत्रम्	१८
— लभ्य-देय ध्रुवांक यंत्रम्	१९
— ग्रामधारणा	१९
— ग्रामराशियंत्रम्	१९
— कांकिणी	२०
— कांकिणीयंत्रम्	२१

	पृष्ठांकः
अध्याय-2	
— जिननाम	२२
— लांछनविशेषः	२३
— जिननक्षत्र-राशयः	२४
— जिनराश्यादियंत्रम्-1	२५
— जिनराश्यादियंत्रम्-2	२६
— तीर्थंकरनाडी-गण-यंत्रम्	२७
— तीर्थंकरराशिकूटयंत्रम्	२८
— द्वादशारतीर्थकरवेधयंत्रम्	३०
— साधकतीर्थकरतारायंत्रम्	३०
— साधकतीर्थकर-नक्षत्र-योनि-राशियंत्र	३१
— कूटषट्कम्	३२
अध्याय-3	
— अक्षरसमूहः न्यासश्च	३२
— सर्वाक्षरकूटयंत्रम्	३३
— यंत्रफलम्	३६
अध्याय-4	
— अक्षरविन्यासः	३६
— अ क ड म यंत्रम्	३७
— अ उ ओ क यंत्रम्	३७
— जन्मनाम-प्रसिद्धनाम	३८
— सिद्ध्यादयः	३८
अध्याय-5	
— प्रश्नः न्यासश्च	३९
— षड्बलम्	४०
— प्रशस्तिः	४१
— ग्रन्थफलमित्यादि	४२
— जिन-साधकाक्षर विस्तृत यंत्रम्	४५

● ● ●

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं नमः ॥ ऐँ नमः ॥
॥ श्री पावापुरी-जीराउला-पल्लविया-कलिकुंड-चिंतामणि-शङ्खेश्वर-पार्श्वनाथाय नमः ॥
॥ कलिकालश्रुतकेवलि-महामहोपाध्याय-श्री यशोविजयगणिवराय नमः ॥
॥ श्री प्रेम-भुवनभानु-पद्म-जयघोष-हेमचन्द्र-कल्याणबोधिसूरीश्वरेभ्यो नमः ॥

अध्याय-1

मंगलाचरणम् ❀ **श्रेयस्करं महावीरं वंदे जगत्पितामहम् ।**
लोकचक्षुः पूर्णपूर्णं केवलद्युतिभास्करम् ॥१॥

स्तवीमि भारतीं ब्राह्मीं जगद्विज्ञानमातरम् ।
गौतमं ज्ञानधातारं ईडे श्रीगणनायकम् ॥२॥

श्रीमच्चारित्रविजयं गुरुकुलपितामहम् ।
प्रणमामि त्रिशुद्ध्याऽहं ज्ञानादिस्वात्मदायकम् ॥३॥

निरुपमा ❀ श्रेयस्कारक, जगत् के पितामह, लोक के लिये चक्षुसमान, सर्व प्रकार से पूर्ण, केवलरूपी ज्ञान से सूर्यसमान, श्री महावीरस्वामि को मैं वंदन करता हूँ । (1)

जगत् के सर्व प्रकार के विज्ञान की माता, ब्राह्मी श्री भारती (सरस्वती) की में स्तवना करता हूँ । ज्ञान को धारण करनेवाले गणनायक एसे श्री गौतमस्वामि की मैं स्तुति करता हूँ । (2)

पालिताना नगरे श्री सिद्धक्षेत्र यशोविजयजी जैन गुरुकुल के संस्थापक पितामह ऐसे एवं मुजे (मुनि श्री दर्शनविजयजी को) ज्ञानादि का दान करनेवाले श्रीमत् चारित्रविजयजी को मन-वचन-काया की शुद्धि से मैं प्रणाम करता हूँ । (3)

ग्रंथनाम ❀ **प्रणम्येत्थं महत्पूज्यान् गुरुप्रेम-प्रसादतः ।**
श्रीबृहद्धारणायंत्रं करोमि जिनभक्तितः ॥४॥

निरुपमा ❀ इस प्रकार महान् पूज्य पुरुषों को प्रणाम कर गुरु के प्रेम एवं प्रसाद (कृपा) से, जिनभक्ति से भावित होकर मैं श्री बृहद् धारणायंत्र की रचना करता हूँ । (4)

उद्देशः ❋ **साधकसाध्ययो-र्नृप-पत्योस्स्थापकर्बिंबयोः ।**
शिष्यगुर्वोश्च दंपत्योः सुसंबंधः समीक्ष्यते ॥५॥

जन्मर्क्षयो-र्नामभयोः न जन्मभनामर्क्षयोः ।
नामाद्याक्षरयोर्जातो योगो योगेन शुद्ध्यति ॥६॥

निरुपमा ❋ साधक और साध्य, राजा व सेवक, प्रतिष्ठापक एवं प्रतिमा, शिष्य और गुरु, तथा पति व पत्नी (दंपती) का अच्छा (यौगिक) संबंध देखा जाता है । (5)

विवक्षित दोनों के जन्म नक्षत्र से, या नाम नक्षत्र से हुआ संबंध यहाँ योग से शुद्ध होता है, लेकिन एक का जन्मनक्षत्र और दूसरे का नाम नक्षत्र से हुआ योग शुद्ध नहीं है । यह संबंध नाम के आद्य अक्षर से देखना चाहिए । (6)

नाम्नि विशेषः ❋ **देशे ग्रामगृहज्वर-व्यवहृति द्युतेषु दाने मनौ,**
सेवा-कांकीणी-वर्ग-संगरपुनर्भूमेलके नामभम् ।

जन्मर्क्षं परतो वधुपुरुषयोर्जन्मर्क्षमेकस्य चेत्
ज्ञातं शुद्धमितो विलोक्य च तयोर्नामक्षयोर्मेलकः ॥ (मु.चिं.)

निरुपमा ❋ देश, ग्राम, गृह, रोग, व्यापार-व्यवहार, जुगार खेलना, दान, यज्ञ, सेवा, कांकीणी, वर्ग-समूह, संगर-आपत्ति, युद्ध एवं जमीन के मेलापक में नामनक्षत्र देखना चाहिए । उसके अलावा अन्य स्थान पर जन्मनक्षत्र देखना । वर-कन्या, दोनो में एक का यदि जन्मनक्षत्र शुद्ध ज्ञात हो लेकिन दूसरे का जन्मनक्षत्र ज्ञात न हो वहाँ दोनों के नामनक्षत्र का मेल करना चाहिए । (मुहूर्त चिन्तामणि)

द्वारम् ❋ **भाद्योनि[1]-तारा[2]गण[3]-नाडिवेधाः[4] यूजि[5]ऽस्तु राशेर्युति[6]मध्यदूरौ[7] ।**
वश्यं[8] च वर्णः[9] पतिजैक्यमैत्र्यौ[10][11] ग्राह्या द्वयोर्वर्ग[12]-विशोपकाश्च ॥१७॥

निरुपमा ❋ नक्षत्र से 1) योनि, 2) तारा, 3) गण, 4) नाडिवेध एवं 5) यूजि ग्रहण करना तथा राशि से 1) राशिओं की युति, 2) राशियों की दूर निकटता, 3) वश्य, 4) वर्ण, 5) राशिपतिग्रहो से हुआ ऐक्य (एकनाथ) एवं 11) राशिपति मित्रता ग्राह्य होती है । 12) विवक्षित दोनो का वर्ग तथा 13) विशोपक ग्रहण करना चाहिए । साधक-साध्य - में यह तेर बात ध्यान में रखी जाती है । (7)

यह द्वार गाथा है । यहाँ से आगे एकैक द्वार का क्रमसर वर्णन करेंगे ।

नक्षत्राणि

अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी मृगः ।
आर्द्रा पुनर्वसू पुष्यस्ततोऽश्लेषा ततो मघा ॥८॥

पूर्वा फाल्गुनी तस्माच्चै-वोत्तराफल्गुनी करः ।
चित्रा स्वातिर्विशाखानुराधा ज्येष्ठा मूलं तथा ॥९॥

पूर्वाषाढोत्तराषाढाऽभिच्छ्रवणं धनिष्ठिका ।
शतं पूर्वोत्तराभाद्रौ रेवती भगणः स्मृतः ॥१०॥

निरुपमा

उपरोक्त तीन श्लोक में अनुक्रम से 28 नक्षत्र के नाम दिये गये है । जो यहाँ दिये गये नक्षत्र यंत्र से सुस्पष्ट है । (8-9-10)

अक्षराः

अश्विनी चुचेचोला स्यात् लीलुलेलो भरण्यथ ।
कृत्तिका स्याद् आइउए रोहिणी ओववीवु च ॥११॥

मृगात्शिर्षं वेवोकाकि, आर्द्रा कुघंडछं मता ।
पुनर्वसू के-कोहाही, हु हे हो डा च पुष्यभं ॥१२॥

अश्लेषा डिडुडेडो स्यात्, ममिमुमे मघा भवेत् ।
भवेत् पू.फा. मोटटिटू, उ.फा. टेटोपपि तथा ॥१३॥

हस्तभं स्यात् पु षं णं ठं, चित्रा पे पो र रि भवेत् ।
स्वाति रु रे रो त प्रोक्तं, ति तु ते तो विशाखभम् ॥१४॥

अनुराधा न नि नु ने, ज्येष्ठा नो य यि यु भवेत् ।
ये यो भ भि मूलमुक्तं, पूर्वाषाढा भूधंफढं ॥१५॥

अन्याऽऽषाढा भे भो जा जि, जु जे जो खा तथाऽभिजीत् ।
श्रवणं खि खु खे खो स्यात् धनिष्ठा स्यात् गगिगुगे ॥१६॥

शतं तारा गो स सी सु, भाद्रं से सो द दि सकृत् ।
अन्यभाद्रं दु षं झं थं, दे दो च चि च रेवती ॥१७॥

निरुपमा

उपरोक्त 7 श्लोक में अनुक्रम से 28 नक्षत्रों के क्रमशः अक्षर दिये गये है, जो नक्षत्रयंत्र से स्पष्ट है । (11-12-13-14-15-16-17)

एकस्वरे दश ग्राह्या औदन्ता नही ऋलृकौ ।
ज-ज्ञयोः क-क्षयोः रि-रोः ऐक्यं स्यात् ह्रस्वदीर्घयोः ॥१८॥

जिस व्यंजन अक्षर पर एक ही स्वर (अकार) कहा हो, वहाँ दश स्वर जानना । जैसे कि-ध एक ही स्वर (अकार) से निर्दिष्ट है, जिस के ध, धि धी ऐसे भेद नहीं कहे हैं वहाँ ध से (ध, धा, धि, धी, धु, धू, धे, धै, धो, धौ) इस प्रकार कुल दश स्वरसहित ध का ग्रहण करना चाहिए ।

स्वरों में औदन्त स्वर (ए, ऐ, ओ, औ) कहे है, लेकिन ऋ, ॠ, ऌ, ॡ; ये चार स्वर नहि कहे है ।

ज और ज्ञ, क तथा क्ष, रि एवं ऋ तथा ह्रस्व और दीर्घस्वर का ऐक्य समजना ।

(इसी तरह लि और लृ का भी ऐक्य समज लेना चाहिए ।) (18)

योनिः ❋ **अश्वगजौ मेषाही सर्पः श्वा ओतुमेषमांजाराः ।**
आखुश्चाऽऽखुर्गावौ महिषव्याघ्रौ महिषव्याघ्रौ च ॥१९॥

मृगो मृगः श्वा वानर-नकुलौ नकुलः कपिश्च सिंहाश्वौ ।
सिंहो गौश्च गजश्च नक्षत्राणां हि योनिस्थानानि ॥२०॥

निरुपमा ❋ उपरोक्त दो श्लोक में 28 नक्षत्रों के योनिस्थान कहे है, जो नक्षत्रयंत्र से स्पष्ट है । यहाँ मेष-अज-बकरा, श्वा-श्वान-कुत्ता, ओतु-मांजार-बिल्ली एवं आखु-उंदिर जानना । (19-20)

योनिवैरः ❋ **हस्तिसिंहमश्वमहिषं, श्वाहरिणं कपिमेषमहिनकुलम् ।**
गौव्याघ्रं चाख्योतुं, वैरं कैश्चिन्मतं वृथेति तत् ॥२१॥

निरुपमा ❋ उपर कहे नक्षत्र की योनियों में हस्ति एवं सिंह, अश्व तथा महिष-(पाडो), कुत्ता व हरिण, बंदर और मेष (बकरा), सर्प व नकुल, गौ एवं व्याघ्र तथा बिल्ली और उंदिर का परस्पर वैर जानना ।

कितनेक के मत से ये नक्षत्रयोनियों के वैर मिथ्या है, अर्थात् नक्षत्रयोनिवैर देखने की जरुरत नहीं है । (21)

नक्षत्रयंत्र

क्र.	नक्षत्र	अक्षर	योनि	योनिवैर	तारा	गण	नाडी	युजि
1	अश्विनी	चु चे चो ला	अश्व	महिष	1	देव	आद्य	पूर्वयोगी
2	भरणी	लि लु ले लो	हस्ति	सिंह	2	मनुष्य	मध्य	पूर्वयोगी
3	कृत्तिका	अ इ उ ए	अज	वानर	3	राक्षस	अंत्य	पूर्वयोगी
4	रोहिणी	ओ व वि वु	सर्प	नकुल	4	मनुष्य	अंत्य	पूर्वयोगी
5	मृगशिर्ष	वे वो क कि	सर्प	नकुल	5	देव	मध्य	पूर्वयोगी
6	आर्द्रा	कु घ ङ छ	श्वान	हरिण	6	मनुष्य	आद्य	मध्यमयोगी
7	पुनर्वसू	के को ह हि	बिडाल	उंदिर	7	देव	आद्य	मध्यमयोगी
8	पुष्य	हु हे हो डा	अज	वानर	8	देव	मध्य	मध्यमयोगी
9	अश्लेषा	डी डु डे डो	बिडाल	उंदिर	9	राक्षस	अंत्य	मध्यमयोगी
10	मघा	म मि मु मे	उंदिर	बिडाल	1	राक्षस	अंत्य	मध्यमयोगी
11	पू.फाल्गुनी	मो ट टि टु	उंदिर	बिडाल	2	मनुष्य	मध्य	मध्यमयोगी
12	उ.फाल्गुनी	टे टो प पि	गौ	व्याघ्र	3	मनुष्य	आद्य	मध्यमयोगी
13	हस्त	पु ष ण ठ	महिष	अश्व	4	देव	आद्य	मध्यमयोगी
14	चित्रा	पे पो र रि	व्याघ्र	गौ	5	राक्षस	मध्य	मध्यमयोगी
15	स्वाति	रु रे रो त	महिष	अश्व	6	देव	अंत्य	मध्यमयोगी
16	विशाखा	ति तु ते तो	व्याघ्र	गौ	7	राक्षस	अंत्य	मध्यमयोगी
17	अनुराधा	न नि नु ने	हरिण	श्वान	8	देव	मध्य	मध्यमयोगी
18	ज्येष्ठा	नो य यि यु	हरिण	श्वान	9	राक्षस	आद्य	पश्चिमयोगी
19	मूल	ये यो भ भि	श्वान	हरिण	1	राक्षस	आद्य	पश्चिमयोगी
20	पूर्वाषाढा	भु ध फ ढ	वानर	अज	2	मनुष्य	मध्य	पश्चिमयोगी
21	उत्तराषाढा	भे भो ज जि	नकुल	सर्प	3	मनुष्य	अंत्य	पश्चिमयोगी
22	अभिजित्	जु जे जो ख	नकुल	सर्प	★	विद्याधर	★	पश्चिमयोगी
23	श्रवण	खि खु खे खो	वानर	अज	4	देव	अंत्य	पश्चिमयोगी
24	धनिष्ठा	ग गि गु गे	सिंह	हस्ति	5	राक्षस	मध्य	पश्चिमयोगी
25	शतभिषा	गो स सि सु	अश्व	महिष	6	राक्षस	आद्य	पश्चिमयोगी
26	पू.भाद्रपद	से सो द दि	सिंह	हस्ति	7	मनुष्य	आद्य	पश्चिमयोगी
27	उ. भाद्रपद	दु श झ थ	गौ	व्याघ्र	8	मनुष्य	मध्य	पश्चिमयोगी
28	रेवती	दे दो च चि	हस्ति	सिंह	9	देव	अंत्य	पूर्वयोगी

तारा

स्वभात् तारा नव प्रोक्ताः त्रिवारं जन्मनामतः ।
तृतीया पंचमी त्याज्या सप्तमी साधकात् खलु ॥२२॥

राशिपतिमैत्र्यामेकनाथे वश्ये शुभेऽपि ताः ।
तारास्त्याज्या वरादिभ्यो न तु स्थापकबिंबयोः ॥२३॥

निरुपमा

स्वनक्षत्रसे तारा नव कही है, जिस में जन्मनक्षत्र से या नाम नक्षत्र से तीन बार में 27 नक्षत्र का एक आवर्तन परिपूर्ण होता है । यहाँ साधक के नक्षत्र से तीनों बार में आइ तृतीया, पंचमी एवं सप्तमी तारा वर्ज्य कही है । जन्मनक्षत्र एवं नामनक्षत्र में से जहाँ जिसकी प्रधानता हो, वहाँ उससे गिनती करनी चाहिए । (22)

राशिपतियों की मैत्री हो, दोनों राशि का स्वामि एक ही हो, एक को दूसरे की राशि वश्य हो, यह सब शुभ हो तो भी वर आदि से (कन्या आदि की) तारा यदि अशुभ हो तो वह त्याज्य ही कही है, लेकिन स्थापक और बिंब में यदि तारा का योग अशुभ हो तो भी वर्ज्य नही कहा है । (23)

गणः

देवेऽश्विनी मृगं पुष्यं स्वातिभं च पुनर्वसू ।
अनुराधा च श्रवणं हस्तं रेवती स्याद् गणे ॥२४॥

निरुपमा

देवगण नक्षत्र : 1) अश्विनी, 2) मृगशिर, 3) पुनर्वसू, 4) पुष्य, 5) हस्त, 6) स्वाति, 7) अनुराधा, 8) श्रवण, 9) रेवती । (24)

भरणी रोहिणी आर्द्रा, त्रिपूर्वाः त्र्युत्तरा नरे ।
राक्षसेऽन्यानि भानि स्युः कृत्तिकादीनि वा नव ॥२५॥

मनुष्यगण नक्षत्र : 1) भरणी, 2) रोहिणी, 3) आर्द्रा, 4) पूर्वाफाल्गुनी, 5) उत्तराफाल्गुनी, 6) पूर्वाषाढा, 7) उत्तराषाढा, 8) पूर्व भाद्रपद, 9) उत्तरभाद्रपद ।

राक्षसगण नक्षत्र : 1) कृत्तिका, 2) अश्लेषा, 3) मघा, 4) चित्रा, 5) विशाखा, 6) ज्येष्ठा, 7) मूल, 8) धनिष्ठा, 9) शततारका ।

स्वगणे प्रीतिश्चामर-नरयोर्मध्यमा मता ।
देवराक्षसयोर्वैरं मनुष्यरक्षसोर्मृतिः ॥२६॥

निरुपमा ※ स्थापकादि एवं जिनादि का गण समान हो तो उत्तम प्रीतिरूप फल कहा है । यदि एक का देव गण और दूसरे का मनुष्यगण, तो मध्यम फल जानना । एक का देवगण और दूसरे का राक्षसगण हो तो वैर कहा है व एक का मनुष्यगण और दूसरे का राक्षसगण हो तो मृत्युरूपी फल समजना ।

गणमेलकयंत्र

– –	**साधकदेव** अश्विनी, मृगशिर, पुनर्वसू, पुष्य, हस्त, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, रेवती	**साधक मनुष्य** भरणी, रोहिणी, आर्द्रा, पूर्वा.3, उत्तरा.3	**साधक राक्षस** कृत्तिका, अश्लेषा, मघा, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, मूल, धनिष्ठा, शतभिषा
साध्यदेव	अतिप्रीति	मध्यमप्रीति	वैर
साध्य मनुष्य	मध्यमप्रीति	अतिप्रीति	मृत्यु (शुभ)
साध्य राक्षस	वैर	मृत्यु	अतिप्रीति

सति राशिकूटे शस्ते सद्योनौ ग्रहमैत्रके ।
मनुष्यगणसाध्यश्चेत् साधकरक्षो न दोषकृत् ॥२७॥

निरुपमा ※ यदि 1) राशिकूट प्रशस्त हो, 2) योनिवैर न हो, 3) ग्रहो की मैत्री हो और 4) मनुष्यगण साध्य हो (देव का मनुष्यगण हो) तो साधक-स्थापक का राक्षसगण होने के बावजूद भी दोष नहीं है । (27)

नाडी ※ **क्रमोत्क्रमेण अश्विन्याः त्रिनाड्यां गतभं द्वयोः ।**
सर्वस्मिन्नशुभं प्रोक्तं शुभं तु गुरुशिष्ययोः ॥२८॥

राश्यादिशस्तभेदानां नाडीवेधस्तु नाशकृत् ।
किं तु शिष्ये गुरौ वेधः दुर्योनिबलनाशकः ॥२९॥

प्रभुः पण्यांगना मित्रं, देशो ग्रामं पूरं गृहम् ।
एकनाडीगता भव्याः अभव्या वेधवर्जिताः ॥३०॥

निरुपमा ※ अश्विनी से लेकर अभिजित् वर्ज 27 नक्षत्र क्रम और उत्क्रम से तीन (आद्य-मध्य एवं अंत्य) नाडी में स्थापना ।

एक ही नाडी में विवक्षित दोनों के नक्षत्र का वेध हुआ हो तो वह हरेक बाबत में अशुभ कहा है, लेकिन गुरु और शिष्य का एक नाडी में वेध होना प्रशस्त कहा है । (28)

राशिकुटादि प्रशस्त होने के बावजूद भी यदि नाडीवेध हो तो वह नाशक - अशुभ कहा है, किन्तु शिष्य और गुरु में नाडीवेध हो तो वह शुभ है एवं यदि गुरु-शिष्य में दुर्योनि (योनिवैर) हो तो, उसके अशुभ बलका नाशक भी है । (29)

स्वामी, वेश्या, मित्र, देश, ग्राम, नगर एवं गृहका (साधक के साथ) यदि एक नाडी में वेध हो तो वह शुभ है, नाडीवेध न हो तो अशुभ जानना । (30)

एकनक्षत्रजातानां परेषां प्रीतिरुत्तमा ।
दंपत्योस्तु भवेद् हानिः राशिभेदे न दोषकृत् ॥३१॥

दृष्टोऽन्येषु नाडीवेधो, राशिभेदे तु मध्यमः ।
द्वादशनाडीचक्रे तु, पादवेधोऽधमाधमः ॥३२॥

द्वादशारपादवेध यंत्र

नक्षत्र	अश्विनी	आर्द्रा	पुनर्वसू	उ.फाल्गुनी	हस्त	ज्येष्ठा	मूल	शतभिषा	पू.भा.
आद्यनाडी	चु	छ	के	पि	पु	यु	ये	सु	से
आद्यनाडी	चे	ङ	को	प	ष	यि	यो	सि	सो
आद्यनाडी	चो	घ	ह	टो	ण	य	भ	स	द
आद्यनाडी	ला	कु	ही	टे	ठ	नो	भि	गो	दि
नक्षत्र	भरणी	मृगशिर	पुष्य	पू.फाल्गुनी	चित्रा	अनुराधा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	उ.भा.
मध्य नाडी	लि	कि	हू	टु	पे	ने	भु	गे	दु
मध्य नाडी	लु	क	हे	टी	पो	नु	ध	गु	श
मध्य नाडी	ले	वो	हो	ट	र	नि	फ	गि	झ
मध्य नाडी	लो	वे	डा	मो	रि	न	ढ	ग	थ
नक्षत्र	कृत्तिका	रोहिणी	अश्लेषा	मघा	स्वाति	विशाखा	उत्तराषाढा	श्रवण	रेवती
अंत्य नाडी	अ	वु	डि	मे	रु	तो	भे	खो	दे
अंत्य नाडी	ई	वि	डु	मु	रे	ते	भो	खे	दो
अंत्य नाडी	उ	व	डे	मि	रो	तु	ज	खु	च
अंत्य नाडी	ए	ओ	डो	म	त	ति	जि	खि	चि

निरुपमा ❋ एक ही नक्षत्र में जन्म लेनेवालो में परस्पर उत्तम प्रीति रहती है, अपितु पति और पत्नी का जन्मनक्षत्र एक ही हो तो वह हानिकारक कहा है । हाँ, यदि एक नक्षत्र होने पर भी यदि चरणभेद से राशिभेद हो जाता है तो वहाँ दोष नहीं है । (31)

अन्य सर्व में नाडीवेध दुष्ट कहा है, लेकिन राशिभेद हो जाता है वहाँ नाडीवेध का फल मध्यम जानना । द्वादशार नाडीचक्र में यदि पादवेध हो जाय तो वह अधमाधम समजना । (32)

युजिः ❋ **षड्द्वादश - नवभानां योगः प्राग्मध्यपश्चिमश्चन्द्रे ।**
लग्ने चाऽऽरेवतीनां वरैः कनीभिर्द्विकैश्च प्रेमकरः ॥३३॥

निरुपमा ❋ रेवती से लेकर अनुक्रम से पूर्वभाद्रपद तक के 27 नक्षत्रो में प्रथम के 6 नक्षत्र चन्द्र से पूर्व, बाद के 12 नक्षत्र चन्द्र के साथ, एवं अन्य 9 (नव) नक्षत्र चन्द्र के पीछे चलनेवाले होते है । उन्हे अनुक्रम से पूर्वयोगी, मध्यमयोगी और पश्चिमयोगी कहे जाते है । पूर्वयोगी में यदि विवाह हुआ हो तो स्त्री को स्वामि पर बहुत प्रेम रहता है । मध्यमयोगी में यदि विवाह हुआ हो तो दोनों में परस्पर समान प्रीति रहती है । एवं पश्चिमयोगी में विवाह हुआ हो तो पुरुष को पत्नी पर अति प्रेम रहता है । (33-34)

राशयः ❋ **मेषो वृषभो मिथुनः कर्कः सिंहश्च कन्यका तुला ।**
वृश्चिको धनमकरौ कुंभो मीनश्च राशयो ज्ञेयाः ॥३४॥

निरुपमा ❋ उपर श्लोक में मेषादि बारह राशि कही है, जो राशियंत्र पर से स्पष्ट है । (34)

राशिस्थापना ❋ **अश्विनी-मघा-मूलेभ्यः प्रारभ्य राशयो क्रमात् ।**
मेष-सिंह-धनाद्याः स्युः सपादद्विभयोः खलु ॥३५॥

निरुपमा ❋ अश्विनी, मघा और मूलादि नक्षत्र से आरंभकर अनुक्रम से मेष, सिंह और धनादि राशियाँ होती है । प्रत्येक राशि दो नक्षत्र और एक पाद (नक्षत्र के कुल 9 चरण) की जाननी । (35)

अक्षराः ❋ **मेषे स्युः चुलआ वृषे इव मताः युग्मे कघंङछहा,**
कर्के हीड हरौ मटा कनिषु वै, टोपाषणं ठं मताः ।

तौलौ रात अलौ नतोय धनुषः येभाधफंढं मता,
भोजाखाग मृगे घटे गुसद वै मीन मीन दिशाझंथचा ॥३६॥

उपरोक्त श्लोक में कौन सी राशि में कौन से अक्षर समाविष्ट है उसका वर्णन किया है । राशियंत्र पर से उसका विवरण स्पष्ट है । श्लोक में युग्म = मिथुन, हरि = सिंह, कनि = कन्या, अलि = वृश्चिक, घट = कुंभ जानना । (36)

राशियंत्र

क्रम	राशि	पति	नक्षत्रपाद	अक्षर
1	मेष	मंगल	अश्वि.4, भ.4, कृ.1	चु चे चो ला लि लु ले लो अ
2	वृषभ	शुक्र	कृ.3, रो.4, मृग.2	इ उ ए ओ व वि वु वे वो
3	मिथुन	बुध	मृग.2, आर्द्रा.4, पुन.3	क कि कु घ ङ छ के को ह
4	कर्क	चंद्र	पुन.1, पुष्य 4, अश्ले. 4	हि हु हे हो डा डि डु डे डो
5	सिंह	सूर्य	मघा 4, पू.फा.4, उ.फा.1	म मि मु मे मो ट टि टु टे
6	कन्या	बुध	उ.फा.3, ह.4, चि.2	टो प पि पु ष ण ठ पे पो
7	तुला	शुक्र	चि.2, स्वा.4, वि.3	र रि रु रे रो त ति तु ते
8	वृश्चिक	मंगल	वि.1, अनु.4, ज्ये.4	तो न नि नु ने नो य यि यु
9	धन	गुरु	मूल 4, पूर्वाषा.4, उत्तराषा.1	ये यो भ भि भु ध फ ढ भे
10	मकर	शनि	उत्तराषा.3, श्र.4, ध.2	भो ज जि (जु, जे, जो, ख) खि खु खे खो ग गि
11	कुंभ	शनि	ध.2, शत.4, पू.भाद्र.3	गु गे गो स सि सु से सो द
12	मीन	गुरु	पू.भाद्र.1, उ.भाद्र.4, रे.4	दि दु श झ थ दे दो च चि

अंतरयुति-राशिकूटः –

सर्वस्मात् द्विर्द्वादशकं नेष्टं च नवपंचमम् ।
षष्टमे विषमाद्राशे-र्मृत्युः समात्तथाऽष्टमे ॥३७॥

निरुपमा सर्व राशिकूट से द्वि-र्द्वादशक (बीया-बारु) एवं नवपंचम नेष्ट है । विषम राशि से छट्ठि राशियुक्त एवं समराशिसे अष्टम राशियुक्त षडष्टकसे मृत्युरुपी फल जानना । (37)

राशि	2-12	5-9	6-8	जाति	वश्य राशि	वर्ण
मेष	वृष, मीन	सिंह, धन	कन्या, वृश्चिक	पशु	–	क्षत्रिय
वृषभ	मिथुन, मेष	कन्या, मकर	तुला, धन	पशु	मेष	वैश्य
मिथुन	कर्क, वृषभ	तुला, कुंभ	वृश्चिक, मकर	मनुष्य	धन, सिंह विना सर्व	शूद्र
कर्क	सिंह, मिथुन	वृश्चिक, मीन	धन, कुंभ	कीट	–	ब्राह्मण
सिंह	कन्या, कर्क	धन, मेष	मकर, मीन	पशु	धन, वृश्चिक विना सर्व	क्षत्रिय
कन्या	तुला, सिंह	मकर, वृषभ	कुंभ, मेष	मनुष्य	धन, सिंह विना सर्व	वैश्य
तुला	वृश्चिक, कन्या	कुंभ, मिथुन	मीन, वृषभ	मनुष्य	सिंह विना पशु, जलज अने कीट	शूद्र
वृश्चिक	धन, तुला	मीन, कर्क	मेष, मिथुन	कीट	सिंह	ब्राह्मण
धन	मकर, वृश्चिक	मेष, सिंह	वृषभ, कर्क	मनु.(मि.)	सर्व	क्षत्रिय
मकर	कुंभ, धन	वृषभ, कन्या	मिथुन, सिंह	पशु (मि.)	कर्क, मीन	वैश्य
कुंभ	मीन, मकर	मिथुन, तुला	कर्क, कन्या	मनुष्य	सिंह विना पशु-जलज अने कीट	शूद्र
मीन	मेष, कुंभ	कर्क, वृश्चिक	सिंह, तुला	जलचर	–	ब्राह्मण

मकरसकेसरी-मेषयुवत्या तुलहरमीन-कुलिरघटाद्याः ।
धनवृषवृश्चिकमन्मथयोगे वैरकरं च षडष्टकमैतत् ॥ (नारचन्द्र.)

निरुपमा ❋ मकर और सिंह, मेष एवं कन्या, तुला व मीन, वृश्चिक तथा कुंभ, धन एवं वृषभ, वृश्चिक और मिथुन यह छ षडष्टक वैरकारक (अशुभफलक) है ।

विसमा अट्ठमे पीइ, समाउ अट्ठमे रीऊ ।
सत्तुछट्ठट्ठमं नाम, रासीहिं परिवज्जए । (दिनशुद्धि)

निरुपमा ❋ विषम राशि से अष्टम राशि होने पर प्रीति एवं सम राशि से अष्टम राशि होने पर शत्रु जानना । इस तरह राशि से जो शत्रु षडष्टक बनता हे उसका त्याग करे ।

शत्रुषडष्टके मृत्युः कलहो नवपंचमे ।
द्विर्द्वादशमे दारिद्र्यं शेषेषु प्रीतिरुत्तमा ॥३८॥

निरुपमा ❋ शत्रुषडष्टक होने पर मृत्युरुप फल, नवपंचम होने पर कलह एवं द्विर्द्वादशक (बीयाबारु) होने पर द्वारिद्रय रुप फल कहा है । अन्य सर्व में उत्तम प्रीतिरूप फल कहा है । (38)

राशिदूरता ❋ **दूरस्था कनिराशिः शुभा वराद्धनिकाच्च प्रतिमायाः ।**
वरतो नवम्यपीष्टा मातृपितृमृते च वैकस्मिन् ॥३९॥

निरुपमा ❋ वरसे कन्या की राशि एवं धनिक (स्थापक) से प्रतिमा (जिन) की राशि दूर हो तो वह शुभ है । वर या कन्या, दोनो में से कीसी एक के माता-पिता दोनों की मृत्यु होने पर वरसे कन्या की नवमी राशि हो, नवपंचम हो तो भी इष्ट है । (39)

जातिवश्यं ❋ **अज-वृष-हरि-मकरास्तु पशवः कीटौ कर्कवृश्चिकौ ।**
जलजो मीनः शेषाः मनुजाः राशेर्जातयो ज्ञेयाः ॥४०॥

धनुर्हरिकनि-मनुजशेषेषु स्युरुत्तरास्सर्वे ।
मकरं च कर्कमीनौ वृषभं मेषो हरिरलिं वश्याः ॥४१॥

निरुपमा ❋ अज-मेष, वृषभ, सिंह एवं मकर यह पशुजाति, कर्क और वृश्चिक वह कीट, मीन को जलज एवं अन्य शेष (मिथुन, कन्या, तुला, धन, कुंभ) को मनुष्य जाति जाननी चाहिए ।
धन, सिंह, कन्या, मनुष्य एवं शेषराशियाँ उत्तरोत्तर वश्य है, अर्थात् धन को सर्व राशि वश्य है । सिंह को धन एवं वृश्चिक विना सर्वराशि वश्य है । कन्या को धन एवं सिंह विना सर्वराशि वश्य है । मिथुन को धन एवं सिंह विना सर्व राशि वश्य है । तुला एवं कुंभ को सिंह के बिना पशु, कीट एवं जलज राशि वश्य है । मकर राशि को कर्क एवं मीन, तथा वृषभ को मेषराशि एवं वृश्चिक को सिंह राशि वश्य मानी गई है । (40-41)

वर्णाः ❋ **राशिवर्णाः क्षत्रियश्च वैश्यः शूद्रश्च ब्राह्मणः ।**
श्रेष्ठवर्णा यदि कन्या पतिपुत्रमृतिर्भवेत् ॥४२॥

निरुपमा ❋ क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र एवं ब्राह्मण ये चार अनुक्रम से बारह राशियों के क्रमिक वर्ण जानने चाहिए । कन्या यदि वरसे श्रेष्ठ वर्ण की हो तो पति या पुत्र की मृत्युरुप फल जानना । (42)

पतिग्रहाः ❋ **क्रमाद्राशेः कुजः शुक्रः बुधश्चन्द्रो रविर्बुधः ।**
शुक्रः कुजो गुरुर्मन्दो शनिर्जीवश्च स्वामिनः ॥४३॥

निरुपमा ❋ उपरोक्त श्लोक में बारह राशि के क्रमिक बारह स्वामि ग्रह के नाम दिये गये है, जो राशियंत्र से स्पष्ट है । यहाँ कुज = मंगल = भोम, मंद = शनि । (43)

ग्रहचक्र

नं.	ग्रह	स्वराशि	मित्र	मध्यस्थ	शत्रु	परस्परमैत्री	तत्कालमैत्री
1	सूर्य	सिंह	चंद्र, मंगल, गुरु	बुध	शुक्र, शनि	चंद्र-मंगल-गुरु	स्वस्थान में एवं २-३-१२-११-१० वें स्थान में रहे ग्रहो में तत्कालमैत्री होती है।
2	चन्द्र	कर्क	सूर्य, बुध	मंगल, गुरु, शुक्र, शनि	–	सूर्य-मंगल-गुरु	
3	मंगल	मेष, वृश्चिक	सूर्य, चंद्र, गुरु	शुक्र, शनि	बुध	सूर्य-चन्द्र-गुरु	
4	बुध	मिथुन, कन्या	सूर्य, शुक्र	मंगल, गुरु, शनि	चंद्र	शुक्र-शनि-राहु	
5	गुरु	धन, मीन	सूर्य, चंद्र, मंगल	शनि	बुध, शुक्र	सूर्य-चन्द्र-मंगल	
6	शुक्र	वृषभ, तुला	बुध, शुक्र	मंगल, गुरु	सूर्य, चंद्र	बुध-शनि-राहु	
7	शनि	मकर, कुंभ	बुध-शुक्र	गुरु	सूर्य, चंद्र, मंगल	बुध-शुक्र-राहु	
8	राहु	–	–	–	–	बुध-शुक्र-शनि	
9	केतु	–	–	–	–	–	

मित्र-शत्रू

अर्कस्य जीवेन्दु कुजाश्च मित्राः शुक्रशनी रिपु ।
चन्द्रस्य रविसौम्यौ मित्रौ शत्रुग्रहो न कोप्यस्ति ॥४४॥

भौमस्य जीवेन्दु-सुराश्च मित्रा रिपुस्तु चन्द्रसुतः ।
सौम्यस्य रविशुक्रौ मित्रौ शत्रुपदे सदा चन्द्रः ॥४५॥

जीवस्येन्दुकुजार्काः मित्राः बुधशुक्रौ च शत्रू स्तः ।
शुक्रस्य बुधमंदौ मित्रौ शत्रुस्सदाऽर्कचन्द्रौ च ॥४६॥

मन्दस्य बुधशुक्रौ मित्रौ अरिणो सूर्यकुजचन्द्राः ।
सर्वेषां मध्यस्थाः शेषा प्रोक्ताः प्रवीणज्ञानधनैः ॥४७॥

निरुपमा उपरोक्त चार श्लोक में प्रत्येक ग्रह के मित्रग्रह एवं शत्रुग्रह का निर्देश किया है ओर शेष को मध्यस्थ जानने का अंत में सूचित किया है । ग्रहचक्र कोष्टक में यह स्पष्ट निर्देशित है । यहाँ अर्क-सूर्य, चन्द्रसुत-बुध ।

परस्परमैत्री **रवींदुगुरुकुजाश्च सौम्यशुक्रार्किराहवः ।**
स्वस्मिन् मित्राणि सर्वाणि परस्मिन् शत्रवः स्मृताः ॥४८॥

निरुपमा सूर्य, चन्द्र, गुरु एवं मंगल ये चार परस्पर मित्र है एवं दूसरों के लिये शत्रु है । वैसे ही सौम्य = बुध, शुक्र, अर्कि = शनि एवं राहु ये चार की भी परस्पर मैत्री समजनी ओर ये चारों दूसरे चार के लिये शत्रु है ।

तत्कालमैत्री ❋ **जन्मनि स्वस्मादग्रग-पृष्टगत्रित्रिगृहस्थितः खेटः ।**
तत्कालिनमित्रः स्यात् मित्रग्रहस्तु भवेदधिकमित्रः ॥४९॥

निरुपमा ❋ जन्म की लग्न कुंडली में विवक्षित कोई भी ग्रह से आगे के और पीछे के तीन तीन ग्रह में (अर्थात् १-२-३ और १२-११-१० वें स्थान में) स्थित (गोचर) ग्रह शत्रु हो तो भी तत्कालिन मित्र होता है और मित्रग्रह तो अधिकमित्र होता है ।

मैत्रीबलम् ❋ **अशुभे द्विर्द्वादशके चाशुभे नवपंचके ।**
चिन्तयेद् ग्रहमैत्री सा नान्यस्मिन् शुभमेलके ॥५०॥

एकनाथे मित्रनाथे एकमध्यमके शुभम् ।
नेष्टं तत् मध्यमनाथे वैकशत्रौ रिपुपतौ ॥५१॥

यदा सन्नाडी-सत्तारा-सद्योनि-सद्गणाः खलु ।
तदा राशिकूटः श्रेष्ठः मध्यमग्रहयोरपि ॥५२॥

निरुपमा ❋ द्वि-द्वादशक (बीया-बारु) और नवपंचम अशुभ होते हुए ग्रहमैत्री देखनी चाहिए । अन्य शुभमेलक (सप्तम-सप्तमादि) होने पर ग्रहमैत्री देखने की जरुरत नही है । (50)

दोनों ग्रहो के स्वामि एक हो, या परस्पर मित्र हो, या दोनों ग्रहो में से कोई एक ग्रह दूसरे के प्रति मध्यम (मध्यस्थ) हो तो वह शुभ है । यदि दोनो ग्रह परस्पर मध्यम - सम हो, या दोनों में से कोई एक को दूसरे के प्रति शत्रुता हो या दोनों को परस्पर शत्रुता हो तो वह नेष्ट है । (51)

नाडी, तारा, योनि और गण ये चारो शुभ होने पर दोनों ग्रह परस्पर मध्यम (मध्यस्थ) हो तो भी वह राशिकूट श्रेष्ठ जानना चाहिए । (52)

राशिकूटः ❋ **इत्थं घटकन्याकर्क-मीनानां पंचमैः सह ।**
मध्यमं शेषराशिनां शुभं तन्नवपंचमम्
(मध्यमं पंचमैरन्य-राशीनां तु शुभावहम्) ॥५३॥

निरुपमा ❋ इस प्रकार कुंभ, कन्या, कर्क एवं मीन राशि का अपनी पंचम राशि के साथ नव पंचम योग मध्यम जानना । इससे अन्य राशि का नवपंचम योग शुभफलक है । (53)

राशिकूटचक्र

संकेत शब्द दे-श्रेष्ठतर, श्रे-श्रेष्ठ, शु-शुभ, म-मध्यम, अ-अशुभ, ने-नेष्ट-अशुभतर, शु-शत्रु, प्री-प्रीति, 0-सम, 1-स्व

$$\left(1\ \frac{1\ 2\ 3\ 4\ 5\ 6}{1\ 12\ 11\ 10\ 9\ 8}\ 0\ \frac{7\ 8\ 9\ 10\ 11\ 12}{7\ 6\ 5\ 4\ 3\ 2}\right)$$

–	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
मेष	1	अ	शु	दे	शु	श	0	प्री	शु	श्रे	शु	श्रे
वृषभ	अ	1	श्रे	शु	श्रे	शु	प्री	0	श	शु	दे	शु
मिथुन	शु	श्रे	1	ने	शु	दे	शु	श	0	प्री	म	श्रे
कर्क	दे	शु	ने	1	श्रे	शु	श्रे	म	प्री	0	श	म
सिंह	शु	श्रे	शु	श्रे	1	शु	शु	दे	शु	श	0	प्री
कन्या	श	शु	दे	शु	शु	1	श्रे	शु	श्रे	म	प्री	0
तुला	0	प्री	शु	श्रे	शु	श्रे	1	अ	शु	दे	शु	श
वृश्चिक	प्री	0	श	म	दे	शु	अ	1	श्रे	शु	श्रे	शु
धन	शु	श	0	प्री	शु	श्रे	शु	श्रे	1	अ	शु	दे
मकर	श्रे	शु	प्री	0	श	म	दे	शु	अ	1	श्रे	शु
कुंभ	शु	दे	म	श	0	प्री	शु	श्रे	शु	श्रे	1	अ
मीन	श्रे	शु	श्रे	म	प्री	0	श	शु	दे	शु	अ	1

सिंहस्य समराशिनां द्विर्दादशमपि शुभम् ।
सप्तमराशिकूटाद्याः ग्रहमैत्र्यां त्वतिशुभाः ॥५४॥

निरुपमा ❋ सिंहराशि का समराशिओं के साथ होता द्वि-र्द्वादशक भी शुभ है । सप्तम-सप्तम, दशम-चतुर्थादि राशिकूट खुद ही प्रशस्त है, उन में भी ग्रहमैत्री हो तो अतिशुभफलदायक कहा है । (54)

राशेरेकाधिपत्यं वा स्वामिनो मित्रता तदा ।
षडष्टकोऽपि दंपत्योः नारचन्द्रे शुभावहः ॥५५॥

निरुपमा ❋ वर-कन्या की राशि के ग्रह एक ही हो, या दोनों को परस्पर मित्रता हो तो दोनों का षडष्टक योग होने पर भी नारचन्द्र ग्रन्थ में वह शुभ कहा है । (55)

परमार्थबलम् ※ **एवं श्रेष्ठतरं श्रेष्ठं शुभं मध्यमजं रिपुम् ।**
अशुभं प्रीतिनेष्टे चैक्यमशुभतरं समम् ॥५६॥

निरुपमा ※ उस प्रकार से ग्रहो के राशिकूट - श्रेष्ठतर, श्रेष्ठ, शुभ, मध्यम, रिपु, अशुभ, प्रीति, नेष्ट, ऐक्य, अशुभतर और सम - इस प्रकार से जानना । (56)

वर्गाः ※ **गरुड ओतुः सिंहश्च कुक्कुरः सर्प उंदरः ।**
मृगो मेषोऽष्टवर्गेशाः क्रमेण अकचादीनाम् ॥५७॥

वर्गाणां पंचमे वैरं वर्ज्यं प्रसिद्धनामयोः ।
बलिष्ठे साधके वर्गे वर्गवैरं न दोषकृत् ॥५८॥

वर्गवैरयंत्र

अधिपति	अक्षर	वर्ग	वैर	वर्ग	अक्षर	अधिपति
गरुड	अ इ उ ए ओ	अ	< – >	त	त थ द ध न	सर्प
बिडाल	क ख ग घ ङ	क	< – >	प	प फ ब भ म	उंदिर
सिंह	च छ ज झ ञ	च	< – >	य	य र ल व	हरिण
श्वान	ट ठ ड ढ ण	ट	< – >	श	श ष स ह	मेष

निरुपमा ※ अ, क, च आदि आठ वर्ग के अनुक्रम से गरुड, बिडाल, सिंह आदि आठ अधिपति है, जो वर्गवैरयंत्र में स्पष्ट है । प्रत्येक वर्ग को अपने से पंचम वर्ग के साथ वैर जानना । यह वर्गवैर प्रसिद्ध नाम से देखा जाता है । साधक का वर्ग बलिष्ठ होने पर वर्गवैर दोषकारक नही है ।

विशोपकः ※ **प्रसिद्धनामाक्षरवर्गपांकौ क्रमोत्क्रमेणाष्ट-विभक्तशेषौ ।**
कृतार्धकौ साधकसिद्धयोस्तौ विशोपकः स्यात् प्रथमेन देयः ॥५९॥

प्रथमनामतो लभ्यो द्वितीयेन विशोपकः ।
परस्परेण शोध्यौ तौ ऋकेनार्धं ककद्यथा ॥६०॥

निरुपमा ※ साधक और सिद्ध (जिन) के प्रसिद्ध नाम के प्रथम अक्षर के वर्ग अधिपति के अंक को क्रम और उत्क्रम से साथ में लेकर आठ से भाग देना । जो शेष मिले उसका आधा करने पर जो मिले वह साधक और सिद्ध का विशोपक जानना । जिसका अंक प्रथम हो

उसको उतने देय समजने । प्रथम अंक से जो विशोपक मिले वह दूसरे अंकवाले को लभ्य होता है । साधक और साध्य, दोनों के विशोपक की परस्पर शोध (बाद) करने से लभ्य-देयांक मिलता है। जैसे कि 'ऋ', 'क' के पास अर्ध (? देढ) विशोपक मांगता है ।

विशोपक एक प्रकार का पुराना व्यवहारिक चलन है ।

उदाहरणार्थ : साध्य तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ - वर्ग-5 वर्गांक-6 साधक कमल, वर्ग-क, वर्गांक-2

साधक को देय : साधकवर्गांक - साध्यवर्गांक-8 = 26/8

यहाँ शेष 2 मिलती है, उसे आधि करने पर साधक को देय-1 विशोपक ।

साध्य को देय : साध्यवर्गांक-साधकवर्गांक-8 = 62/8

यहाँ शेष 6 मिलती है ।

उसको आधि करने से साध्य को देय-3 विशोपक

साध्य की देय अधिक होने से –

साध्य की देय - साधक की देय

= 3 - 1 = 2

अर्थात् साध्य, साधक को 2 विशोपक देता है ।

साधक को साध्य से 2 विशोपक लभ्य है ।

लभ्यदेययंत्र

दाता	ग्राहक								दाता
वर्ग	1 अ	2 क	3 च	4 ट	5 त	6 प	7 य	8 श	वर्गांक
अ त	1.5	2	2.5	3	3.5	0	0.5	1	1 5
क प	2.5	3	3.5	0	0.5	1	1.5	2	2 6
च य	3.5	0	0.5	1	1.5	2	2.5	3	3 7
ट श	0.5	1	1.5	2	2.5	3	3.5	0	4 8

साधक - साध्य विशोपक यंत्र

साधक	अ	क	च	ट	त	प	य	श
—	दे. 1.5	2	2.5	3	3.5	0	0.5	1
—	ले. 1.5	2.5	3.5	0.5	1.5	2.5	3.5	0.5
अ	0	ले.0.5	ले 1	दे. 2.5	दे. 2	ले 2.5	ले. 3	दे. 0.5
—	दे 2.5	3	3.5	0	0.5	1	1.5	2
—	ले 2	3	0	1	2	3	0	1
क	दे 0.5	0	दे 3.5	ले 1	ले 1.5	ले 2	दे 1.5	दे 1
—	दे 3.5	0	0.5	1	1.5	2	2.5	3
—	ले 2.5	3.5	0.5	1.5	2.5	3.5	0.5	1.5
च	दे 1	ले. 3.5	0	ले 0.5	ले 1	ले 1.5	दे 2	दे 1.5
—	दे 0.5	1	1.5	2	2.5	3	3.5	0
—	ले 3	0	1	2	3	0	1	2
ट	ले 2.5	दे 1	दे 0.5	0	ले. 0.5	दे 3	दे 2.5	ले 2
—	दे 1.5	2	2.5	3	3.5	0	0.5	1
—	ले 3.5	0.5	1.5	2.5	3.5	0.5	1.5	2.5
त	ले. 2	दे. 1.5	दे 1	दे 0.5	0	ले 0.5	ले 1	ले 1.5
—	दे 2.5	3	3.5	0	0.5	1	1.5	2
—	ले 0	1	2	3	0	1	2	3
प	दे. 2.5	दे 2	दे 1.5	ले 3	दे 0.5	0	ले 0.5	ले 1
—	दे 3.5	0	0.5	1	1.5	2	2.5	3
—	ले. 0.5	1.5	2.5	3.5	0.5	1.5	2.5	3.5
य	दे. 3	ले. 1.5	ले 2	ले. 2.5	दे 1	दे 0.5	0	ले 0.5
—	दे 0.5	1	1.5	2	2.5	3	3.5	0
—	ले 1	2	3	0	1	2	3	0
श	ले 0.5	ले 1	ले 1.5	दे 2	दे 1.5	दे 1	दे 0.5	0

लभ्यदेय ध्रुवांक यंत्र

वर्ग	अ	क	च	ट	त	प	य	श	
1 पूर्व	1	2	3	0	1	2	3	0	- पूर्णांक
2 उत्तर	0.5	1	1.5	2	2.5	3	3.5	0	- विशिष्टांक

नामद्वयाद्याक्षरवर्गयोः ध्रुवांकौ एकीकृत्य चतुर्भिः विभाज्याः विशिष्टाः विशोपकाः प्रथमेन देयाः । एवं परस्परं गणनीयम् । इति ।

दोनों नाम के आद्याक्षर के वर्ग के ध्रुवांक एक साथ रखकर चार से भाग देना । जो शेष रहे वह विशोपक प्रथम वर्गांकवाले व्यक्ति को देने योग्य है । उसी तरह परस्पर गुणना ।

ग्रामधारणा ❋ **जन्मभात् ग्रामचिन्तायां राशियोगो मतोऽन्यथा ।**
केचित्तु कांकीणीं प्रोचुः ग्रामस्य धारणागतौ ॥६१॥

निरुपमा ❋ जन्मनक्षत्र से ग्राम (शहर) के अनुकूल - प्रतिकूल विचार में राशियोग अन्य प्रकार से देखा जाता है । केचित् ग्राम विषयक धारणागति में कांकीणी देखना कहते है । यह कांकीणी भी एक प्रकार का पुराना व्यवहारिक चलन है ।

ग्रामराशिः ❋ **स्वराशेः दुःखदो ग्रामः एकत्रिषष्ठसप्तमः ।**
तुर्योऽष्टमो द्वादशमो मध्यमोऽन्यतरः शुभः ॥६२॥

निरुपमा ❋ साधक की स्वराशि से ग्राम की राशि प्रथम, तृतीय, षष्ठ एवं सप्तम हो तो दुःखदायी; चौथी, आठमी या बारहवीं हो तो मध्यम एवं उससे अन्य ही (दूसरी, पाँचवीं, नवमीं, दशवीं, ग्यारहवीं) राशि हो तो वह ग्राम शुभफलदायक जानना ।

ग्रामराशि यंत्र

ग्रामराशि	1, 3, 6, 7	2, 5, 9, 10, 11	4, 8, 12
फल	द्रव्यनाश, पदे पदे आपत्ति	शुभ, सफलताप्रद	मध्यम (अर्थव्यय)

आरंभसिद्धि-टीकान्तर्गत-पाठः (3/23) –

जन्मराशिस्थितो ग्रामः त्रिषष्ठः सप्तमोऽपि वा ।
स्वकीयद्रव्यनाशाय आपदा च पदे पदे ॥१॥

चतुर्थाष्टमको ग्रामो द्वादशो यदि वा भवेत् ।
यत्र उत्पद्यते अर्थः तत्रैवार्थो विलीयते ॥२॥

पंचमो नवमो ग्रामो द्वितीयो यदि वा भवेत् ।
दशमैकादशश्चैव शुभः सफलताप्रदः ॥३॥

निरुपमा ❋ साधक की जन्मराशि में स्थित साधक राशि के समान राशिवाला ग्राम या तृतीय, छठ्ठी, सप्तम राशिस्थित ग्राम नये अर्थोपार्जन की बात तो दूर, साधक के अपने द्रव्य का भी नाशक है,

एवं वह हर स्थान पर आपत्तिदायक सिद्ध होता है । (1)

साधकराशि से चौथी, आँठवीं या बारहवीं राशि ग्राम की हो तो वहाँ अर्थ तो उत्पन्न होता है (धनप्राप्ति होती है), लेकिन वहीं ही उसका विलय (नाश, खर्च) भी हो जाता है । (2)

साधकराशि से दूसरी, पांचवीं, नववीं, दशवीं या ग्यारहवीं राशि ग्राम की हो तो वह गाँव शुभ और सफलतादायक है । (3)

कांकीणी ❋ **द्विकृतः प्रथमवर्गांकः अन्यवर्गेण पूरितः ।**
अष्टभक्तेन शेषांकां याचते कांकीणीं परात् ॥६३॥

एवं परस्परं कृत्वा शोधनीया ही कांकीणी ।
स्वनामाक्षरवर्गाच्च ग्रामाद्याक्षरवर्गतः ॥६४॥

निरुपमा ❋ प्रथमवर्गांक को द्विगुण कर उस में अन्य वर्गांक जोडना । जो मिले उसे आठ से भाग देने से जो शेष बचे उतनी कांकीणी प्रथम वर्गवाला दूसरे वर्गवाले के पास मांगता है । (63)

इस तरह परस्पर कांकीणी निकालकर दोनो का तफावत नीकालना । स्व-साधक के नामाक्षर के वर्ग से एवं ग्राम के आद्याक्षर के वर्ग से यह गिनती करना । (64)

कांकीणी यंत्र

ग्राम→ साधक↓	अ	क	च	ट	त	प	य	श
अ	0	दे 1	दे 2	ले 5	ले 4	ले 3	दे 6	ले 1
क	ले 1	0	दे 1	ले 6	दे 3	दे 4	दे 5	ले 2
च	ले 2	ले 1	0	दे 1	दे 2	दे 3	ले 4	ले 3
ट	दे 5	दे 6	ले 1	0	दे 1	दे 2	ले 5	ले 4
त	दे 4	ले 3	ले 2	ले 1	0	ले 7	दे 2	दे 3
प	दे 3	ले 4	ले 3	ले 2	दे 7	0	दे 1	दे 2
य	ले 6	ले 5	दे 4	दे 5	ले 2	ले 1	0	दे 1
श	दे 1	दे 2	दे 3	दे 4	ले 3	ले 2	ले 1	0

उदाहरणार्थ : साध्य गाँव-(शहर) अमदावाद - वर्गांक-1

साधक कमल वर्गांक-2

साधक को लभ्य कांकीणी –

साध्यवर्गांक 1 x 2 = 2

उसमें साधक वर्गांक 2 जोडने से 2 + 2 = 4

4 को 8 से भाग देने पर 4 ही शेष मीलती है ।

इसलिये साध्य को लभ्य कांकीणी - 4

साधक को लभ्य कांकीणी –

साधक वर्गांक 2 x 2 = 4

उसमें साध्य वर्गांक जोडने से 4 + 1 = 5

5 को 8 से भाग देने पर 5 ही शेष मीलती है,

अतः साधक को लभ्य कांकीणी - 5,

साधक की लभ्य कांकीणी अधिक है, अतः

साधक लभ्य कांकीणी - साध्यलभ्य कांकीणी = 5-4 = 1

विस्तृत से कांकीणी यंत्र यहाँ उपर दिया गया है ।

वर्णो वश्यं च तारा योनिश्च वर्गमेलकं ।
गणश्च राशिकूटश्च नाडी चैते गुणाधिकाः ॥६५॥

योनेः राशिवश्यमधिकं इति कस्यचिन्मते ।

निरुपमा ❋ वर्ण, वश्य, तारा, योनि, वर्गमेलक, गण, राशिकूट एवं नाडी, ये उत्तरोत्तर गुणाधिक होते है ।

कितनेक के मतसे योनि से राशिवश्यका बल अधिक है । (65)

श्रीमद् चारित्रविजय - शिष्यदर्शनगुंफितः ।
राश्यादिधारणायंत्रे अध्यायः प्रथम इति ॥६६॥

निरुपमा ❋ श्रीमत् चारित्र विजयजी के शिष्य मुनि दर्शनविजयजी रचित श्री धारणायंत्र में राशि आदि निरुपणात्मक प्रथम अध्याय समाप्त हुआ । (66)

— ● —

अध्याय-2

मङ्गलम् ❋ **चतुर्विंशति-तीर्थेशान् प्रणिपत्य गिरं गुरुम् ।**
जिनानां नामचिह्नानि धारणागतिः कथ्यते ॥१॥

निरुपमा ❋ चौबीश तीर्थंकर भगवंतो को, वाणी की अधिष्ठात्री को एवं गुरु को प्रणाम करके जिनेश्वरो के नाम, चिह्न (एवं नक्षत्रादि) धारणागतियाँ यहाँ कही जाती है । (1)

जिननाम ❋ **ऋषभश्चाजितस्वामी संभवश्चाभिनंदनः ।**
सुमतिः पद्मसुपार्श्वौ चंद्रः सुविधिशीतलौ ॥२॥

श्रेयांसो वासुपूज्यश्च विमलस्वाम्यनन्तराट् ।
धर्मः शान्तिश्च कुंथुश्च अरो मल्लिजिनस्तथा ॥३॥

मुनिसुव्रतस्वामी च नमिर्नेमिश्च पार्श्वराट् ।
महावीरेति संभूताः वर्तमानजिनेश्वराः ॥४॥

निरुपमा ❋ उपर तीन श्लोक में अनुक्रम से वर्तमान चौबीशी के 24 तीर्थंकरो के नाम कहे गये है, जो जिनराश्यादि यंत्र परसे स्पष्ट है । (2-3-4)

लांछनानि ❋ **वृषो गजोऽश्वः प्लवगः, क्रौंचोऽब्जं स्वस्तिकः शशी ।**
मकरः श्रीवत्सः खड्गी, महिषः शुकरस्तथा ॥५॥

श्येनो वज्रं मृगश्छागो, नंद्यावर्तो घटोऽपि च ।
कूर्मो नीलोत्पलं शंखः, फणी सिंहोऽर्हतां ध्वजाः ॥६॥

निरुपमा ❋ उपर दो श्लोक में अनुक्रम से वर्तमान 24 तीर्थंकरो के लांछन कहे है, जो जिनराश्यादि यंत्र परसे स्पष्ट है । यहाँ खड्गी = गेंडो, महिष = पाडो, शुकर = वराह, श्येन = गरुड ।

शास्त्रप्रमाणम् ❋ **एते च दक्षिणांगविनिवेशिनो लांछनभेदा इति, अभिधानचिंतामणौ कलिकालसर्वज्ञश्रीहेमचन्द्रसूरिः ।**

निरुपमा ❋ उपरोक्त कहे चौबीस लांछन तीर्थंकरो के दाहिने अंग पर स्थित लांछन के भेद है एसा 'अभिधान चिंतामणि' में कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचंद्रसूरीश्वरजीने कहा है ।

अन्यान्याम्नायः ❋ **दिगंबराम्नायग्रंथे तु सुमति - शीतल - अनंत - अरजिनानां लांछनभेदो दृष्यते, तद्यथा - कोकः द्रुमः ऋक्षो मेष इति सिद्धांतरसायनकल्पे (मुंबइ-संग्रह), कोकः श्रीयुतो वृक्षः शेधो पाठीन इति वसुनन्दीकृतप्रतिष्ठापाठे, कोकः (घेटो) श्रीयुतो वृक्षः शल्यो मत्स्य इति पूजासार समुच्चये, हंसो वा चातकः श्रीवृक्षः सेही मत्स्य इति भोलानाथ मुखत्यार - लिखित - हिंदी तीर्थंकर - चिह्नरहस्ये (अनेकांत वर्ष 1, किरण 2), सुविधेस्तु लांछनं कटुक इति सिद्धान्तरसायनकल्पे ।**

दिगंबर आम्न्याय के ग्रंथो में श्री सुमतिनाथ, श्री शीतलनाथ श्री अनंतनाथ व श्री अरनाथ भगवान के लांछन में भेद मालूम होता है । जो निम्नोक्त कोष्टक से ज्ञात करें ।

	सिद्धांतरसायन कल्प	वसुनन्दीकृत प्रतिष्ठासार	पूजासार समुच्चय	भोलानाथ मुख्यत्यार लिखित हिंदी तीर्थंकर चिह्नरहस्य
श्री सुमतिनाथ	कोक	कोक	कोक	हंस/चातक
श्री शीतलनाथ	द्रुम (वृक्ष)	श्रीवृक्ष	श्रीवृक्ष	श्रीवृक्ष
श्री अनंतनाथ	ऋक्ष	शेध	शल्य	सेही
श्री अरनाथ	मेष	पाठीन	मत्स्य	मत्स्य

सिद्धान्तरसायनकल्प अनुसार सुविधिनाथ प्रभु का लांछन कटुक कहा है । मेष = अज = बकरा, शेध = ? (सेधा = शाहुडी पक्षी), श्रीवृक्ष - श्रीनामक वृक्ष (बीली का पेड) या पीपल का पेड, पाठीन = एक प्रकार का मत्स्य, कोक = चक्रवाकपक्षी, ऋक्ष = एक प्रकार का वृक्ष । (शब्दरत्नमहोदधिः) (5-6)

नक्षत्राणि ❋ **जिनानामुत्तराषाढा रोहिणी मृगशिर्षभम् ।**
पुनर्वसू मघा चित्रा विशाखा चानुराधिका ॥७॥

मूलर्क्षं पूर्वजाषाढा श्रवणं शततारकम् ।
उत्तराभाद्रभं चान्त्यं (पुष्यमश्विनी कृत्तिका ?)
पुष्यं भरणी कृत्तिका ॥८॥

रेवत्यश्विनी श्रवणं आद्यं चित्रा विशाखिका ।
उत्तराफाल्गुनी भानि ज्ञेयानि जन्मभानि वै ॥९॥

निरुपमा ❋ उपरोक्त तीन श्लोक में 24 जिनेश्वरो के जन्मनक्षत्र अनुक्रम से कहे है, जो जिनराश्यादियंत्र में स्पष्ट है । (7-8-9)

राशयः ❋ **धनुर्गौमिथुनं युग्मं सिंहः कन्या तुला अलिः ।**
धनुः धनुश्च मकरो, घटो मीनं मीनं तथा ॥१०॥

कर्को मीनं च गौर्मीनं, मेषश्च मकरस्तथा ।
मेषो कन्या तुला कन्या, तीर्थकृज्जन्मराशयः ॥११॥

निरुपमा ❋ उपरोक्त दो श्लोक में वर्तमान 24 तीर्थंकरो की जन्मराशियाँ अनुक्रम से कही गइ है । यहाँ गौ = वृषभ, युग्म = मिथुन, अलि = वृश्चिक । (10-11)

धारणा ❋ **एवं जन्मर्क्ष - राशिभ्यां, ज्ञात्वा कूटं तथाक्षरम् ।**
कर्तव्या स्थापकाचार्यैः तीर्थेषां धारणागतिः ॥१२॥

निरुपमा ❋ इस तरह जन्मनक्षत्र और जन्मराशि द्वारा तीर्थंकर कूटयंत्र एवं उनके आद्य अक्षर द्वारा वर्गादिको जानकर बिंब स्थापक गृहस्थ और प्रतिष्ठापक आचार्यश्री को तीर्थंकरो की धारणागति करनी चाहिए । (12)

जिनराश्यादि यंत्र-1

क्रम	नाम	लांछन	नक्षत्र	योनि	वर्ग	गण	नाडी
1	ऋषभदेव	वृषभ	उत्तराषाढा	नकुल	अ	मनुष्य	अंत्य
2	अजितनाथ	हस्ति	रोहिणी	सर्प	अ	मनुष्य	अंत्य
3	संभवनाथ	अश्व	मृगशिर	सर्प	श	देव	मध्य
4	अभिनंदन	वानर	पुनर्वसू	बिडाल	अ	देव	आद्य
5	सुमतिनाथ	क्रौंच	मघा	उंदिर	श	राक्षस	अंत्य
6	पद्मप्रभ	पद्म	चित्रा	व्याघ्र	प	राक्षस	मध्य
7	सुपार्श्वनाथ	स्वस्तिक	विशाखा	व्याघ्र	श	राक्षस	अंत्य
8	चंद्रप्रभ	चंद्र	अनुराधा	हरिण	च	देव	मध्य
9	सुविधिनाथ	मकर	मूल	श्वान	श	राक्षस	आद्य
10	शीतलनाथ	श्रीवत्स	पूर्वाषाढा	वानर	श	मनुष्य	मध्य
11	श्रेयांसनाथ	खड्गी (गेंडो)	श्रवण	वानर	श	देव	अंत्य
12	वासुपूज्य	महिष	शतभिषा	अश्व	च	राक्षस	आद्य
13	विमलनाथ	वराह	उ.भाद्रपद	गौ	य	मनुष्य	मध्य
14	अनंतनाथ	श्येन (सिंचाणो)	रेवती	हस्ति	अ	देव	अंत्य
15	धर्मनाथ	वज्र	पुष्य	अज (मेष)	त	देव	मध्य
16	शांतिनाथ	हरिण	भरणी	हस्ति	श	मानव	मध्य
17	कुंथुनाथ	अज	कृत्तिका	अज (मेष)	क	राक्षस	अंत्य
18	अरनाथ	नंद्यावर्त	रेवती	हस्ति	अ	देव	अंत्य
19	मल्लिनाथ	कळश	अश्विनी	अश्व	प	देव	आद्य
20	मुनिसुव्रत	कच्छप	श्रवण	वानर	प	देव	अंत्य
21	नमिनाथ	नील कमल	अश्विनी	अश्व	त	देव	आद्य
22	नेमिनाथ	शंख	चित्रा	व्याघ्र	त	राक्षस	मध्य
23	पार्श्वनाथ	सर्प	विशाखा	व्याघ्र	प	राक्षस	अंत्य
24	महावीर	सिंह	उ.फाल्गुनी	गौ	प	मनुष्य	आद्य

जिनराश्यादि यंत्र-2

क्रम	नाम	राशि	अशुभ राशि	वर्ण	तारा	हंस
1	ऋषभदेव	धन	वृषभ, मकर	क्षत्रिय	3	अग्नि
2	अजितनाथ	वृषभ	मेष, धन	वैश्य	4	भूमि
3	संभवनाथ	मिथुन	वृश्चिक, कर्क	शूद्र	5	वायु
4	अभिनंदन	मिथुन	वृश्चिक, कर्क	शूद्र	7	वायु
5	सुमतिनाथ	सिंह	मकर	क्षत्रिय	1	अग्नि
6	पद्मप्रभ	कन्या	मेष, मकर	वैश्य	5	भूमि
7	सुपार्श्वनाथ	तुला	वृश्चिक, मीन	शूद्र	7	वायु
8	चंद्रप्रभ	वृश्चिक	मिथुन, कर्क, तुला	क्षत्रिय	8	अग्नि
9	सुविधिनाथ	धन	वृषभ, मकर	क्षत्रिय	1	अग्नि
10	शीतलनाथ	धन	वृषभ, मकर	क्षत्रिय	2	अग्नि
11	श्रेयांसनाथ	मकर	सिंह, कन्या, धन	क्षत्रिय	4	अग्नि
12	वासुपूज्य	कुंभ	मिथुन, कर्क, मीन	शूद्र	6	वायु
13	विमलनाथ	मीन	कर्क, तुला, कुंभ	ब्राह्मण	8	जल
14	अनंतनाथ	मीन	कर्क, तुला, कुंभ	ब्राह्मण	6	जल
15	धर्मनाथ	कर्क	मिथुन, कुंभ	ब्राह्मण	8	जल
16	शांतिनाथ	मेष	वृषभ, कन्या	क्षत्रिय	2	अग्नि
17	कुंथुनाथ	वृषभ	मेष, धन	वैश्य	3	भूमि
18	अरनाथ	मीन	कर्क, तुला, कुंभ	ब्राह्मण	9	जल
19	मल्लिनाथ	मेष	वृषभ, कन्या	क्षत्रिय	1	अग्नि
20	मुनिसुव्रत	मकर	सिंह, कन्या, धन	वैश्य	4	भूमि
21	नमिनाथ	मेष	वृषभ, कन्या	क्षत्रिय	1	अग्नि
22	नेमिनाथ	कन्या	मेष, मकर	वैश्य	5	भूमि
23	पार्श्वनाथ	तुला	वृश्चिक, मीन	शूद्र	7	वायु
24	महावीर	कन्या	मेष, मकर	वैश्य	3	भूमि

तीर्थंकर नाडी-गण यंत्र

साध्य तीर्थंकर	साधक नाडीवेध			साधक गण		
	आद्य	मध्य	अंत्य	देव	मनुष्य	राक्षस
1 ऋषभदेव	—	—	वेध	मध्यम	स्व	अशुभ
2 अजितनाथ	—	—	वेध	मध्यम	स्व	अशुभ
3 संभवनाथ	—	वेध	—	स्व	मध्यम	वैर
4 अभिनंदन	वेध	—	—	स्व	मध्यम	वैर
5 सुमतिनाथ	—	—	वेध	वैर	अशुभ	स्व
6 पद्मप्रभ	—	वेध	—	वैर	अशुभ	स्व
7 सुपार्श्वनाथ	—	—	वेध	वैर	अशुभ	स्व
8 चंद्रप्रभ	—	वेध	—	स्व	मध्यम	वैर
9 सुविधिनाथ	वेध	—	—	वैर	अशुभ	स्व
10 शीतलनाथ	—	वेध	—	मध्यम	स्व	अशुभ
11 श्रेयांसनाथ	—	—	वेध	स्व	मध्यम	वैर
12 वासुपूज्य	वेध	—	—	वैर	अशुभ	स्व
13 विमलनाथ	—	वेध	—	मध्यम	स्व	अशुभ
14 अनंतनाथ	—	—	वेध	स्व	मध्यम	वैर
15 धर्मनाथ	—	वेध	—	स्व	मध्यम	वैर
16 शांतिनाथ	—	वेध	—	मध्यम	स्व	अशुभ
17 कुंथुनाथ	—	—	वेध	वैर	अशुभ	स्व
18 अरनाथ	—	—	वेध	स्व	मध्यम	वैर
19 मल्लिनाथ	वेध	—	—	स्व	मध्यम	वैर
20 मुनिसुव्रत	—	—	वेध	स्व	मध्यम	वैर
21 नमिनाथ	वेध	—	—	स्व	मध्यम	वैर
22 नेमिनाथ	—	वेध	—	वैर	अशुभ	स्व
23 पार्श्वनाथ	—	—	वेध	वैर	अशुभ	स्व
24 महावीर	वेध	—	—	मध्यम	स्व	अशुभ

तीर्थंकर राशिकूटयंत्र

क्रम	राशि	स्वजिन	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठ	प्रीति
1	मेष	16, 19, 21	कर्क 15	मकर 11, 20 मीन 13, 14, 18	वृश्चिक 8
2	वृषभ	2, 17	कुंभ 12	मिथुन 3, 4 सिंह 5	तुला 7, 23
3	मिथुन	3, 4	कन्या 6, 22, 24	वृषभ 2, 17 मीन 13, 14, 18	मकर 11, 20
4	कर्क	15	मेष 16, 19, 21	सिंह 5, तुला 7, 23	धन 1, 9, 10
5	सिंह	5	वृश्चिक 8	वृषभ 2, 17 कर्क-15	मीन 13, 14, 18
6	कन्या	6, 22, 24	मिथुन 3, 4	तुला 7, 23 धन 1, 9, 10	कुंभ-12
7	तुला	7, 23	मकर 11, 20	कर्क 15 कन्या 6, 22, 24	वृषभ 2, 17
8	वृश्चिक	8	सिंह 5	धन 1, 9, 10 कुंभ 12	मेष 16, 19, 21
9	धन	1, 9, 10	मीन 13, 14, 18	कन्या 6, 22, 24 वृश्चिक 8	कर्क 15
10	मकर	11, 20	तुला 7, 23	मेष 16, 19, 21 कुंभ 12	मिथुन 3, 4
11	कुंभ	12	वृषभ 2, 17	वृश्चिक 8 मकर 11, 20	कन्या 6, 22, 24
12	मीन	13, 14, 18	धन 1, 9, 10	मेष 16, 19, 21 मिथुन 3, 4	सिंह 5

क्रम	शुभ	सम	मध्यम	अशुभ	शत्रु	अशुभतर
1	मिथुन 3, 4 कुंभ 12 सिंह 5, धन 1, 9, 10	तुला 7, 23	–	वृषभ 2, 17	कन्या 6, 22, 24	–
2	कर्क 15, कन्या 6,22,24, मकर 11-20 मीन 13, 14, 18	वृश्चिक 8 –	–	मेष 16, 19, 21	धन 1, 9, 10	
3	मेष 16, 19, 21 सिंह–5, तुला 7-23	धन 1-9-10	कुंभ–12	–	वृश्चिक 8	कर्क 15
4	वृश्चिक 2, 17 कन्या 6, 22, 24	मकर 11, 20	वृश्चिक–8, मीन– 13, 14, 18	–	कुंभ 12	मिथुन 3, 4
5	मेष 16, 19, 21 मिथुन 3, 4 तुला 7, 23 कन्या 6, 22, 24 धन 1, 9, 10	कुंभ 12	–	–	मकर 11, 20	–
6	वृषभ 2, 17 कर्क 15 सिंह 5, वृश्चिक 8	मीन 13, 14, 18	मकर 11, 20	–	मेष 16, 19, 21	–
7	मिथुन 3, 4 सिंह 5 कुंभ 12, धन 1, 9, 10	मेष 16, 19, 21	–	वृश्चिक 8	मीन 13, 14, 18	–
8	कन्या 6, 22, 24 मकर 11, 20 मीन 13, 14, 18	वृषभ 2, 17	कर्क 15	तुला 7, 23	मिथुन 3, 4	–
9	मेष 16, 19, 21 सिंह 5, तुला 7, 23 कुंभ–12	मिथुन 3, 4	–	मकर 11-20	वृषभ 2, 17	–
10	वृषभ 2, 17 वृश्चिक–8 मीन 13, 14, 18	कर्क 15	कन्या 6, 22, 24	धन 1, 9, 10	सिंह 5	–
11	मेष 16, 19, 21 तुला 7, 23 धन 1-9-10	सिंह 5	मिथुन 3, 4	मीन 13, 14, 18	कर्क 15	–
12	वृषभ 2, 17 वृश्चिक 8 मकर 11, 20	कन्या 6, 22, 24	कर्क 15	कुंभ 12	तुला 7, 23	–

द्वादशारतीर्थंकर वेध यंत्र

	साधक पादाक्षर	जिननाडीवेध	जिन-भवेध	जिन-पादवेध
4	कु, गो, टे, ठ, दि, नो, भि, ला, हि	9, 12, 19, 21	4, 24	–
7-8	ग, गि, झ, ट, ड, ढ, थ, न, नि, फ, मो, र, रि, ले, लो, वे, वो, हो	8, 10, 13, 15, 16	3, 6, 22	–
9	अ, खो, डि, तो, दे, भे, मे, रु, वु	2, 5, 11, 14, 18, 20	7, 17, 23	1
10-11-12	इ, उ, ए, ओ, खि, खु, खे, च, चि, ज, जि, डु, डे, डो, त, ति, तु, ते, दो, मो, म, मि, मु, रे, रो, व, वि	2, 5, 7, 11, 14, 17, 18, 20, 23	1	–

साधक तीर्थंकर तारा यंत्र

(दिदृक्षुभ्यो हिताय संदर्भितोऽयं यन्त्रः वस्तुतस्त्वनावश्यक एव ।)

(जिज्ञासुओं के लिये दिया गया यह यंत्र वस्तुतः अनावश्यक ही है ।)

1 अश्विनी	10 मघा	19 मूल	1,3,4,6,7,17,22,23,24
2 भरणी	11 पू.फाल्गुनी	20 पूर्वाषाढा	2,8,11,12,13,15,20
3 कृत्तिका	12 उ.फाल्गुनी	21 उत्तराषाढा	3,4,6,7,14,18,22,23
4 रोहिणी	13 हस्त	22 श्रवण	5,8,9,12,13,15,19,21
5 मृगशिर	14 चित्रा	23 धनिष्ठा	4,7,10,14,16,18,23
6 आर्द्रा	15 स्वाति	24 शतभिषा	1,5,8,9,13,15,17,19,21,24
7 पुनर्वसू	16 विशाखा	25 पू.भाद्रपद	2,10,11,14,16,18,20
8 पुष्य	17 अनुराधा	26 उ.भाद्रपद	1,3,5,6,9,17,19,21,22,24
9 अश्लेषा	18 ज्येष्ठा	27 रेवती	2,10,11,12,16,20

अश्विनी, मघा एवं मूल नक्षत्रवाले साधक को उसी पंक्ति में दिये गये अंकवाले भगवान के साथ तीसरी, पाँचवीं या सांतवीं तारा होती है ।

साधक तीर्थंकर नक्षत्र-योनि-राशियंत्र

साधक नक्षत्र	पाद	साधक को स्वयोनि साध्य तीर्थंकर	साध्य जिन के साथ योनिवैर	राशि
1. अश्विनी	—	19, 21 + 12	0 + 0	मेष
2. भरणी	—	0 + 14, 16, 18	0 + 0	मेष
3. कृत्तिका	2-3-4	17 + 15	10 + 11, 20	वृषभ
4. रोहिणी	—	2 + 3	1 + 0	वृषभ
5. मृगशिर्ष	3 - 4	3 + 2	1 + 0	मिथुन
6. आर्द्रा	—	0 + 9	8 + 0	मिथुन
7. पुनर्वसू	1-2-3	4 + 0	5 + 0	मिथुन
8. पुष्य	—	15 + 17	10 + 11, 20	कर्क
9. अश्लेषा	—	0 + 4	5 + 0	कर्क
10. मघा	—	5 + 0	0 + 4	सिंह
11. पू.फाल्गुनी	—	0 + 5	4 + 0	सिंह
12. उ.फाल्गुनी	2-3-4	24 + 13	6, 22 + 7, 23	कन्या
13. हस्त	—	0 + 0	19, 21 + 12	कन्या
14. चित्रा	1-2	6, 22 + 7, 23	24 + 13	कन्या
15. स्वाति	—	0 + 0	19, 21 + 12	तुला
16. विशाखा	1-2-3	7, 23 + 6, 22	24 + 13	तुला
17. अनुराधा	—	8 + 0	0 + 9	वृश्चिक
18. ज्येष्ठा	—	0 + 8	0 + 9	वृश्चिक
19. मूल	—	9 + 0	0 + 8	धन
20. पूर्वाषाढा	—	10+ 11, 20	15 + 17	धन
21. उत्तराषाढा	1	1 + 0	3 + 2	धन
22. अभिजित्	—	0 + 1	3 + 2	0
23. श्रवण	—	11, 20 + 10	15 + 17, 16	मकर
24. धनिष्ठा	—	0 + 0	0 + 14, 16, 18	0
25. शतभिषा	—	12, 19, 21	0 + 0	कुंभ
26. पू.भाद्रपद	—	0 + 0	0 + 14, 16, 18	0
27. उ.भाद्रपद	—	13 + 24	6, 22 + 7, 23	मीन
28. रेवती	—	14, 16, 18 + 0	0 + 0	मीन

कूटषट्कम् ❋ **योनिर्वर्गश्च लभ्यं च गणैक्यं राशिकूटता ।**
नाडीति षड् बलानीति नव्यबिंबे विलोक्यते ॥१३॥

उक्तं च - योनिगणराशिभेदाः लभ्यं वर्गश्च नाडीवेधश्च ।
नूतनबिंबविधाने षड्विधमेतद् विलोक्यं ज्ञैः ॥१४॥

निरुपमा ❋ योनि, वर्ग, लभ्य, गणोकी एकता/समानता, राशिकूट व नाडी, यह छ बल नव्यबिंब की प्रतिष्ठा के समय देखे जाते है । (13)

कहा है कि –

योनि, गण, राशि, लभ्य, वर्ग एवं नाडीवेध; नूतन बिंब के विधान में सुज्ञ व्यक्ति को यह छ बात देखनी चाहिए । (14)

श्रीमद् चारित्रविजय - शिष्य - दर्शन गुंफितः ।
तीर्थकृद्धारणायंत्रे अध्यायो द्वितीय इति ॥१५॥

निरुपमा ❋ श्री चारित्रविजयजी के शिष्य दर्शनविजयजी संदृब्ध श्री तीर्थंकरधारणायंत्र ग्रंथ में यह दूसरा अध्याय समाप्त हुआ । (15)

– ● –

अध्याय-3

मङ्गलम् ❋ **प्रणम्य परमेष्ठिनं शिघ्रबोधाय तन्यते ।**
साक्षरभेदविन्यासः साध्यसाधकमेलकः ॥१॥

निरुपमा ❋ परमेष्ठि को प्रणाम करके साध्य और साधक का मेलक एसा अक्षरभेद सह (प्रत्येक अक्षर का) विन्यास यानि विस्तृत प्ररुपणा शीघ्रबोधके लिये यहाँ किया जा रहा है । (1)

समूहः ❋ **स्वराः सस्वरकाद्यानि भवन्ति नामनि ततः ।**
राशिभ-वर्गपैक्येन समूहः क्रियते पृथक् ॥२॥

निरुपमा ❋ नाम की आदि में स्वर या कादि व्यंजन अक्षर होते है । राशि, नक्षत्र एवं वर्ग से उन सब अक्षर का समूह पृथक् (भिन्न) किया जाता है । (2)

न्यासः ❋ **एवं भवेत् चतुःषष्ठी भिन्नराशिभवर्गतः ।**
अक्षराणां च सर्वेषां तन्न्यासः क्रियते क्रमात् ॥३॥

प्रत्यक्षरं प्रतिपंक्तिं स्थाप्यते स्वक-भादिकम् ।
यथार्हं योनि-वर्णादि - यथास्यात् सुकरास्वदृक् ॥४॥

सर्वाक्षर कूटयंत्र

अक्षर	नक्षत्र	योनि	तारा	गण	नाडी	युजि	राशि	स्वामि	वर्ण	वर्ग
अ	कृत्तिका	मेष	3	रा.	अं.	पू.	मेष	मंगल	क्ष.	अ
इ,उ,ए	कृत्तिका	मेष	3	रा.	अं.	पू.	वृषभ	शुक्र	वै.	अ
ओ	रोहिणी	सर्प	4	म.	अं.	पू.	वृषभ	शुक्र	वै.	अ
का,की	मृगशिर	सर्प	5	दे.	म.	पू.	मिथुन	बुध	शू.	क
कु	आर्द्रा	श्वान	6	म.	आ.	म.	मिथुन	बुध	शू.	क
के,को	पुनर्वसू	बिडाल	7	दे.	आ.	म.	मिथुन	बुध	शू.	क
खा	अभिजित्	नकुल	—	विद्या.	+	प.	मकर	शनि	वै.	क
खी,खु, खे,खो	श्रवण	वानर	4	दे.	अं.	प.	मकर	शनि	वै.	क
ग,गी	धनिष्ठा	सिंह	5	म.	म.	प.	मकर	शनि	शू.	क
गु,गे	धनिष्ठा	सिंह	5	म.	म.	प.	कुंभ	शनि	शू.	क
गो	शततारा	अश्व	6	रा.	आ.	प.	कुंभ	शनि	शू.	क
घ,ङ	आर्द्रा	श्वान	6	म.	आ.	म.	मिथुन	बुध	शू.	क
चा,ची	रेवती	हस्ति	9	दे.	अं.	पू.	मीन	गुरु	ब्रा.	च
चु,चे,चो	अश्विनी	अश्व	1	दे.	आ.	पू.	मेष	मंगल	क्ष.	च
छ	आर्द्रा	श्वान	6	म.	आ.	म.	मिथुन	बुध	शु.	च
जा,जि	उत्तराषाढा	नकुल	3	म.	अं.	प.	मकर	शनि	वै.	च
जु,जे,जो	अभिजित्	नकुल	—	विद्या.	—	प.	मकर	शनि	वै.	च
झ	उ.भाद्रपद	गौ	8	म.	म.	प.	मीन	गुरु	ब्रा.	च
टा,टी,टु	पू.फाल्गुनी	उंदिर	2	म.	म.	म.	सिंह	सूर्य	क्ष.	ट
टे	उ.फाल्गुनी	गौ	3	म.	आ.	म.	सिंह	सूर्य	क्ष.	ट
टो	उ.फाल्गुनी	गौ	3	म.	आ.	म.	कन्या	बुध	वै.	ट
ठ	हस्त	महिष	4	दे.	आ.	म.	कन्या	बुध	वै.	ट
डा	पुष्य	मेष	8	दे.	म.	म.	कर्क	चंद्र	ब्रा.	ट
डी,डु डे,डो	अश्लेषा	बिडाल	9	रा.	अं.	म.	कर्क	चंद्र	ब्रा.	ट
ढ	पूर्वाषाढा	वानर	2	म.	म.	प.	धन	गुरु	क्ष.	ट

अक्षर	नक्षत्र	योनि	तारा	गण	नाडी	युजि	राशि	स्वामि	वर्ण	वर्ग
ण	हस्त	महिष	4	दे.	आ.	म.	कन्या	बुध	वै.	ट
ता	स्वाति	महिष	6	दे.	अं.	म.	तुला	शुक्र	शू.	त
ती,तु,ते	विशाखा	व्याघ्र	7	रा.	अं.	म.	तुला	शुक्र	शू.	त
तो	विशाखा	व्याघ्र	7	रा.	अं.	म.	वृश्चिक	मंगल	ब्रा.	त
थ	उ.भाद्र.	गौ	8	म.	म.	प.	मीन	गुरु	ब्रा.	त
द	पू.भाद्र.	सिंह	7	म.	आ.	प.	कुंभ	शनि	शू.	त
दि	पू.भाद्र.	सिंह	7	म.	आ.	प.	मीन	गुरु	ब्रा.	त
दु	उ.भाद्र.	गौ	8	म.	म.	प.	मीन	गुरु	ब्रा.	त
दे,दो	रेवती	हस्ति	9	दे.	अं.	पू.	मीन	गुरु	ब्रा.	त
ध	पूर्वाषाढा	वानर	2	म.	म.	प.	धन	गुरु	क्ष	त
न,ना,नू,ने	अनुराधा	हरिण	8	दे.	म.	म.	वृश्चिक	मंगल	ब्रा.	त
नो	ज्येष्ठा	हरिण	9	रा.	आ.	प.	वृश्चिक	मंगल	ब्रा.	त
पा,पी	उ.फाल्गुनी	गौ	3	म.	आ.	म.	कन्या	बुध	वै.	प
पू	हस्त	महिष	4	दे.	आ.	म.	कन्या	बुध	वै.	प
पे,पो	चित्रा	व्याघ्र	5	रा.	म.	म.	कन्या	बुध	वै.	प
फ	पूर्वाषाढा	वानर	2	म.	म.	प.	धन	गुरु	क्ष.	प
बा,बी,बू	रोहिणी	सर्प	4	म.	अं.	पू.	वृषभ	शुक्र	वै.	प
बे,बो	मृगशिर	सर्प	5	दे.	म.	पू.	वृषभ	शुक्र	वै.	प
भा,भी	मूल	श्वान	1	रा.	आ.	प.	धन	गुरु	क्ष.	प
भू	पूर्वाषाढा	वानर	2	म.	म.	प.	धन	गुरु	क्ष.	प
ले	उत्तराषाढा	नकुल	3	म.	अं.	प.	धन	गुरु	क्ष.	प
लो	उत्तराषाढा	नकुल	3	म.	अं.	प.	मकर	शनि	वै.	प
मा,मी, मू,मे	मघा	उंदिर	1	रा	अं.	म.	सिंह	सूर्य	क्ष	प
मो,	पू.फाल्गुनी	उंदिर	2	म.	म.	म.	सिंह	सूर्य	क्ष.	प
या,यी,यु	ज्येष्ठा	हरिण	9	रा.	आ.	प.	वृश्चिक	मंगल	ब्रा	य
ये,यो	मूल	श्वान	1	रा.	आ.	प.	धन	गुरु	क्ष	य
र,ऋ,रि	चित्रा	वानर	5	रा.	म.	म.	तुला	शुक्र	शू.	य
रु,रे,रो	स्वाति	महिष	6	दे.	अं.	म.	तुला	शुक्र	शू.	य
ला	अश्विनी	अश्व	1	दे.	आ.	पू.	मेष	मंगल	क्ष	य
ली,लु, ले,लो	भरणी	हस्ति	2	म.	म.	पू.	मेष	मंगल	क्ष	य

अक्षर	नक्षत्र	योनि	तारा	गण	नाडी	युजि	राशि	स्वामि	वर्ण	वर्ग
वा,वी,वु	रोहिणी	सर्प	4	म.	अं.	पू.	वृषभ	शुक्र	वै.	य
वे,वो	मृगशिर	सर्प	5	दे.	म.	पू.	वृषभ	शुक्र	वै.	य
श	उ.भाद्रपद	गौ	8	म.	म.	प.	मीन	गुरु	ब्रा.	श
ष	हस्त	महिष	4	दे.	आ.	म.	कन्या	बुध	वै.	श
स,सी,सु	शततारा	अश्व	6	रा.	आ.	प.	कुंभ	शनि	शू.	श
से,सो	पू.भाद्रपद	सिंह	7	म.	आ.	प.	कुंभ	शनि	शू.	श
हा	पुनर्वसू	बिडाल	7	दे.	आ.	म.	मिथुन	बुध	शू.	श
हो	पुनर्वसू	बिडाल	7	दे.	आ.	म.	कर्क	चंद्र	ब्रा.	श
हू,हे,हो	पुष्य	मेष	8	दे.	म.	म.	कर्क	चंद्र	ब्रा.	श

निरुपमा ※ इस तरह भिन्न राशि, नक्षत्र एवं वर्ग से सर्व अक्षरो के 64 भेद होते है, जिनका क्रमिक न्यास (स्थापना) किया जाता है । (3)

प्रत्येक अक्षर को लेकर प्रतिपङ्क्ति में उसका नक्षत्र आदि एवं यथायोग्य योनि, वर्ण आदि की स्थापना की जाती है, जिससे वह देखने में सुकर-सुलभ बनें । (4)

अक्षराः ※ **अ-इ-ओ-का-कु-के-खा-खी, ग-गु-गो-घा-च-चु-छ-जा ।**
जु-झा-टा-टे-टो-ड-डा-डी, ढ-ण-ता-ति-तो-था-द-दि ॥५॥

दु-दे-धा-न-नो-प-पु-पे, फ-बा-बे-भा-भु-भे-भो-म ।
मो-य-ये-रा-रु-लि-ले-वा, वे-श-षा-स-से-हा-हि-हु ॥६॥

निरुपमा ※ जिस प्रकार से सर्व अक्षरो के 64 भेद होते है, वह उपर दो श्लोक में अ-इ-ओ... इत्यादि क्रम से दिखाये गये है । और कोष्टक से भी ये 64 अक्षर अनुक्रम से स्पष्ट है । (5-6)

अनुसंधानम् ※ **चतुःषष्ठ्यक्षराश्चेति अनुक्ताः पूर्वगामिनः ।**
ह्रस्वदीर्घैक्यभाजस्ते सर्वे नाम्नि व्यवस्थिताः ॥७॥

निरुपमा ※ यह 64 अक्षरभेद में जो अक्षर नहि कहे गये है, उन्हे पूर्वकथित-उसके पहले कहे हुए अक्षरों के साथ जानना । उनमें ह्रस्व-दीर्घ का ऐक्य समझना एवं ये प्रत्येक नाम के विषय में होते है । (7)

यंत्रफलम् ❋ **साधकसाध्ययोर्योगे दिदृक्षा भवति यदा ।**
(यदा योगस्तु साध्यस्य साधकेन दिदृक्ष्यते)
तदाऽऽशु जायते ज्ञानं सुलभं यंत्रदर्शनात् ॥८॥

निरुपमा ❋ जब साध्य और साधक का योग (मेलक) जानने की इच्छा हो तब यह यंत्र देखने से सरलता से शीघ्रबोध होता है । (8)

श्रीमद्-चारित्रविजय-शिष्यदर्शनगुंफितः ।
प्राऽक्षरो धारणायंत्रे अध्यायस्तृतीय इति ॥९॥

निरुपमा ❋ श्रीमद् चारित्रविजयजी के शिष्य मुनि दर्शनविजयजी रचित धारणागतियंत्र ग्रंथ में अधिक (64) अक्षरवाला यह तृतीय अध्याय समाप्त हुआ । (9)

— ● —

अध्याय-4

मङ्गलम् ❋ **प्रणिपत्य परेशं च, साधक-साध्यसिद्धये ।**
परस्पराक्षरैश्चक्रं, अउओकं सदुच्यते ॥१॥

सर्वैर्द्वादशधो न्यस्तं, अकडम् चक्रमिष्यते ।
तदेव लाघवेनेत्थं, त्रिकभक्तं विधियते ॥२॥

निरुपमा ❋ परमेश्वर श्री जिनेश्वर को प्रणाम करके साधक और साध्य की सिद्धि के लिये परस्पर अक्षरो द्वारा बना हुआ यह अउओक यंत्र हम कह रहे है । (1)

पूर्व के सर्व ग्रंथकार 12 प्रकार से अक्षरविन्यास द्वारा जो अकडम चक्र कहते है, उसी को तीनसे विभक्त कर लाघव से हम इस प्रकार कह रहे है । (2)

विन्यासः ❋ **ऋं-ॠं-लृं-लॄं विना आद्या, स्वरास्तु द्वादश क्रमात् ।**
काद्यानि व्यंजनानि च, चतुष्कोष्ठेषु संन्यसेत् ॥३॥

ऋ ॠ स्वरौ तथात्रैव, रकारे ग्राह्यते बुधैः ।
अपि लृलॄस्वरौ विज्ञैः लकारे साध्यते सदा ॥४॥

द्वादश अक्षराः एवं, प्रतिकोष्ठं विनिष्ठिता ।
अउओकादिभिः कार्यो, योगो साधक साध्ययोः ॥५॥

देशे दुर्गे पुरे ग्रामे, औषधे मंत्रदेवयोः ।
स्वामिमृत्येषु भूमिषु, रिपौ चैतन्निरिक्षयेत् ॥६॥

निरुपमा

❀ ऋ, ॠ, ऌ, ॡ को छोडकर आद्य 12 स्वर एवं क आदि व्यंजन अनुक्रम से चार कोष्टक में स्थापें । (3)

ऋ, ॠ स्वर को बुधपुरुष 'र' के अंतर्गत ही समजते है, एवं ऌ, ॡ स्वर 'ल' कार अंतर्गत जानते है । (4)

इस प्रकार प्रत्येक कोष्टक में बारह अक्षर की स्थापना होती है । यहाँ अ-उ-ओ-कादि से साधक और साध्य का योग करना । (5)

देश, दुर्ग (किल्ला), पुर-नगर एवं ग्राम के विषय में, औषध, मंत्र एवं देवता के विषय में, स्वामी एवं नोकर तथा भूमि व शत्रु के विषय में यह चक्र देखना चाहिए । (6)

अ क ड म यंत्र

–	12 अः ठ भ ज्ञ	1	2 आ ख ढ य	–
11 अं ट ब क्ष	–	2 अ क ड म	–	3 इ ग ण र
10	औ ञ फ ळ	–	ई घ त ल	4
9 ओ झ प ह	–	7 ए छ ध ष	–	5 उ ङ थ व
–	ऐ ज न स 8	7	ऊ च द श 6	–

अ उ ओ क यंत्र

अ उ ओ क ङ झ ड थ प म व ह	आ ऊ औ ख च ञ ढ द फ य श ळ
ई ऐ अः घ ज ठ त न भ ल स ज्ञ	इ ए अं ग छ ट ण ध ब र ष क्ष

सिद्धि	साध्य
शत्रु	सुसिद्धि

जन्मनाम ❋ **विवाहे शुभकार्येषु, लाभादौ ग्रहगोचरे ।**
जन्मनाम्नः प्रधानत्वं प्रसिद्धं नाम नेक्षयेत् ॥७॥

निरुपमा ❋ विवाहके विषय में, शुभ कार्यो में, लाभादि के विषय में और ग्रहो के गोचरविषय में जन्मनाम की प्रधानता है, वहाँ प्रसिद्ध नाम नहीं देखना चाहिए । (7)

प्रसिद्धनाम ❋ **गृहे ग्रामे खले क्षेत्रे, वाणिज्ये राजदर्शने ।**
प्रसिद्धनाम्नः श्रेष्ठत्वं, जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥८॥

निरुपमा ❋ गृह, ग्राम, खल (जहाँ धान्यसंग्रह किया जाता है), क्षेत्र, वाणिज्य एवं राजा के दर्शन (मुलाकात) के विषय में प्रसिद्ध नाम की श्रेष्ठता है, वहाँ जन्मराशि का विचार न करें । (8)

सिद्ध्यादयः ❋ **साधकात् प्रथमे साध्ये सिद्धिः साध्यं द्वितीयके ।**
तृतीये तु सुसिद्धः स्यात् रिपुस्तूर्ये यथाक्रमम् ॥९॥

तत् बलं ❋ **सिद्धिः सिध्यति कालेन, साध्यः सिध्यति वा न वा ।**
सुसिद्धस्तत्क्षणादेव, रिपु मूलं निकृंतति ॥१०॥

निरुपमा ❋ साधक से साध्य प्रथम कोष्टक में होने पर 'सिद्ध' योग जानना, द्वितीय कोष्टक में होने पर 'साध्य' योग जानना, तृतीय कोष्टक में होने पर 'सुसिद्ध' योग जानना एवं चतुर्थ कोष्टक में होने पर 'रिपु' योग जानना । (9)

यहाँ 'सिद्धि' का मतलब - कालकी परिपक्वतासे कार्यसिद्धि जानना । 'साध्य' का अर्थ है कि - कार्य की सिद्धि हो या न भी हो । 'सुसिद्ध' से तत्काल कार्यसिद्धि सूचित होती है । एवं 'रिपु' का अर्थ है कि - वह साधक की मूलराशि का भी नाशक है । (10)

श्रीचारित्रविजयान्ते - वासि - दर्शनगुंफितः ।
अ उ ओ धारणायंत्रे अध्यायस्तूर्यम इति ॥११॥

निरुपमा ❋ श्री चारित्रविजयजी के अन्तेवासि मुनि दर्शन विजयजी रचित धारणागति यंत्र ग्रंथ में अ-उ-ओ-क नामक चतुर्थ अध्याय समाप्त हुआ । (11)

— ● —

अध्याय-5

मङ्गलम्

प्रणम्य परया भक्त्या सर्वज्ञं परमेश्वरम् ।
पूर्णज्ञानं हेमचन्द्रं सर्वज्ञं संस्तुवे कलौ ॥१॥

श्रीमद् चारित्रविजयं नत्वा प्रेम्णाऽनघं गुरुम् ।
तीर्थकृद्धारणान्यासः पूर्णभंगो विधीयते ॥२॥

निरुपमा

परा-भक्ति से सर्वज्ञ-परमेश्वर को प्रणाम करके, पूर्णज्ञानी एवं कलिकाल में सर्वज्ञ एसे आचार्यप्रवरश्री हेमचन्द्रसूरीश्वरजी की में स्तवना करता हूँ । (1)

मेरे परमपवित्र गुरुवर श्रीमद्चारित्रविजयजी को प्रेमपूर्वक प्रणाम करके संपूर्णरुप से - सर्व प्रकार के भंग से तीर्थंकरो का धारणान्यास यहाँ किया जा रहा है । (2)

प्रश्नः

स्थापकस्य सूरेः साधोः श्राद्धस्यास्य पुरस्य कः ।
जिनः श्रेष्ठ इति प्रश्ने उत्तरोऽस्मात् प्रदीयते ॥३॥

अत्र को जिनः श्रेष्ठः संघस्य, इति न विलोकनीयं, निषिद्धत्वात् हीरप्रश्ने, इति केचित् ।

निरुपमा

स्थापक एसे आचार्य को, साधुको, श्रावक को एवं, इस (विवक्षित) नगर को कौन से भगवान श्रेष्ठ है एसे प्रश्न का उत्तर इस अध्याय से दीया जाता है । (3)

किसी का मत है कि - हीरप्रश्न में निषेध करने के कारण श्रीसंघ के लिये कौन से जिनेश्वर श्रैष्ठ है, यह देखने की जरुरत नही है ।

न्यासः

चतुःषष्ठ्यक्षराः सन्ति भिन्नराशि-भ-वर्गगाः ।
तत्तद्योन्यादिकं षट्कं साधकस्याऽत्र सन्यसेत् ॥४॥

64 x 24

ततः प्रत्यक्षरं पत्रे चतुर्विंशतयो जिनाः ।
स्वस्वयोन्यादिकैः षट्कै-र्लेख्याः साध्याः समासतः ॥५॥

भंगाः 1536

एवं लेश्याग्निसमिति - चन्द्रमितास्तु भंगयः ।
साधक-जिनयोर्योगः तस्मात्साध्यो विवेकिना ॥६॥

निरुपमा ※ विभिन्न राशि, नक्षत्र एवं वर्ग से बने अक्षर कुल 64 है । साधक के तत् नामाक्षर परसे मीलते योनि आदि षट्क की यहाँ स्थापना करनी । बाद पत्र में प्रत्येक अक्षर पर 24 जिनेश्वर भगवंत की भी उनकी योनि आदि षट्क के साथ स्थापना करनी और साधक के साथ यथायोग्य समास (मिल-जुल) करना । (4-5)

इस तरह विवेकी आत्मा को 1536 भंगियो में साधक और जिनेश्वर का योग करना चाहिए । (जो यहाँ ही विस्तृतरुप से दिया गया है) (6)

षड्बलम् ※ **योनिर्वर्गश्च लभ्यांको गणो राशिश्च नाडिका ।**
नव्यबिंबे विलोक्यं ज्ञैः षोढा बलं गुणाधिकम् ॥७॥

निरुपमा ※ नव्य बिंब की प्रतिष्ठा के विषय में बुधपुरुष को योनि, वर्ग, लभ्यांक, गण, राशि एवं नाडि का छह प्रकार का बल देखना चाहिए एवं ये छह क्रमिक गुणाधिक जानना । (7)

क्वचिदेवादृता तारा कुवैरं सबलं रिपौ ।
भ-वेधो मध्यमः प्रोक्तः पादवेधोऽधमाधमः ॥८॥

उत्तरोत्तरैरशुभैस्तद्योगो नैव शस्यते ।
तस्मात् शस्तो विलोक्योऽसौ स्वपरोपकृति-परैः ॥९॥

निरुपमा ※ तारा का स्वीकार क्वचित् ही किया गया है । शत्रु बलवान हो तो कुवैर जानना । भवेध मध्यम कहा है । एवं पादवेध अधमाधम जानना चाहिए । (7)

(भवेध दिखाने के लिये हमने वेध शब्द के साथ '★' यह चिह्न दिखलाया है । (8)

उत्तरोत्तर अशुभ योग मीलने से वह योग प्रशंसनीय नही है । इस लिये स्व-पर के उपकार में रत व्यक्ति को प्रशस्त योग लेना चाहिए । (9)

सर्वे तीर्थंकराः श्रेष्ठाः कारणं भाववर्धने ।
तथापि सन्निमित्तेन भवेत्कार्यं गुणाधिकम् ॥१०॥

निरुपमा ※ वैसे तो सभी तीर्थंकर श्रेष्ठ है एवं भाववृद्धि के कारण है, फिर भी सन्निमित्त होने पर कार्य गुणाधिक - अधिकगुण (फल) दायी होता है । (10)

श्रीमच्चारित्रविजय - शिष्यदर्शनसत्कृतः ।
महति धारणायंत्रे अध्यायः पंचम इति ॥११॥

निरुपमा ❀ श्रीमत् चारित्रविजयजी के शिष्य दर्शनविजयजी द्वारा अच्छी तरहसे किया गया यह पांचवाँ अध्याय बृहद् धारणागति यंत्र में समाप्त हुआ । (11)

प्रशस्तिः

मङ्गलम् ❀ **वीर वीरेति वीरेति विराजतु ममाशये ।**
महावीरेति वीरेति वीरता भवतु वरा ॥१२॥

निरुपमा ❀ हे वीर ! वीर... वीर... वीर... महावीर... ऐसे एकाकार भावसे आप मेरे मन के आंतरिक परिणाम स्वरुप आशय में बिराजित हो । आपकी वीरता मेरे हृदय में हो । (12)

सूरिः ❀ **गुणमणिगणपूर्णे स्वच्छगच्छे तपाख्ये,**
विजय कमलसूरिः पुण्यसंघप्रतेजाः ।
भविक-मधुप-पद्मो दत्तचारित्रपौष्पः,
समजनि जनमान्यः शांतमुद्राभिरामः ॥१३॥

निरुपमा ❀ गुणरुपी मणियों के समूह से पूर्ण और स्वच्छ ऐसे तपा नामक गच्छ में पुण्य और समुदाय से प्रकर्ष तेजवाले, भविकरुपी मधुकर (भंमरों) के लिये पद्मसमान होते हुए जिन्होने चारित्ररुपी मकरंद दिया है एसे, जनमान्य एवं शांतमुद्रासे युक्त आचार्य विजय कमलसूरिजी हुए । (13)

विजय-केशरः सूरि - स्तत्पट्टेऽभूत् मुनिपतिः ।
वृद्धगुरुः ❀ **तल्लघुबंधुर्विनयो विजयः शान्तभूषणः ॥१४॥**

निरुपमा ❀ उनके पट्टधर मुनिओं के अधिपति ऐसे आचार्यविजय केशरसूरि हुए । उनके लघु-गुरुबंधु श्री विनयविजयजी थे, जो शांत व्यक्तियों में भूषणरुप थे । (14)

गुरुः ❀ **विनयविजयशिष्यो ब्रह्मचारिमुनीन्द्रः,**
प्रवर गुरुकुलस्य ज्ञानराशेर्विधाता ।

विजयद-विजयान्तः ख्यातः चारित्रनामा,
सदमरपदभाक् स्तात् पूज्यपूज्यः प्रसन्नः ॥१५॥

निरुपमा ※ श्री विनयविजयजी के शिष्य मुनि चारित्रविजयजी थे । जो ब्रह्मचारि मुनियों में इन्द्र समान (बाल ब्रह्मचारी) श्रेष्ठ ऐसे (श्री यशोविजयजी जैन) गुरुकुल को ज्ञानराशि प्रदान करनेवाले (संस्थापक), विजय देनेवाला विजय शब्द जिन के अंत में है ऐसे चारित्र नाम से प्रसिद्ध, शुभ देवपदको प्राप्त, पूज्यों के भी पूज्य, एवं सदैव प्रसन्न मनवाले थे । (15)

कतृनाम ※ **तत्पादपद्मशमनामृत-पान-भृंगः**
ज्ञाने रतो विजयदर्शननाम भिक्षुः ।

विधान ※ **सश्लोककोष्टसरलं गुरुयत्नसाध्यं,**
यंत्रं चकार स बृहद्गति-धारणायाम् ॥१६॥

निरुपमा ※ उनके पादरुपी पद्म में शम = समतारुप अमृत का पान करने में भमरा जैसा एवं ज्ञान में रत ऐसा दर्शनविजय नाम का साधु हुआ, जिसने अत्यंत प्रयत्नसाध्य, श्लोक एवं कोष्टक सहित अतिसरल ऐसा बृहद्गतिधारणा के विषय में यंत्र बनाया । (16)

ग्रंथफलम् ※ **ग्रंथाज्ज्ञानं विधिवादः प्रतिष्ठाऽर्चासुदर्शनम् ।**
भावश्चरणं नैजर्यं क्रमशो भवतु नृणाम् ॥१७॥

निरुपमा ※ ग्रंथ से ज्ञान होता है, जिससे उत्तरोत्तर क्रमिक मनुष्यों को विधिवाद (विधिज्ञान-आचरणादि), प्रभुप्रतिष्ठा, प्रभुपूजा, सम्यक् शुभभाव, चारित्र एवं मोक्ष की प्राप्ति हो । (17)

संवत्कालः ※ **वीराद्रसेषुतीर्थेशवर्षे राकासु चैत्रके ।**
ग्रंथोऽगात्पूर्णतां तीर्थे सम्मेतशिखरे वने ॥१८॥

निरुपमा ※ वीरनिर्वाण से तीर्थेश (24), इषु (5), रस (6) अर्थात् 2456 वर्षे चैत्री पूनम को श्री सम्मेतशिखर वनमें-शिखरजी तीर्थ में यह ग्रंथ समाप्त हुआ । (18)

शास्त्रं मुनि-ज्ञान-न्याय - सहाय्यात्सफलीकृतम् ।
यावद् मेरुमहीचन्द्राः नंदतात्ज्ञानीनां मुदे ॥१९॥

निरुपमा ❋ मुनि ज्ञानविजयजी एवं मुनि न्यायविजयजी की सहाय से यह शास्त्र सफल हुआ । मेरुपर्वत, पृथ्वी, चन्द्र जहाँ तक रहे, वहाँ तक ये ग्रंथ ज्ञानीयों के आनंद के लिये हो । (19)

श्लोकमानम् ❋ **विश्वप्रभा - विश्वरचनै - काक्षरी - सामुद्रपूजादेः ।**
सशतविंशतिश्लोकैः पश्चाद्रचितो धारणायंत्रः ॥२०॥

निरुपमा ❋ दिनशुद्धि दीपिका की विश्वप्रभा टीका, विश्वरचना प्रबंध, ऐकाक्षरीकोष ग्रंथ, विनयसामुद्रिकछंद एवं पूजाओं की रचना के पश्चात् 120 श्लोक प्रमाण यह धारणा गति यंत्र ग्रंथ की रचना की है । (20)

कल्याणमस्तु सङ्घस्य, जैनधर्मस्य मंगलम् ।
भद्रं ज्ञानस्य ग्रंथस्य, सर्वेषां भवतु शिवम् ॥२१॥

श्री संघ का कल्याण हो । जैनधर्म का मंगल हो । ज्ञान एवं ग्रंथ का कल्याण हो । सर्व जीवो का कल्याण हो । (21)

यहाँ निरुपमा भाषाटीका सह बृहद् धारणायंत्र ग्रंथ समाप्त हुआ ।

* * *

बृहद्धारणागतियंत्र अध्याय-5 के कोष्टक देखने की रीति

- नूतनबिंब भरवाने से पूर्व अथवा तो पूर्व में अञ्जनशलाका हुए जिनबिंब को श्रीसंघ मंदिर में या गृहमंदिर में मूलनायक के रुप में स्थापित करने में पूजक ऐसे गाँव, संघ या श्रावक का, जो भगवान भरवाये या स्थापन किये जाते है, उसके साथ राशि-योनि-गणादि छः बात का मेलापक इस कोष्टक से देखा जाता है ।
- जिस के लिये भगवान देखना है, उस गाँव, संघ या श्रावक के नाम का आद्य-प्रथम अक्षर लेकर, 'साधकाक्षर' में वह अक्षरवाला पृष्ठ देखना । वहाँ 24 तीर्थंकरो के नाम लिखकर 8 कोष्टक में तारा विगेरह का शुभाशुभ संकेत दिया हुआ है । शुभ-मध्यम-अशुभ संकेत निम्नोक्तरुप में जानना ।

- **1) शुभ** : स्वयोनि-मैत्रीयोनि, योनि या वर्ग का रिक्तस्थान, लेने के विशोपक, स्वगण, शुभराशि-प्रीति-स्वराशि-श्रेष्ठराशि-श्रेष्ठतरराशि, नाडीवेधरहितस्थान या एकभं ।

  2) मध्यम : समानविश्वा, मध्यमगण, मध्यमराशि, राशिभेद से हुआ भवेध ।

  3) अशुभ : अशुभ तारा, योनिवैर-कुवैर, वर्गवैर, देने के विशोपक, अशुभगण-गणवैर, अशुभराशि-शत्रुराशि-अशुभतरराशि, नाडीवेध-नाडीपादवेध।

- अत्यंत शुभ योगवाले तीर्थंकर सर्वथा अनुकूल है । मध्यम योगवाले मध्यम एवं अशुभ योगवाले तीर्थंकर प्रतिष्ठा में वर्ज्य माने गये है । उत्तम और मध्यम योगवाले तीर्थंकरो की प्रतिष्ठा करवानी चाहिए । जिससे जिनप्रतिमा प्रभावशाली रहती है, देवों से अधिष्ठित रहती है और चिरकाल तक निरंतर पूजनीय बनती है ।

- यद्यपि तीर्थंकरो की धारणा में ताराबल नहिवत् देखना ठीक है, लेकिन गण-राशि और नाडी तो अवश्य देखनी ही चाहिए । राशि की प्रतिकूलता हो अथवा नाडीवेध हो उनकी प्रतिष्ठा हरगीज़ नहिं करनी चाहिए । क्योंकि - तारा-योनि-वर्ग-विश्वा-गण-राशि और नाडी का बल अधिक अधिक विशेष है । तो जिनका योग ज्यादा बलवान हो उन्हि तीर्थंकर की प्रतिष्ठा करवाना शुभ जानना ।

- उदाहरण : साधक अक्षर अ, आ में वासुपूज्यस्वामि भगवान को नाडीवेध नही है, राशि शुभ है, स्वगण है, लेने का विशोपक 3 है, तारा-योनि-वर्ग भी शुद्ध है तो अ-आ साधक (अहमदाबाद गाँव, अमीझरा जैन संघ, अक्षय नामक व्यक्ति) के लिये वासुपूज्यस्वामि सर्वश्रेष्ठ है ।

इस प्रकार हरेक बात का विचार करके तीर्थंकरो की अनुकुलता का विचार करना ।

पृष्ठ के नीचे लिखि हुई बाबत दीक्षा-विवाह में उपयोगी है, लेकिन तीर्थंकरो की धारणागति में उनका कोइ प्रयोजन नही है ।



साधक अक्षर : अ, आ ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	3	मेष	अ	लभ्य		राक्षस	मेष	अन्त्य
नाम	विरुद्ध	5, 7, 9	वानर	त		देय	दे. म.	कन्या	अन्त्य
1	ऋषभदेव				3		अशुभ	शुभ	पादवेध
	आदिनाथ						अशुभ	शुभ	पादवेध
2	अजितनाथ					0.5	अशुभ	अशुभ	वेध
3	सम्भवनाथ	अशुभ					वैर	शुभ	–
4	अभिनन्दन	अशुभ				0.5	वैर	शुभ	–
5	सुमतिनाथ						स्व	शुभ	वेध
6	पद्मप्रभस्वामी	अशुभ			2.5	0.5	स्व	शत्रु	–
7	सुपार्श्वनाथ	अशुभ					स्व	सम	भवेध
8	चन्द्रप्रभस्वामी				1	0.5	वैर	प्रीति	–
9	सुविधिनाथ					0.5	स्व	शुभ	–
10	शीतलनाथ		कुवैर			0.5	अशुभ	शुभ	–
11	श्रेयान्सनाथ		कुवैर				वैर	श्रेष्ठ	वेध
12	वासुपूज्य				3		स्व	शुभ	–
13	विमलनाथ				3		अशुभ	श्रेष्ठ	–
14	अनन्तनाथ	अशुभ				2	वैर	श्रेष्ठ	वेध
15	धर्मनाथ		मैत्री	वैर		0.5	वैर	श्रेष्ठतर	–
16	शान्तिनाथ						अशुभ	स्वराशि	–
17	कुन्थुनाथ		स्व		0.5		स्व	अशुभ	एकभं
18	अरनाथ	अशुभ					वैर	श्रेष्ठ	वेध
19	मल्लिनाथ				2.5		वैर	स्वराशि	–
20	मुनिसुव्रत		कुवैर		2.5	0.5	वैर	श्रेष्ठ	वेध
	सुव्रत		कुवैर			2	वैर	श्रेष्ठ	वेध
21	नमिनाथ			वैर		2	वैर	स्वराशि	–
22	नेमिनाथ	अशुभ		वैर			स्व	शत्रु	–
23	पार्श्वनाथ	अशुभ			2.5		स्व	सम	भवेध
24	वर्धमान				3		अशुभ	शत्रु	–
	महावीरस्वामी				2.5		अशुभ	शत्रु	–
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
मेष	मंगल	वृश्चिक	क्षत्रिय	0				कृत्तिका	पूर्व

साधक अक्षर : इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	3	मेष	अ	लभ्य		राक्षस	वृषभ	अन्त्य
नाम	विरुद्ध	5, 7, 9	वानर	त		देय	दे. म.	धन	अन्त्य
1	ऋषभदेव				3		अशुभ	शत्रु	भवेध
	आदिनाथ						अशुभ	शत्रु	भवेध
2	अजितनाथ						अशुभ	स्वराशि	वेध
3	सम्भवनाथ	अशुभ				0.5	वैर	श्रेष्ठ	
4	अभिनन्दन	अशुभ					वैर	श्रेष्ठ	
5	सुमतिनाथ					0.5	स्व	श्रेष्ठ	वेध
6	पद्मप्रभस्वामी	अशुभ			2.5		स्व	शुभ	
7	सुपार्श्वनाथ	अशुभ				0.5	स्व	प्रीति	वेध
8	चन्द्रप्रभस्वामी				1		वैर	सम	
9	सुविधिनाथ					0.5	स्व	शत्रु	
10	शीतलनाथ		कुवैर			0.5	अशुभ	शत्रु	
11	श्रेयान्सनाथ		कुवैर			0.5	वैर	शुभ	वेध
12	वासुपूज्य				3		स्व	श्रेष्ठतर	
13	विमलनाथ				3		अशुभ	शुभ	
14	अनन्तनाथ	अशुभ					वैर	शुभ	वेध
15	धर्मनाथ		मैत्री	वैर		2	वैर	शुभ	
16	शान्तिनाथ					0.5	अशुभ	अशुभ	
17	कुन्थुनाथ		स्व		0.5		स्व	स्वराशि	एकभं
18	अरनाथ	अशुभ					वैर	शुभ	वेध
19	मल्लिनाथ				2.5		वैर	अशुभ	
20	मुनिसुव्रत		कुवैर		2.5		वैर	शुभ	वेध
	सुव्रत		कुवैर			0.5	वैर	शुभ	वेध
21	नमिनाथ			वैर		2	वैर	अशुभ	
22	नेमिनाथ	अशुभ		वैर		2	स्व	शुभ	
23	पार्श्वनाथ	अशुभ			2.5		स्व	प्रीति	वेध
24	वर्धमान				3		अशुभ	शुभ	
	महावीरस्वामी				2.5		अशुभ	शुभ	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
वृषभ	शुक्र	तुला	वैश्य	मेष				वृत्तिका	पूर्व

साधक अक्षर : ओ, औ ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	4	सर्प	अ	लभ्य		मनुष्य	वृषभ	अन्त्य
नाम	विरुद्ध	6, 8, 1	नकुल	त		देय	राक्षस	धन	अन्त्य
1	ऋषभदेव		कुवैर		3		स्व	शत्रु	भवेध
	आदिनाथ		कुवैर				स्व	शत्रु	भवेध
2	अजितनाथ		स्व				स्व	स्वराशि	एकभं
3	सम्भवनाथ		मैत्री			0.5	मध्यम	श्रेष्ठ	
4	अभिनन्दन						मध्यम	श्रेष्ठ	–
5	सुमतिनाथ	अशुभ				0.5	अशुभ	श्रेष्ठ	वेध
6	पद्मप्रभस्वामी				2.5		अशुभ	शुभ	–
7	सुपार्श्वनाथ					0.5	अशुभ	प्रीति	वेध
8	चन्द्रप्रभस्वामी	अशुभ			1		मध्यम	सम	–
9	सुविधिनाथ	अशुभ				0.5	अशुभ	शत्रु	–
10	शीतलनाथ					0.5	स्व	शत्रु	–
11	श्रेयान्सनाथ					0.5	मध्यम	शुभ	वेध
12	वासुपूज्य	अशुभ			3		अशुभ	श्रेष्ठतर	–
13	विमलनाथ	अशुभ			3		स्व	शुभ	–
14	अनन्तनाथ						मध्यम	शुभ	वेध
15	धर्मनाथ	अशुभ		वैर		2	मध्यम	शुभ	–
16	शान्तिनाथ					0.5	स्व	अशुभ	–
17	कुन्थुनाथ				0.5		अशुभ	स्वराशि	वेध
18	अरनाथ						मध्यम	शुभ	वेध
19	मल्लिनाथ	अशुभ			2.5		मध्यम	अशुभ	–
20	मुनिसुव्रत				2.5		मध्यम	शुभ	वेध
	सुव्रत					0.5	मध्यम	शुभ	वेध
21	नमिनाथ	अशुभ		वैर		2	मध्यम	अशुभ	–
22	नेमिनाथ			वैर		2	अशुभ	शुभ	–
23	पार्श्वनाथ				2.5		अशुभ	प्रीति	वेध
24	वर्धमान				3		स्व	शुभ	–
	महावीरस्वामी				2.5		स्व	शुभ	–
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
वृषभ	शुक्र	तुला	वैश्य	मेष				रोहिणी	पूर्व

साधक अक्षर : क, का, कि, की, क्ष ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	5	सर्प	क	लभ्य		देव	मिथुन	मध्य
नाम	विरुद्ध	7, 9, 2	नकुल	प		देय	राक्षस	कर्क,वृश्चिक	मध्य
1	ऋषभदेव		कुवैर			1.5	मध्यम	सम	
	आदिनाथ		कुवैर			0.5	मध्यम	सम	
2	अजितनाथ		मैत्री			0.5	मध्यम	श्रेष्ठ	
3	सम्भवनाथ		स्व			1	स्व	स्वराशि	एकभं
4	अभिनन्दन	अशुभ				0.5	स्व	स्वराशि	
5	सुमतिनाथ					1	वैर	शुभ	
6	पद्मप्रभस्वामी			वैर	2		वैर	श्रेष्ठतर	वेध
7	सुपार्श्वनाथ	अशुभ				1	वैर	शुभ	–
8	चन्द्रप्रभस्वामी					3.5	स्व	शत्रु	वेध
9	सुविधिनाथ					1	वैर	सम	
10	शीतलनाथ	अशुभ				1	मध्यम	सम	वेध
11	श्रेयान्सनाथ					1	स्व	प्रीति	–
12	वासुपूज्य					1.5	वैर	मध्यम	
13	विमलनाथ					1.5	मध्यम	श्रेष्ठ	वेध
14	अनन्तनाथ	अशुभ				0.5	स्व	श्रेष्ठ	–
15	धर्मनाथ				1.5		स्व	अशुभतर	वेध
16	शान्तिनाथ	अशुभ				1	मध्यम	शुभ	वेध
17	कुन्थुनाथ						वैर	श्रेष्ठ	–
18	अरनाथ	अशुभ				0.5	स्व	श्रेष्ठ	
19	मल्लिनाथ			वैर	2		स्व	शुभ	
20	मुनिसुव्रत			वैर	2		स्व	प्रीति	
	सुव्रत					1	स्व	प्रीति	
21	नमिनाथ				1.5		स्व	शुभ	
22	नेमिनाथ				1.5		वैर	श्रेष्ठतर	वेध
23	पार्श्वनाथ	अशुभ		वैर	2		वैर	शुभ	
24	वर्धमान					1.5	मध्यम	श्रेष्ठतर	
	महावीरस्वामी			वैर	2		मध्यम	श्रेष्ठतर	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
मिथुन	बुध	कन्या	शूद्र	सिंह, धन विना सर्व				मृगशिर्ष	पूर्व

साधक अक्षर : कु, कू ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	6	श्वान	क	लभ्य		मनुष्य	मिथुन	आद्य
नाम	विरुद्ध	8, 1, 3	हरिण	प		देय	राक्षस	कर्क,वृश्चिक	आद्य
1	ऋषभदेव	अशुभ				1.5	स्व	सम	
	आदिनाथ	अशुभ				0.5	स्व	सम	
2	अजितनाथ					0.5	स्व	श्रेष्ठ	
3	सम्भवनाथ					1	मध्यम	स्वराशि	
4	अभिनन्दन					0.5	मध्यम	स्वराशि	भवेध
5	सुमतिनाथ	अशुभ				1	अशुभ	शुभ	
6	पद्मप्रभस्वामी			वैर	2		अशुभ	श्रेष्ठतर	
7	सुपार्श्वनाथ					1	अशुभ	शुभ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी	अशुभ	वैर			3.5	मध्यम	शत्रु	
9	सुविधिनाथ	अशुभ	मैत्री			1	अशुभ	सम	वेध
10	शीतलनाथ					1	स्व	सम	
11	श्रेयान्सनाथ					1	मध्यम	प्रीति	
12	वासुपूज्य					1.5	अशुभ	मध्यम	वेध
13	विमलनाथ	अशुभ				1.5	स्व	श्रेष्ठ	
14	अनन्तनाथ					0.5	मध्यम	श्रेष्ठ	
15	धर्मनाथ	अशुभ			1.5		मध्यम	अशुभतर	
16	शान्तिनाथ					1	स्व	शुभ	
17	कुन्थुनाथ	अशुभ					अशुभ	श्रेष्ठ	
18	अरनाथ					0.5	मध्यम	श्रेष्ठ	
19	मल्लिनाथ	अशुभ		वैर	2		मध्यम	शुभ	वेध
20	मुनिसुव्रत			वैर	2		मध्यम	प्रीति	
	सुव्रत					1	मध्यम	प्रीति	
21	नमिनाथ	अशुभ			1.5		मध्यम	शुभ	वेध
22	नेमिनाथ				1.5		अशुभ	श्रेष्ठतर	
23	पार्श्वनाथ			वैर	2		अशुभ	शुभ	
24	वर्धमान	अशुभ				1.5	स्व	श्रेष्ठतर	भवेध
	महावीरस्वामी	अशुभ		वैर	2		स्व	श्रेष्ठतर	भवेध
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
मिथुन	बुध	कन्या	शूद्र	सिंह, धन विना सर्व				आर्द्रा	मध्यम

साधक अक्षर : के, कै, को, कौ ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	7	बिडाल	क	लभ्य		देव	मिथुन	आद्य
नाम	विरुद्ध	9, 2, 4	उंदिर	प		देय	राक्षस	कर्क,वृश्चिक	आद्य
1	ऋषभदेव					1.5	मध्यम	सम	
	आदिनाथ					0.5	मध्यम	सम	
2	अजितनाथ	अशुभ				0.5	मध्यम	श्रेष्ठ	
3	सम्भवनाथ					1	स्व	स्वराशि	
4	अभिनन्दन		स्व			0.5	स्व	स्वराशि	एकभं
5	सुमतिनाथ		वैर			1	वैर	शुभ	
6	पद्मप्रभस्वामी			वैर	2		वैर	श्रेष्ठतर	
7	सुपार्श्वनाथ					1	वैर	शुभ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी					3.5	स्व	शत्रु	
9	सुविधिनाथ					1	वैर	सम	वेध
10	शीतलनाथ	अशुभ				1	मध्यम	सम	
11	श्रेयान्सनाथ	अशुभ				1	स्व	प्रीति	
12	वासुपूज्य					1.5	वैर	मध्यम	वेध
13	विमलनाथ					1.5	मध्यम	श्रेष्ठ	
14	अनन्तनाथ	अशुभ				0.5	स्व	श्रेष्ठ	
15	धर्मनाथ				1.5		स्व	अशुभतर	
16	शान्तिनाथ	अशुभ				1	मध्यम	शुभ	
17	कुन्थुनाथ						वैर	श्रेष्ठ	
18	अरनाथ	अशुभ				0.5	स्व	श्रेष्ठ	
19	मल्लिनाथ			वैर	2		स्व	शुभ	वेध
20	मुनिसुव्रत	अशुभ		वैर	2		स्व	प्रीति	
	सुव्रत	अशुभ				1	स्व	प्रीति	
21	नमिनाथ				1.5		स्व	शुभ	वेध
22	नेमिनाथ				1.5		वैर	श्रेष्ठतर	
23	पार्श्वनाथ			वैर	2		वैर	शुभ	
24	वर्धमान					1.5	मध्यम	श्रेष्ठतर	वेध
	महावीरस्वामी			वैर	2		मध्यम	श्रेष्ठतर	वेध
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
मिथुन	बुध	कन्या	शूद्र	सिंह, धन विना सर्व				पुनर्वसू	मध्यम

साधक अक्षर : ख-१० (★खो, खौ : १ पादवेध, ७-१७-२३ भवेध)

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	4	वानर	क	लभ्य		देव	मकर	अन्त्य
नाम	विरुद्ध	6, 8, 1	मेष	प		देय	राक्षस	सिंह	अन्त्य
1	ऋषभदेव					1.5	मध्यम	अशुभ	भवेध★
	आदिनाथ					0.5	मध्यम	अशुभ	भवेध★
2	अजितनाथ					0.5	मध्यम	शुभ	वेध
3	सम्भवनाथ					1	स्व	प्रीति	
4	अभिनन्दन					0.5	स्व	प्रीति	
5	सुमतिनाथ	अशुभ				1	वैर	शत्रु	वेध
6	पद्मप्रभस्वामी			वैर	2		वैर	मध्यम	
7	सुपार्श्वनाथ					1	वैर	श्रेष्ठतर	वेध★
8	चन्द्रप्रभस्वामी	अशुभ				3.5	स्व	शुभ	
9	सुविधिनाथ	अशुभ				1	वैर	अशुभ	
10	शीतलनाथ		मैत्री			1	मध्यम	अशुभ	
11	श्रेयान्सनाथ		स्व			1	स्व	स्वराशि	एकभं
12	वासुपूज्य	अशुभ				1.5	वैर	श्रेष्ठ	
13	विमलनाथ	अशुभ				1.5	मध्यम	शुभ	
14	अनन्तनाथ					0.5	स्व	शुभ	वेध
15	धर्मनाथ	अशुभ	वैर		1.5		स्व	सम	
16	शान्तिनाथ					1	मध्यम	श्रेष्ठ	
17	कुन्थुनाथ		वैर				वैर	शुभ	वेध★
18	अरनाथ					0.5	स्व	शुभ	वेध
19	मल्लिनाथ	अशुभ		वैर	2		स्व	श्रेष्ठ	
20	मुनिसुव्रत		स्व	वैर	2		स्व	स्वराशि	एकभं
	सुव्रत		स्व			1	स्व	स्वराशि	एकभं
21	नमिनाथ	अशुभ			1.5		स्व	श्रेष्ठ	
22	नेमिनाथ				1.5		वैर	मध्यम	
23	पार्श्वनाथ			वैर	2		वैर	श्रेष्ठतर	वेध★
24	वर्धमान					1.5	मध्यम	मध्यम	
	महावीरस्वामी			वैर	2		मध्यम	मध्यम	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
मकर	शनि	कुंभ	वैश्य	कर्क, मीन				श्रवण	पश्चिम

ख - खा, योनि - नकुल, स्व - ११, २०; मैत्री - १०, वैर - सर्प - १५, १७

साधक अक्षर : ग, गा, गि, गी ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	5	सिंह	क	लभ्य		राक्षस	मकर	मध्य
नाम	विरुद्ध	7, 9, 2	हस्ति	प		देय	दे. म.	सिंह	मध्य
1	ऋषभदेव					1.5	अशुभ	अशुभ	
	आदिनाथ					0.5	अशुभ	अशुभ	
2	अजितनाथ					0.5	अशुभ	शुभ	
3	सम्भवनाथ					1	वैर	प्रीति	भवेध
4	अभिनन्दन	अशुभ				0.5	वैर	प्रीति	
5	सुमतिनाथ					1	स्व	शत्रु	
6	पद्मप्रभस्वामी			वैर	2		स्व	मध्यम	भवेध
7	सुपार्श्वनाथ	अशुभ				1	स्व	श्रेष्ठतर	
8	चन्द्रप्रभस्वामी					3.5	वैर	शुभ	वेध
9	सुविधिनाथ					1	स्व	अशुभ	
10	शीतलनाथ	अशुभ				1	अशुभ	अशुभ	वेध
11	श्रेयान्सनाथ					1	वैर	स्वराशि	
12	वासुपूज्य					1.5	स्व	श्रेष्ठ	
13	विमलनाथ					1.5	अशुभ	शुभ	वेध
14	अनन्तनाथ	अशुभ	वैर			0.5	वैर	शुभ	
15	धर्मनाथ				1.5		वैर	सम	वेध
16	शान्तिनाथ	अशुभ	वैर			1	अशुभ	श्रेष्ठ	वेध
17	कुन्थुनाथ						स्व	शुभ	
18	अरनाथ	अशुभ	वैर			0.5	वैर	शुभ	
19	मल्लिनाथ			वैर	2		वैर	श्रेष्ठ	
20	मुनिसुव्रत			वैर	2		वैर	स्वराशि	
	सुव्रत					1	वैर	स्वराशि	
21	नमिनाथ				1.5		वैर	श्रेष्ठ	
22	नेमिनाथ				1.5		स्व	मध्यम	भवेध
23	पार्श्वनाथ	अशुभ		वैर	2		स्व	श्रेष्ठतर	
24	वर्धमान					1.5	अशुभ	मध्यम	
	महावीरस्वामी			वैर	2		अशुभ	मध्यम	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
मकर	शनि	कुंभ	वैश्य	कर्क, मीन				धनिष्ठा	पश्चिम

साधक अक्षर : गु, गू, गे, गै ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	5	सिंह	क	लभ्य		राक्षस	कुंभ	मध्य
नाम	विरुद्ध	7, 9, 2	हस्ति	प		देय	दे. म.	कर्क	मध्य
1	ऋषभदेव					1.5	अशुभ	शुभ	
	आदिनाथ					0.5	अशुभ	शुभ	
2	अजितनाथ					0.5	अशुभ	श्रेष्ठतर	
3	सम्भवनाथ					1	वैर	मध्यम	वेध
4	अभिनन्दन					0.5	वैर	मध्यम	
5	सुमतिनाथ					1	स्व	सम	
6	पद्मप्रभस्वामी			वैर	2		स्व	प्रीति	वेध
7	सुपार्श्वनाथ					1	स्व	शुभ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी					3.5	वैर	श्रेष्ठ	वेध
9	सुविधिनाथ					1	स्व	शुभ	
10	शीतलनाथ					1	अशुभ	शुभ	वेध
11	श्रेयान्सनाथ					1	वैर	श्रेष्ठ	
12	वासुपूज्य					1.5	स्व	स्वराशि	
13	विमलनाथ					1.5	अशुभ	अशुभ	वेध
14	अनन्तनाथ	अशुभ	वैर			0.5	वैर	अशुभ	
15	धर्मनाथ				1.5		वैर	शत्रु	वेध
16	शान्तिनाथ	अशुभ	वैर			1	अशुभ	शुभ	वेध
17	कुन्थुनाथ						स्व	श्रेष्ठतर	
18	अरनाथ	अशुभ	वैर			0.5	वैर	अशुभ	
19	मल्लिनाथ			वैर	2		वैर	शुभ	
20	मुनिसुव्रत			वैर	2		वैर	श्रेष्ठ	
	सुव्रत					1	वैर	श्रेष्ठ	
21	नमिनाथ				1.5		वैर	शुभ	
22	नेमिनाथ				1.5		स्व	प्रीति	वेध
23	पार्श्वनाथ			वैर	2		स्व	शुभ	
24	वर्धमान					1.5	अशुभ	प्रीति	
	महावीरस्वामी			वैर	2		अशुभ	प्रीति	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
कुंभ	शनि	मकर	शूद्र	सिंह विना पशु, जलज, कीट				धनिष्ठा	पश्चिम

साधक अक्षर : गो, गौ ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	6	अश्व	क	लभ्य		राक्षस	कुंभ	आद्य
नाम	विरुद्ध	8, 1, 3	महिष	प		देय	दे. म.	कर्क	आद्य
1	ऋषभदेव	अशुभ				1.5	अशुभ	शुभ	
	आदिनाथ	अशुभ				0.5	अशुभ	शुभ	
2	अजितनाथ					0.5	अशुभ	श्रेष्ठतर	
3	सम्भवनाथ					1	वैर	मध्यम	
4	अभिनन्दन					0.5	वैर	मध्यम	वेध
5	सुमतिनाथ	अशुभ				1	स्व	सम	
6	पद्मप्रभस्वामी			वैर	2		स्व	प्रीति	
7	सुपार्श्वनाथ					1	स्व	शुभ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी	अशुभ				3.5	वैर	श्रेष्ठ	
9	सुविधिनाथ	अशुभ				1	स्व	शुभ	वेध
10	शीतलनाथ					1	अशुभ	शुभ	
11	श्रेयान्सनाथ					1	वैर	श्रेष्ठ	
12	वासुपूज्य		स्व			1.5	स्व	स्वराशि	एकभं
13	विमलनाथ	अशुभ				1.5	अशुभ	अशुभ	
14	अनन्तनाथ					0.5	वैर	अशुभ	
15	धर्मनाथ	अशुभ			1.5		वैर	शत्रु	
16	शान्तिनाथ		मैत्री			1	अशुभ	शुभ	
17	कुन्थुनाथ	अशुभ					स्व	श्रेष्ठतर	
18	अरनाथ					0.5	वैर	अशुभ	
19	मल्लिनाथ	अशुभ	मैत्री	वैर	2		वैर	शुभ	वेध
20	मुनिसुव्रत			वैर	2		वैर	श्रेष्ठ	
	सुव्रत					1	वैर	श्रेष्ठ	
21	नमिनाथ	अशुभ	मैत्री		1.5		वैर	शुभ	वेध
22	नेमिनाथ				1.5		स्व	प्रीति	
23	पार्श्वनाथ			वैर	2		स्व	शुभ	
24	वर्धमान	अशुभ				1.5	अशुभ	प्रीति	वेध
	महावीरस्वामी	अशुभ		वैर	2		अशुभ	प्रीति	वेध
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
कुंभ	शनि	मकर	शूद्र	सिंह विना पशु, जलज, कीट				शतभिषा	पश्चिम

साधक अक्षर : घ-१० सर्वस्वरसहितः, ङ-१० स्वरसहितः ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	6	श्वान	क	लभ्य		मनुष्य	मिथुन	आद्य
नाम	विरुद्ध	8, 1, 3	हरिण	प		देय	राक्षस	कर्क,वृश्चिक	आद्य
1	ऋषभदेव	अशुभ				1.5	स्व	सम	
	आदिनाथ	अशुभ				0.5	स्व	सम	
2	अजितनाथ					0.5	स्व	श्रेष्ठ	
3	सम्भवनाथ					1	मध्यम	स्वराशि	
4	अभिनन्दन					0.5	मध्यम	स्वराशि	वेध
5	सुमतिनाथ	अशुभ				1	अशुभ	शुभ	
6	पद्मप्रभस्वामी			वैर	2		अशुभ	श्रेष्ठतर	
7	सुपार्श्वनाथ					1	अशुभ	शुभ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी	अशुभ	वैर			3.5	मध्यम	शत्रु	
9	सुविधिनाथ	अशुभ	मैत्री			1	अशुभ	सम	वेध
10	शीतलनाथ					1	स्व	सम	
11	श्रेयान्सनाथ					1	मध्यम	प्रीति	
12	वासुपूज्य					1.5	अशुभ	मध्यम	वेध
13	विमलनाथ	अशुभ				1.5	स्व	श्रेष्ठ	
14	अनन्तनाथ					0.5	मध्यम	श्रेष्ठ	
15	धर्मनाथ	अशुभ			1.5		मध्यम	अशुभतर	
16	शान्तिनाथ					1	स्व	शुभ	
17	कुन्थुनाथ	अशुभ					अशुभ	श्रेष्ठ	
18	अरनाथ					0.5	मध्यम	श्रेष्ठ	
19	मल्लिनाथ	अशुभ		वैर	2		मध्यम	शुभ	वेध
20	मुनिसुव्रत			वैर	2		मध्यम	प्रीति	
	सुव्रत					1	मध्यम	प्रीति	
21	नमिनाथ	अशुभ			1.5		मध्यम	शुभ	वेध
22	नेमिनाथ				1.5		अशुभ	श्रेष्ठतर	
23	पार्श्वनाथ			वैर	2		अशुभ	शुभ	
24	वर्धमान	अशुभ				1.5	स्व	श्रेष्ठतर	वेध
	महावीरस्वामी	अशुभ		वैर	2		स्व	श्रैष्ठतर	वेध
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
मिथुन	बुध	कन्या	शूद्र	सिंह, धन विना सर्व				आर्द्रा	मध्यम

साधक अक्षर : च, चा, चि, ची ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	9	हस्ति	च	लभ्य		देव	मीन	अन्त्य
नाम	विरुद्ध	2, 4, 6	सिंह	य		देय	राक्षस	तुला	अन्त्य
1	ऋषभदेव			वैर		2	मध्यम	श्रेष्ठतर	भवेध
	आदिनाथ					1	मध्यम	श्रेष्ठतर	भवेध
2	अजितनाथ	अशुभ				1	मध्यम	शुभ	वेध
3	सम्भवनाथ					1.5	स्व	श्रेष्ठ	
4	अभिनन्दन					1	स्व	श्रेष्ठ	
5	सुमतिनाथ					1.5	वैर	प्रीति	वेध
6	पद्मप्रभस्वामी				1.5		वैर	सम	
7	सुपार्श्वनाथ					1.5	वैर	शत्रु	वेध
8	चन्द्रप्रभस्वामी				0	0	स्व	शुभ	
9	सुविधिनाथ					1.5	वैर	श्रेष्ठतर	
10	शीतलनाथ	अशुभ				1.5	मध्यम	श्रेष्ठतर	
11	श्रेयान्सनाथ	अशुभ				1.5	स्व	शुभ	वेध
12	वासुपूज्य	अशुभ		वैर		2	वैर	अशुभ	
13	विमलनाथ			वैर		2	मध्यम	स्वराशि	
14	अनन्तनाथ		स्व			1	स्व	स्वराशि	एकभं
15	धर्मनाथ				1		स्व	मध्यम	
16	शान्तिनाथ	अशुभ	स्व			1.5	मध्यम	श्रेष्ठ	
17	कुन्थुनाथ				3.5		वैर	शुभ	वेध
18	अरनाथ		स्व			1	स्व	स्वराशि	एकभं
19	मल्लिनाथ				1.5		स्व	श्रेष्ठ	
20	मुनिसुव्रत	अशुभ			1.5		स्व	शुभ	वेध
	सुव्रत	अशुभ				1.5	स्व	शुभ	वेध
21	नमिनाथ				1		स्व	श्रेष्ठ	
22	नेमिनाथ				1		वैर	सम	
23	पार्श्वनाथ				1.5		वैर	शत्रु	वेध
24	वर्धमान			वैर		2	मध्यम	सम	
	महावीरस्वामी				1.5		मध्यम	सम	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
मीन	गुरु	धन	ब्राह्मण	०				रेवती	पूर्व

साधक अक्षर : चु, चू, चे, चै, चो, चौ ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	1	अश्व	च	लभ्य		देव	मेष	आद्य
नाम	विरुद्ध	3, 5, 7	महिष	य		देय	राक्षस	कन्या	आद्य
1	ऋषभदेव	अशुभ		वैर		2	मध्यम	शुभ	
	आदिनाथ	अशुभ				1	मध्यम	शुभ	
2	अजितनाथ					1	मध्यम	अशुभ	
3	सम्भवनाथ	अशुभ				1.5	स्व	शुभ	
4	अभिनन्दन	अशुभ				1	स्व	शुभ	वेध
5	सुमतिनाथ					1.5	वैर	शुभ	
6	पद्मप्रभस्वामी	अशुभ			1.5		वैर	शत्रु	
7	सुपार्श्वनाथ	अशुभ				1.5	वैर	सम	
8	चन्द्रप्रभस्वामी				0	0	स्व	प्रीति	
9	सुविधिनाथ					1.5	वैर	शुभ	वेध
10	शीतलनाथ					1.5	मध्यम	शुभ	
11	श्रेयान्सनाथ					1.5	स्व	श्रेष्ठ	
12	वासुपूज्य		मैत्री	वैर		2	वैर	शुभ	वेध
13	विमलनाथ			वैर		2	मध्यम	श्रेष्ठ	
14	अनन्तनाथ					1	स्व	श्रेष्ठ	
15	धर्मनाथ				1		स्व	श्रेष्ठतर	
16	शान्तिनाथ					1.5	मध्यम	स्वराशि	
17	कुन्थुनाथ	अशुभ			3.5		वैर	अशुभ	
18	अरनाथ					1	स्व	श्रेष्ठ	
19	मल्लिनाथ		स्व		1.5		स्व	स्वराशि	एकभं
20	मुनिसुव्रत				1.5		स्व	श्रेष्ठ	
	सुव्रत					1.5	स्व	श्रेष्ठ	
21	नमिनाथ		स्व		1		स्व	स्वराशि	एकभं
22	नेमिनाथ	अशुभ			1		वैर	शत्रु	
23	पार्श्वनाथ	अशुभ			1.5		वैर	सम	
24	वर्धमान	अशुभ		वैर		2	मध्यम	शत्रु	वेध
	महावीरस्वामी	अशुभ			1.5		मध्यम	शत्रु	वेध
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
मेष	मंगल	वृश्चिक	क्षत्रिय	–				अश्विनी	पूर्व

साधक अक्षर : छ-१० ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	6	श्वान	च	लभ्य		मनुष्य	मिथुन	आद्य
नाम	विरुद्ध	8, 1, 3	हरिण	य		देय	राक्षस	कर्क,वृश्चिक	आद्य
1	ऋषभदेव	अशुभ		वैर		2	स्व	सम	
	आदिनाथ	अशुभ				1	स्व	सम	
2	अजितनाथ					1	स्व	श्रेष्ठ	
3	सम्भवनाथ					1.5	मध्यम	स्वराशि	
4	अभिनन्दन					1	मध्यम	स्वराशि	वेध
5	सुमतिनाथ	अशुभ				1.5	अशुभ	शुभ	
6	पद्मप्रभस्वामी				1.5		अशुभ	श्रेष्ठतर	
7	सुपार्श्वनाथ					1.5	अशुभ	शुभ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी	अशुभ	वैर		0	0	मध्यम	शत्रु	
9	सुविधिनाथ	अशुभ	मैत्री			1.5	अशुभ	सम	वेध
10	शीतलनाथ					1.5	स्व	सम	
11	श्रेयान्सनाथ					1.5	मध्यम	प्रीति	
12	वासुपूज्य			वैर		2	अशुभ	मध्यम	वेध
13	विमलनाथ	अशुभ		वैर		2	स्व	श्रेष्ठ	
14	अनन्तनाथ					1	मध्यम	श्रेष्ठ	
15	धर्मनाथ	अशुभ			1		मध्यम	अशुभतर	
16	शान्तिनाथ					1.5	स्व	शुभ	
17	कुन्थुनाथ	अशुभ			3.5		अशुभ	श्रेष्ठ	
18	अरनाथ					1	मध्यम	श्रेष्ठ	
19	मल्लिनाथ	अशुभ			1.5		मध्यम	शुभ	वेध
20	मुनिसुव्रत				1.5		मध्यम	प्रीति	
	सुव्रत					1.5	मध्यम	प्रीति	
21	नमिनाथ	अशुभ			1		मध्यम	शुभ	वेध
22	नेमिनाथ				1		अशुभ	श्रेष्ठतर	
23	पार्श्वनाथ				1.5		अशुभ	शुभ	
24	वर्धमान	अशुभ		वैर		2	स्व	श्रेष्ठतर	वेध
	महावीरस्वामी	अशुभ			1.5		स्व	श्रेष्ठतर	वेध
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
मिथुन	बुध	कन्या	शूद्र	सिंह, धन विना सर्व				आर्द्रा	मध्य

साधक अक्षर : ज-१० । (जु जू जे जै जो जौ अभिजित्) (★ज जि : १-भवेध)

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	3	नकुल	च	लभ्य		मनुष्य	मकर	अन्त्य
नाम	विरुद्ध	5, 7, 9	सर्प	य		देय	राक्षस	सिंह	अन्त्य
1	ऋषभदेव		स्व	वैर		2	स्व	अशुभ	एकभं★
	आदिनाथ		स्व			1	स्व	अशुभ	एकभं★
2	अजितनाथ		वैर			1	स्व	शुभ	वेध
3	सम्भवनाथ	अशुभ	वैर			1.5	मध्यम	प्रीति	
4	अभिनन्दन	अशुभ				1	मध्यम	प्रीति	
5	सुमतिनाथ					1.5	अशुभ	शत्रु	वेध
6	पद्मप्रभस्वामी	अशुभ			1.5		अशुभ	मध्यम	
7	सुपार्श्वनाथ	अशुभ				1.5	अशुभ	श्रेष्ठतर	वेध
8	चन्द्रप्रभस्वामी				0	0	मध्यम	शुभ	
9	सुविधिनाथ					1.5	अशुभ	अशुभ	
10	शीतलनाथ					1.5	स्व	अशुभ	
11	श्रेयान्सनाथ					1.5	मध्यम	स्वराशि	वेध
12	वासुपूज्य			वैर		2	अशुभ	श्रेष्ठ	
13	विमलनाथ			वैर		2	स्व	शुभ	
14	अनन्तनाथ	अशुभ				1	मध्यम	शुभ	वेध
15	धर्मनाथ				1		मध्यम	सम	
16	शान्तिनाथ					1.5	स्व	श्रेष्ठ	
17	कुन्थुनाथ				3.5		अशुभ	शुभ	वेध
18	अरनाथ	अशुभ				1	मध्यम	शुभ	वेध
19	मल्लिनाथ				1.5		मध्यम	श्रेष्ठ	
20	मुनिसुव्रत				1.5		मध्यम	स्वराशि	वेध
	सुव्रत					1.5	मध्यम	स्वराशि	वेध
21	नमिनाथ				1		मध्यम	श्रेष्ठ	
22	नेमिनाथ	अशुभ			1		अशुभ	मध्यम	
23	पार्श्वनाथ	अशुभ			1.5		अशुभ	श्रेष्ठतर	वेध
24	वर्धमान			वैर		2	स्व	मध्यम	
	महावीरस्वामी				1.5		स्व	मध्यम	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
मकर	शनि	कुंभ	वैश्य	कर्क, मीन				उत्तराषाढा	पश्चिम

साधक अक्षर : झ - १० ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	8	गौ	च	लभ्य		मनुष्य	मीन	मध्य
नाम	विरुद्ध	1, 3, 5	व्याघ्र	य		देय	राक्षस	तुला	मध्य
1	ऋषभदेव	अशुभ		वैर		2	स्व	श्रेष्ठतर	
	आदिनाथ	अशुभ				1	स्व	श्रेष्ठतर	
2	अजितनाथ					1	स्व	शुभ	
3	सम्भवनाथ	अशुभ				1.5	मध्यम	श्रेष्ठ	भवेध
4	अभिनन्दन					1	मध्यम	श्रेष्ठ	
5	सुमतिनाथ	अशुभ				1.5	अशुभ	प्रीति	
6	पद्मप्रभस्वामी	अशुभ	कुवैर		1.5		अशुभ	सम	भवेध
7	सुपार्श्वनाथ		कुवैर			1.5	अशुभ	शत्रु	
8	चन्द्रप्रभस्वामी				0	0	मध्यम	शुभ	वेध
9	सुविधिनाथ	अशुभ				1.5	अशुभ	श्रेष्ठतर	
10	शीतलनाथ					1.5	स्व	श्रेष्ठतर	वेध
11	श्रेयान्सनाथ					1.5	मध्यम	शुभ	
12	वासुपूज्य			वैर		2	अशुभ	अशुभ	
13	विमलनाथ		स्व	वैर		2	स्व	स्वराशि	एकभं
14	अनन्तनाथ					1	मध्यम	स्वराशि	
15	धर्मनाथ				1		मध्यम	मध्यम	वेध
16	शान्तिनाथ					1.5	स्व	श्रेष्ठ	वेध
17	कुन्थुनाथ	अशुभ			3.5		अशुभ	शुभ	
18	अरनाथ					1	मध्यम	स्वराशि	
19	मल्लिनाथ	अशुभ			1.5		मध्यम	श्रेष्ठ	
20	मुनिसुव्रत				1.5		मध्यम	शुभ	
	सुव्रत					1.5	मध्यम	शुभ	
21	नमिनाथ	अशुभ			1		मध्यम	श्रेष्ठ	
22	नेमिनाथ	अशुभ	कुवैर		1		अशुभ	सम	भवेध
23	पार्श्वनाथ		कुवैर		1.5		अशुभ	शत्रु	
24	वर्धमान	अशुभ	मैत्री	वैर		2	स्व	सम	
	महावीरस्वामी	अशुभ	मैत्री		1.5		स्व	सम	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
मीन	गुरु	धन	ब्राह्मण	०				उ.भाद्रपद	पश्चिम

साधक अक्षर : ट, टा, टि, टी, टु, टू । (★ट - ३, ६, २२ भवेध)

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	2	उंदिर	ट	लभ्य		मनुष्य	सिंह	मध्य
नाम	विरुद्ध	4, 6, 8	बिडाल	श		देय	राक्षस	मकर	मध्य
1	ऋषभदेव					2.5	स्व	शुभ	
	आदिनाथ				2.5		स्व	शुभ	
2	अजितनाथ	अशुभ			2.5		स्व	श्रेष्ठ	
3	सम्भवनाथ			वैर	2		मध्यम	शुभ	
4	अभिनन्दन		कुवैर		2.5		मध्यम	शुभ	वेध★
5	सुमतिनाथ		मैत्री	वैर	2		अशुभ	स्वराशि	
6	पद्मप्रभस्वामी					3	अशुभ	शुभ	
7	सुपार्श्वनाथ			वैर	2		अशुभ	शुभ	वेध★
8	चन्द्रप्रभस्वामी	अशुभ				0.5	मध्यम	श्रेष्ठतर	
9	सुविधिनाथ			वैर	2		अशुभ	शुभ	वेध
10	शीतलनाथ			वैर	2		स्व	शुभ	
11	श्रेयान्सनाथ	अशुभ		वैर	2		मध्यम	शत्रु	वेध
12	वासुपूज्य	अशुभ				2.5	अशुभ	सम	
13	विमलनाथ	अशुभ				2.5	स्व	प्रीति	
14	अनन्तनाथ				2.5		मध्यम	प्रीति	वेध
15	धर्मनाथ	अशुभ			0.5		मध्यम	श्रेष्ठ	
16	शान्तिनाथ			वैर	2		स्व	शुभ	वेध
17	कुन्थुनाथ					1	अशुभ	श्रेष्ठ	वेध
18	अरनाथ				2.5		मध्यम	प्रीति	
19	मल्लिनाथ					3	मध्यम	शुभ	
20	मुनिसुव्रत	अशुभ				3	मध्यम	शत्रु	
	सुव्रत	अशुभ		वैर	2		मध्यम	शत्रु	
21	नमिनाथ				0.5		मध्यम	शुभ	
22	नेमिनाथ				0.5		अशुभ	शुभ	
23	पार्श्वनाथ					3	अशुभ	शुभ	वेध★
24	वर्धमान					2.5	स्व	शुभ	
	महावीरस्वामी					3	स्व	शुभ	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
सिंह	सूर्य	–	क्षत्रिय	धन, वृश्चिक विना सर्व				पू.फाल्गुनी	मध्य

साधक अक्षर : टे, टै ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	3	गौ	ट	लभ्य		मनुष्य	सिंह	आद्य
नाम	विरुद्ध	5, 7, 9	व्याघ्र	श		देय	राक्षस	मकर	आद्य
1	ऋषभदेव					2.5	स्व	शुभ	
	आदिनाथ				2.5		स्व	शुभ	
2	अजितनाथ				2.5		स्व	श्रेष्ठ	
3	सम्भवनाथ	अशुभ		वैर	2		मध्यम	शुभ	
4	अभिनन्दन	अशुभ			2.5		मध्यम	शुभ	भवेध
5	सुमतिनाथ			वैर	2		अशुभ	स्वराशि	
6	पद्मप्रभस्वामी	अशुभ	कुवैर			3	अशुभ	शुभ	
7	सुपार्श्वनाथ	अशुभ	कुवैर	वैर	2		अशुभ	शुभ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी					0.5	मध्यम	श्रेष्ठतर	
9	सुविधिनाथ			वैर	2		अशुभ	शुभ	वेध
10	शीतलनाथ			वैर	2		स्व	शुभ	
11	श्रेयान्सनाथ			वैर	2		मध्यम	शत्रु	
12	वासुपूज्य					2.5	अशुभ	सम	वेध
13	विमलनाथ		मैत्री			2.5	स्व	प्रीति	
14	अनन्तनाथ	अशुभ			2.5		मध्यम	प्रीति	
15	धर्मनाथ				0.5		मध्यम	श्रेष्ठ	
16	शान्तिनाथ			वैर	2		स्व	शुभ	
17	कुन्थुनाथ					1	अशुभ	श्रेष्ठ	
18	अरनाथ	अशुभ			2.5		मध्यम	प्रीति	
19	मल्लिनाथ					3	मध्यम	शुभ	वेध
20	मुनिसुव्रत					3	मध्यम	शत्रु	
	सुव्रत			वैर	2		मध्यम	शत्रु	
21	नमिनाथ				0.5		मध्यम	शुभ	वेध
22	नेमिनाथ	अशुभ	कुवैर		0.5		अशुभ	शुभ	
23	पार्श्वनाथ	अशुभ	कुवैर			3	अशुभ	शुभ	
24	वर्धमान		स्व			2.5	स्व	शुभ	एकभं
	महावीरस्वामी		स्व			3	स्व	शुभ	एकभं
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
सिंह	सूर्य	–	क्षत्रिय	धन, वृश्चिक विना सर्व				उ.फाल्गुनी	मध्यम

साधक अक्षर : टो, टौ ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	3	गौ	ट	लभ्य		मनुष्य	कन्या	आद्य
नाम	विरुद्ध	5, 7, 9	व्याघ्र	श		देय	राक्षस	मेष	आद्य
1	ऋषभदेव					2.5	स्व	श्रेष्ठ	
	आदिनाथ				2.5		स्व	श्रेष्ठ	
2	अजितनाथ				2.5		स्व	शुभ	
3	सम्भवनाथ	अशुभ		वैर	2		मध्यम	श्रेष्ठतर	
4	अभिनन्दन	अशुभ			2.5		मध्यम	श्रेष्ठतर	वेध
5	सुमतिनाथ			वैर	2		अशुभ	शुभ	
6	पद्मप्रभस्वामी	अशुभ	कुवैर			3	अशुभ	स्वराशि	
7	सुपार्श्वनाथ	अशुभ	कुवैर	वैर	2		अशुभ	श्रेष्ठ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी					0.5	मध्यम	शुभ	
9	सुविधिनाथ			वैर	2		अशुभ	श्रेष्ठ	वेध
10	शीतलनाथ			वैर	2		स्व	श्रेष्ठ	
11	श्रेयान्सनाथ			वैर	2		मध्यम	मध्यम	
12	वासुपूज्य					2.5	अशुभ	प्रीति	वेध
13	विमलनाथ		मैत्री			2.5	स्व	सम	
14	अनन्तनाथ	अशुभ			2.5		मध्यम	सम	
15	धर्मनाथ				0.5		मध्यम	शुभ	
16	शान्तिनाथ			वैर	2		स्व	शत्रु	
17	कुन्थुनाथ					1	अशुभ	शुभ	
18	अरनाथ	अशुभ			2.5		मध्यम	सम	
19	मल्लिनाथ					3	मध्यम	शत्रु	वेध
20	मुनिसुव्रत					3	मध्यम	मध्यम	
	सुव्रत			वैर	2		मध्यम	मध्यम	
21	नमिनाथ				0.5		मध्यम	शत्रु	वेध
22	नेमिनाथ	अशुभ	कुवैर		0.5		अशुभ	स्वराशि	
23	पार्श्वनाथ	अशुभ	कुवैर			3	अशुभ	श्रेष्ठ	
24	वर्धमान		स्व			2.5	स्व	स्वराशि	एकभं
	महावीरस्वामी		स्व			3	स्व	स्वराशि	एकभं
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
कन्या	बुध	मिथुन	वैश्य	सिंह, धन विना सर्व				उ.फाल्गुनी	मध्यम

साधक अक्षर : ठ-१० ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	4	महिष	ट	लभ्य		देव	कन्या	आद्य
नाम	विरुद्ध	6, 8, 1	अश्व	श		देय	राक्षस	मेष	आद्य
1	ऋषभदेव					2.5	मध्यम	श्रेष्ठ	
	आदिनाथ				2.5		मध्यम	श्रेष्ठ	
2	अजितनाथ				2.5		मध्यम	शुभ	
3	सम्भवनाथ			वैर	2		स्व	श्रेष्ठतर	
4	अभिनन्दन				2.5		स्व	श्रेष्ठतर	भवेध
5	सुमतिनाथ	अशुभ		वैर	2		वैर	शुभ	
6	पद्मप्रभस्वामी					3	वैर	स्वराशि	
7	सुपार्श्वनाथ			वैर	2		वैर	श्रेष्ठ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी	अशुभ				0.5	स्व	शुभ	
9	सुविधिनाथ	अशुभ		वैर	2		वैर	श्रेष्ठ	वेध
10	शीतलनाथ			वैर	2		मध्यम	श्रेष्ठ	
11	श्रेयान्सनाथ			वैर	2		स्व	मध्यम	
12	वासुपूज्य	अशुभ	वैर			2.5	वैर	प्रीति	वेध
13	विमलनाथ	अशुभ				2.5	मध्यम	सम	
14	अनन्तनाथ				2.5		स्व	सम	
15	धर्मनाथ	अशुभ			0.5		स्व	शुभ	
16	शान्तिनाथ			वैर	2		मध्यम	शत्रु	
17	कुन्थुनाथ					1	वैर	शुभ	
18	अरनाथ				2.5		स्व	सम	
19	मल्लिनाथ	अशुभ	वैर			3	स्व	शत्रु	वेध
20	मुनिसुव्रत					3	स्व	मध्यम	
	सुव्रत			वैर	2		स्व	मध्यम	
21	नमिनाथ	अशुभ	वैर		0.5		स्व	शत्रु	वेध
22	नेमिनाथ				0.5		वैर	स्वराशि	
23	पार्श्वनाथ					3	वैर	श्रेष्ठ	
24	वर्धमान					2.5	मध्यम	स्वराशि	भवेध
	महावीरस्वामी					3	मध्यम	स्वराशि	भवेध
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
कन्या	बुध	मिथुन	वैश्य	सिंह, धन विना सर्व				हस्त	मध्यम

साधक अक्षर : ड, डा ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	8	मेष	ट	लभ्य		देव	कर्क	मध्य
नाम	विरुद्ध	1, 3, 5	वानर	श		देय	राक्षस	मिथुन,कुंभ	मध्य
1	ऋषभदेव	अशुभ				2.5	मध्यम	प्रीति	
	आदिनाथ	अशुभ			2.5		मध्यम	प्रीति	
2	अजितनाथ				2.5		मध्यम	शुभ	
3	सम्भवनाथ	अशुभ		वैर	2		स्व	अशुभतर	भवेध
4	अभिनन्दन				2.5		स्व	अशुभतर	
5	सुमतिनाथ	अशुभ		वैर	2		वैर	श्रेष्ठ	
6	पद्मप्रभस्वामी	अशुभ				3	वैर	प्रीति	भवेध
7	सुपार्श्वनाथ			वैर	2		वैर	श्रेष्ठ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी					0.5	स्व	मध्यम	वेध
9	सुविधिनाथ	अशुभ		वैर	2		वैर	प्रीति	
10	शीतलनाथ		कुवैर	वैर	2		मध्यम	प्रीति	वेध
11	श्रेयान्सनाथ		कुवैर	वैर	2		स्व	सम	
12	वासुपूज्य					2.5	वैर	शत्रु	
13	विमलनाथ					2.5	मध्यम	मध्यम	वेध
14	अनन्तनाथ				2.5		स्व	मध्यम	
15	धर्मनाथ		स्व		0.5		स्व	स्वराशि	एकभं
16	शान्तिनाथ			वैर	2		मध्यम	श्रेष्ठतर	वेध
17	कुन्थुनाथ	अशुभ	मैत्री			1	वैर	शुभ	
18	अरनाथ				2.5		स्व	मध्यम	
19	मल्लिनाथ	अशुभ				3	स्व	श्रेष्ठतर	
20	मुनिसुव्रत		कुवैर			3	स्व	सम	
	सुव्रत		कुवैर	वैर	2		स्व	सम	
21	नमिनाथ	अशुभ			0.5		स्व	श्रेष्ठतर	
22	नेमिनाथ	अशुभ			0.5		वैर	प्रीति	भवेध
23	पार्श्वनाथ					3	वैर	श्रेष्ठ	
24	वर्धमान	अशुभ				2.5	मध्यम	प्रीति	
	महावीरस्वामी	अशुभ				3	मध्यम	प्रीति	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
कर्क	चंद्र	–	ब्राह्मण	–				पुष्य	मध्यम

साधक अक्षर : डि, डी, डु, डू, डे, डै, डो, डौ । (*डि, डी : १ - पादवेध, ७-१७-२३ भवेध)

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	9	बिडाल	ट	लभ्य		राक्षस	कर्क	अन्त्य
नाम	विरुद्ध	2, 4, 6	उंदिर	श		देय	दे. म.	मिथुन,कुंभ	अन्त्य
1	ऋषभदेव					2.5	अशुभ	प्रीति	भवेध*
	आदिनाथ				2.5		अशुभ	प्रीति	भवेध*
2	अजितनाथ	अशुभ			2.5		अशुभ	शुभ	वेध
3	सम्भवनाथ			वैर	2		वैर	अशुभतर	
4	अभिनन्दन		स्व		2.5		वैर	अशुभतर	
5	सुमतिनाथ		कुवैर	वैर	2		स्व	श्रेष्ठ	वेध
6	पद्मप्रभस्वामी					3	स्व	प्रीति	
7	सुपार्श्वनाथ			वैर	2		स्व	श्रेष्ठ	वेध*
8	चन्द्रप्रभस्वामी					0.5	वैर	मध्यम	
9	सुविधिनाथ			वैर	2		स्व	प्रीति	
10	शीतलनाथ	अशुभ		वैर	2		अशुभ	प्रीति	
11	श्रेयान्सनाथ	अशुभ		वैर	2		वैर	सम	वेध
12	वासुपूज्य	अशुभ				2.5	स्व	शत्रु	
13	विमलनाथ					2.5	अशुभ	मध्यम	
14	अनन्तनाथ				2.5		वैर	मध्यम	वेध
15	धर्मनाथ				0.5		वैर	स्वराशि	
16	शान्तिनाथ	अशुभ		वैर	2		अशुभ	श्रेष्ठतर	
17	कुन्थुनाथ					1	स्व	शुभ	वेध*
18	अरनाथ				2.5		वैर	मध्यम	वेध
19	मल्लिनाथ					3	वैर	श्रेष्ठतर	
20	मुनिसुव्रत	अशुभ				3	वैर	सम	वेध
	सुव्रत	अशुभ		वैर	2		वैर	सम	वेध
21	नमिनाथ				0.5		वैर	श्रेष्ठतर	
22	नेमिनाथ				0.5		स्व	प्रीति	
23	पार्श्वनाथ					3	स्व	श्रेष्ठ	वेध*
24	वर्धमान					2.5	अशुभ	प्रीति	
	महावीरस्वामी					3	अशुभ	प्रीति	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
कर्क	चंद्र	०	ब्राह्मण	—				अश्लेषा	मध्यम

साधक अक्षर : ढ - १० ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	2	वानर	ट	लभ्य		मनुष्य	धन	आद्य
नाम	विरुद्ध	4, 6, 8	मेष	श		देय	राक्षस	वृषभ	आद्य
1	ऋषभदेव					2.5	स्व	स्वराशि	
	आदिनाथ				2.5		स्व	स्वराशि	
2	अजितनाथ	अशुभ			2.5		स्व	शत्रु	
3	सम्भवनाथ			वैर	2		मध्यम	सम	भवेध
4	अभिनन्दन				2.5		मध्यम	सम	
5	सुमतिनाथ			वैर	2		अशुभ	शुभ	
6	पद्मप्रभस्वामी					3	अशुभ	श्रेष्ठ	भवेध
7	सुपार्श्वनाथ			वैर	2		अशुभ	शुभ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी	अशुभ				0.5	मध्यम	श्रेष्ठ	वेध
9	सुविधिनाथ			वैर	2		अशुभ	स्वराशि	
10	शीतलनाथ		स्व	वैर	2		स्व	स्वराशि	एकभं
11	श्रेयान्सनाथ	अशुभ	मैत्री	वैर	2		मध्यम	अशुभ	
12	वासुपूज्य	अशुभ				2.5	अशुभ	शुभ	
13	विमलनाथ	अशुभ				2.5	स्व	श्रेष्ठतर	वेध
14	अनन्तनाथ				2.5		मध्यम	श्रेष्ठतर	
15	धर्मनाथ	अशुभ	वैर		0.5		मध्यम	प्रीति	वेध
16	शान्तिनाथ			वैर	2		स्व	शुभ	वेध
17	कुन्थुनाथ		वैर			1	अशुभ	शत्रु	
18	अरनाथ				2.5		मध्यम	श्रेष्ठतर	
19	मल्लिनाथ					3	मध्यम	शुभ	
20	मुनिसुव्रत	अशुभ	मैत्री			3	मध्यम	अशुभ	
	सुव्रत	अशुभ	मैत्री	वैर	2		मध्यम	अशुभ	
21	नमिनाथ				0.5		मध्यम	शुभ	
22	नेमिनाथ				0.5		अशुभ	श्रेष्ठ	वेध
23	पार्श्वनाथ					3	अशुभ	शुभ	
24	वर्धमान					2.5	स्व	श्रेष्ठ	
	महावीरस्वामी					3	स्व	श्रेष्ठ	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
धन	गुरु	मीन	क्षत्रिय	सर्व				पूर्वाषाढा	पश्चिम

साधक अक्षर : ण - १० ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	4	महिष	ट	लभ्य		देव	कन्या	आद्य
नाम	विरुद्ध	6, 8, 1	अश्व	श		देय	राक्षस	मेष	आद्य
1	ऋषभदेव					2.5	मध्यम	श्रेष्ठ	
	आदिनाथ				2.5		मध्यम	श्रेष्ठ	
2	अजितनाथ				2.5		मध्यम	शुभ	
3	सम्भवनाथ			वैर	2		स्व	श्रेष्ठतर	
4	अभिनन्दन				2.5		स्व	श्रेष्ठतर	वेध
5	सुमतिनाथ	अशुभ		वैर	2		वैर	शुभ	
6	पद्मप्रभस्वामी					3	वैर	स्वराशि	
7	सुपार्श्वनाथ			वैर	2		वैर	श्रेष्ठ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी	अशुभ				0.5	स्व	शुभ	
9	सुविधिनाथ	अशुभ		वैर	2		वैर	श्रेष्ठ	वेध
10	शीतलनाथ			वैर	2		मध्यम	श्रेष्ठ	
11	श्रेयान्सनाथ			वैर	2		स्व	मध्यम	
12	वासुपूज्य	अशुभ	वैर			2.5	वैर	प्रीति	वेध
13	विमलनाथ	अशुभ				2.5	मध्यम	सम	
14	अनन्तनाथ				2.5		स्व	सम	
15	धर्मनाथ	अशुभ			0.5		स्व	शुभ	
16	शान्तिनाथ			वैर	2		मध्यम	शत्रु	
17	कुन्थुनाथ					1	वैर	शुभ	
18	अरनाथ				2.5		स्व	सम	
19	मल्लिनाथ	अशुभ	वैर			3	स्व	शत्रु	वेध
20	मुनिसुव्रत					3	स्व	मध्यम	
	सुव्रत			वैर	2		स्व	मध्यम	
21	नमिनाथ	अशुभ	वैर		0.5		स्व	शत्रु	वेध
22	नेमिनाथ				0.5		वैर	स्वराशि	
23	पार्श्वनाथ					3	वैर	श्रेष्ठ	
24	वर्धमान					2.5	मध्यम	स्वराशि	वेध
	महावीरस्वामी					3	मध्यम	स्वराशि	वेध
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
कन्या	बुध	मिथुन	वैश्य	सिंह, धन विना सर्व				हस्त	मध्यम

साधक अक्षर : त, ता ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	6	महिष	त	लभ्य		देव	तुला	अन्त्य
नाम	विरुद्ध	8, 9, 3	अश्व	अ		देय	राक्षस	मीन	अन्त्य
1	ऋषभदेव	अशुभ			1		मध्यम	शुभ	भवेध
	आदिनाथ	अशुभ		कुवैर	2		मध्यम	शुभ	भवेध
2	अजितनाथ			कुवैर	2		मध्यम	प्रीति	वेध
3	सम्भवनाथ				1.5		स्व	शुभ	
4	अभिनन्दन			कुवैर	2		स्व	शुभ	
5	सुमतिनाथ	अशुभ			1.5		वैर	शुभ	वेध
6	पद्मप्रभस्वामी				0.5		वैर	श्रेष्ठ	
7	सुपार्श्वनाथ				1.5		वैर	स्वराशि	वेध
8	चन्द्रप्रभस्वामी	अशुभ				1	स्व	अशुभ	
9	सुविधिनाथ	अशुभ			1.5		वैर	शुभ	
10	शीतलनाथ				1.5		मध्यम	शुभ	
11	श्रेयान्सनाथ				1.5		स्व	श्रेष्ठतर	वेध
12	वासुपूज्य		वैर		1		वैर	शुभ	
13	विमलनाथ	अशुभ			1		मध्यम	शत्रु	
14	अनन्तनाथ			कुवैर	2		स्व	शत्रु	वेध
15	धर्मनाथ	अशुभ			—		स्व	श्रेष्ठ	
16	शान्तिनाथ	अशुभ			1.5		मध्यम	सम	
17	कुन्थुनाथ	अशुभ				1.5	वैर	प्रीति	वेध
18	अरनाथ			कुवैर	2		स्व	शत्रु	वेध
19	मल्लिनाथ	अशुभ	वैर		0.5		स्व	सम	
20	मुनिसुव्रत				0.5		स्व	श्रेष्ठतर	वेध
	सुव्रत				1.5		स्व	श्रेष्ठतर	वेध
21	नमिनाथ	अशुभ	वैर		—		स्व	सम	
22	नेमिनाथ				—		वैर	श्रेष्ठ	
23	पार्श्वनाथ				0.5		वैर	स्वराशि	वेध
24	वर्धमान	अशुभ			1		मध्यम	श्रेष्ठ	
	महावीरस्वामी				0.5		मध्यम	श्रेष्ठ	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
तुला	शुक्र	वृषभ	शूद्र	सिंह विना पशु, जलज, कीट				स्वाति	मध्यम

साधक अक्षर : ति, ती, तु, तू, ते, तै ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	7	व्याघ्र	त	लभ्य		राक्षस	तुला	अन्त्य
नाम	विरुद्ध	9, 2, 4	गौ	अ		देय	दे. म.	मीन	अन्त्य
1	ऋषभदेव				1		अशुभ	शुभ	भवेध
	आदिनाथ			कुवैर	2		अशुभ	शुभ	भवेध
2	अजितनाथ	अशुभ		कुवैर	2		अशुभ	प्रीति	वेध
3	सम्भवनाथ				1.5		वैर	शुभ	
4	अभिनन्दन			कुवैर	2		वैर	शुभ	
5	सुमतिनाथ				1.5		स्व	शुभ	वेध
6	पद्मप्रभस्वामी		मैत्री		0.5		स्व	श्रेष्ठ	
7	सुपार्श्वनाथ		स्व		1.5		स्व	स्वराशि	एकभं
8	चन्द्रप्रभस्वामी					1	वैर	अशुभ	
9	सुविधिनाथ				1.5		स्व	शुभ	
10	शीतलनाथ	अशुभ			1.5		अशुभ	शुभ	
11	श्रेयान्सनाथ	अशुभ			1.5		वैर	श्रेष्ठतर	वेध
12	वासुपूज्य				1		स्व	शुभ	
13	विमलनाथ		वैर		1		अशुभ	शत्रु	
14	अनन्तनाथ	अशुभ		कुवैर	2		वैर	शत्रु	वेध
15	धर्मनाथ				–		वैर	श्रेष्ठ	
16	शान्तिनाथ	अशुभ			1.5		अशुभ	सम	
17	कुन्थुनाथ					1.5	स्व	प्रीति	वेध
18	अरनाथ	अशुभ		कुवैर	2		वैर	शत्रु	वेध
19	मल्लिनाथ				0.5		वैर	सम	
20	मुनिसुव्रत	अशुभ			0.5		वैर	श्रेष्ठतर	वेध
	सुव्रत	अशुभ			1.5		वैर	श्रेष्ठतर	वेध
21	नमिनाथ				–		वैर	सम	
22	नेमिनाथ		मैत्री		–		स्व	श्रेष्ठ	
23	पार्श्वनाथ		स्व		0.5		स्व	स्वराशि	एकभं
24	वर्धमान		वैर		1		अशुभ	श्रेष्ठ	
	महावीरस्वामी		वैर		0.5		अशुभ	श्रेष्ठ	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
तुला	शुक्र	वृषभ	शूद्र	सिंह विना पशु, जलज, कीट				विशाखा	मध्यम

साधक अक्षर : तो, तौ ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	7	व्याघ्र	त	लभ्य		राक्षस	वृश्चिक	अन्त्य
नाम	विरुद्ध	9, 2, 4	गौ	अ		देय	दे. म.	मिथुन	अन्त्य
1	ऋषभदेव				1		अशुभ	श्रेष्ठ	पादवेध
	आदिनाथ			कुवैर	2		अशुभ	श्रेष्ठ	पादवेध
2	अजितनाथ	अशुभ		कुवैर	2		अशुभ	सम	वेध
3	सम्भवनाथ				1.5		वैर	शत्रु	
4	अभिनन्दन			कुवैर	2		वैर	शत्रु	
5	सुमतिनाथ				1.5		स्व	श्रेष्ठतर	वेध
6	पद्मप्रभस्वामी		मैत्री		0.5		स्व	शुभ	
7	सुपार्श्वनाथ		स्व		1.5		स्व	अशुभ	एकभं
8	चन्द्रप्रभस्वामी					1	वैर	स्वराशि	
9	सुविधिनाथ				1.5		स्व	श्रेष्ठ	
10	शीतलनाथ	अशुभ			1.5		अशुभ	श्रेष्ठ	
11	श्रेयान्सनाथ	अशुभ			1.5		वैर	शुभ	वेध
12	वासुपूज्य				1		स्व	श्रेष्ठ	
13	विमलनाथ		वैर		1		अशुभ	शुभ	
14	अनन्तनाथ	अशुभ		कुवैर	2		वैर	शुभ	वेध
15	धर्मनाथ				–		वैर	मध्यम	
16	शान्तिनाथ	अशुभ			1.5		अशुभ	प्रीति	
17	कुन्थुनाथ					1.5	स्व	सम	भवेध
18	अरनाथ	अशुभ		कुवैर	2		वैर	शुभ	वेध
19	मल्लिनाथ				0.5		वैर	प्रीति	
20	मुनिसुव्रत	अशुभ			0.5		वैर	शुभ	वेध
	सुव्रत	अशुभ			1.5		वैर	शुभ	वेध
21	नमिनाथ				–		वैर	प्रीति	
22	नेमिनाथ		मैत्री		–		स्व	शुभ	
23	पार्श्वनाथ		स्व		0.5		स्व	अशुभ	एकभं
24	वर्धमान		वैर		1		अशुभ	शुभ	
	महावीरस्वामी		वैर		0.5		अशुभ	शुभ	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
वृश्चिक	मंगल	मेष	ब्राह्मण	सिंह				विशाखा	मध्यम

साधक अक्षर : थ - १० ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	8	गौ	त	लभ्य		मनुष्य	मीन	मध्य
नाम	विरुद्ध	1, 3, 5	व्याघ्र	अ		देय	राक्षस	तुला	मध्य
1	ऋषभदेव	अशुभ			1		स्व	श्रेष्ठतर	
	आदिनाथ	अशुभ		कुवैर	2		स्व	श्रेष्ठतर	
2	अजितनाथ			कुवैर	2		स्व	शुभ	
3	सम्भवनाथ	अशुभ			1.5		मध्यम	श्रेष्ठ	भवेध
4	अभिनन्दन			कुवैर	2		मध्यम	श्रेष्ठ	
5	सुमतिनाथ	अशुभ			1.5		अशुभ	प्रीति	
6	पद्मप्रभस्वामी	अशुभ	कुवैर		0.5		अशुभ	सम	भवेध
7	सुपार्श्वनाथ		कुवैर		1.5		अशुभ	शत्रु	
8	चन्द्रप्रभस्वामी					1	मध्यम	शुभ	वेध
9	सुविधिनाथ	अशुभ			1.5		अशुभ	श्रेष्ठतर	
10	शीतलनाथ				1.5		स्व	श्रेष्ठतर	वेध
11	श्रेयान्सनाथ				1.5		मध्यम	शुभ	
12	वासुपूज्य				1		अशुभ	अशुभ	
13	विमलनाथ		स्व		1		स्व	स्वराशि	एकभं
14	अनन्तनाथ			कुवैर	2		मध्यम	स्वराशि	
15	धर्मनाथ				—		मध्यम	मध्यम	वेध
16	शान्तिनाथ				1.5		स्व	श्रेष्ठ	वेध
17	कुन्थुनाथ	अशुभ				1.5	अशुभ	शुभ	
18	अरनाथ			कुवैर	2		मध्यम	स्वराशि	
19	मल्लिनाथ	अशुभ			0.5		मध्यम	श्रेष्ठ	
20	मुनिसुव्रत				0.5		मध्यम	शुभ	
	सुव्रत				1.5		मध्यम	शुभ	
21	नमिनाथ	अशुभ			—		मध्यम	श्रेष्ठ	
22	नेमिनाथ	अशुभ	कुवैर		—		अशुभ	सम	भवेध
23	पार्श्वनाथ		कुवैर		0.5		अशुभ	शत्रु	
24	वर्धमान	अशुभ	मैत्री		1		स्व	सम	
	महावीरस्वामी	अशुभ	मैत्री		0.5		स्व	सम	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
मीन	गुरु	धन	ब्राह्मण	—				उ.भाद्रपद	पश्चिम

साधक अक्षर : द, दा ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	7	सिंह	त	लभ्य		मनुष्य	कुंभ	आद्य
नाम	विरुद्ध	9, 2, 4	हस्ति	अ		देय	राक्षस	कर्क	आद्य
1	ऋषभदेव				1		स्व	शुभ	
	आदिनाथ			कुवैर	2		स्व	शुभ	
2	अजितनाथ	अशुभ		कुवैर	2		स्व	श्रेष्ठतर	
3	सम्भवनाथ				1.5		मध्यम	मध्यम	
4	अभिनन्दन			कुवैर	2		मध्यम	मध्यम	वेध
5	सुमतिनाथ				1.5		अशुभ	सम	
6	पद्मप्रभस्वामी				0.5		अशुभ	प्रीति	
7	सुपार्श्वनाथ				1.5		अशुभ	शुभ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी					1	मध्यम	श्रेष्ठ	
9	सुविधिनाथ				1.5		अशुभ	शुभ	वेध
10	शीतलनाथ	अशुभ			1.5		स्व	शुभ	
11	श्रेयान्सनाथ	अशुभ			1.5		मध्यम	श्रेष्ठ	
12	वासुपूज्य				1		अशुभ	स्वराशि	वेध
13	विमलनाथ				1		स्व	अशुभ	
14	अनन्तनाथ	अशुभ	वैर	कुवैर	2		मध्यम	अशुभ	
15	धर्मनाथ				—		मध्यम	शत्रु	
16	शान्तिनाथ	अशुभ	वैर		1.5		स्व	शुभ	
17	कुन्थुनाथ					1.5	अशुभ	श्रेष्ठतर	
18	अरनाथ	अशुभ	वैर	कुवैर	2		मध्यम	अशुभ	
19	मल्लिनाथ				0.5		मध्यम	शुभ	वेध
20	मुनिसुव्रत	अशुभ			0.5		मध्यम	श्रेष्ठ	
	सुव्रत				1.5		मध्यम	श्रेष्ठ	
21	नमिनाथ				—		मध्यम	शुभ	वेध
22	नेमिनाथ				—		अशुभ	प्रीति	
23	पार्श्वनाथ				0.5		अशुभ	शुभ	
24	वर्धमान				1		स्व	प्रीति	वेध
	महावीरस्वामी				0.5		स्व	प्रीति	वेध
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
कुंभ	शनि	मकर	शूद्र	सिंह विना पशु, जलज, कीट				पू.भाद्रपद	पश्चिम

साधक अक्षर : दि, दी ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	7	सिंह	त	लभ्य		मनुष्य	मीन	आद्य
नाम	विरुद्ध	9, 2, 4	हस्ति	अ		देय	राक्षस	तुला	आद्य
1	ऋषभदेव				1		स्व	श्रेष्ठतर	
	आदिनाथ			कुवैर	2		स्व	श्रेष्ठतर	
2	अजितनाथ	अशुभ		कुवैर	2		स्व	शुभ	
3	सम्भवनाथ				1.5		मध्यम	श्रेष्ठ	
4	अभिनन्दन			कुवैर	2		मध्यम	श्रेष्ठ	भवेध
5	सुमतिनाथ				1.5		अशुभ	प्रीति	
6	पद्मप्रभस्वामी				0.5		अशुभ	सम	
7	सुपार्श्वनाथ				1.5		अशुभ	शत्रु	
8	चन्द्रप्रभस्वामी					1	मध्यम	शुभ	
9	सुविधिनाथ				1.5		अशुभ	श्रेष्ठतर	वेध
10	शीतलनाथ	अशुभ			1.5		स्व	श्रेष्ठतर	
11	श्रेयान्सनाथ				1.5		मध्यम	शुभ	
12	वासुपूज्य				1		अशुभ	अशुभ	वेध
13	विमलनाथ				1		स्व	स्वराशि	
14	अनन्तनाथ	अशुभ	वैर	कुवैर	2		मध्यम	स्वराशि	
15	धर्मनाथ				—		मध्यम	मध्यम	
16	शान्तिनाथ	अशुभ	वैर		1.5		स्व	श्रेष्ठ	
17	कुन्थुनाथ					1.5	अशुभ	शुभ	
18	अरनाथ	अशुभ	वैर	कुवैर	2		मध्यम	स्वराशि	
19	मल्लिनाथ				0.5		मध्यम	श्रेष्ठ	वेध
20	मुनिसुव्रत	अशुभ			0.5		मध्यम	शुभ	
	सुव्रत	अशुभ			1.5		मध्यम	शुभ	
21	नमिनाथ				—		मध्यम	श्रेष्ठ	वेध
22	नेमिनाथ				—		अशुभ	सम	
23	पार्श्वनाथ				0.5		अशुभ	शत्रु	
24	वर्धमान				1		स्व	सम	भवेध
	महावीरस्वामी				0.5		स्व	सम	भवेध
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
मीन	गुरु	धन	ब्राह्मण	—				पू.भाद्रपद	पश्चिम

साधक अक्षर : दु, दू ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	8	गौ	त	लभ्य		मनुष्य	मीन	मध्य
नाम	विरुद्ध	1, 3, 5	व्याघ्र	अ		देय	राक्षस	तुला	मध्य
1	ऋषभदेव	अशुभ			1		स्व	श्रेष्ठतर	
	आदिनाथ	अशुभ		कुवैर	2		स्व	श्रेष्ठतर	
2	अजितनाथ			कुवैर	2		स्व	शुभ	
3	सम्भवनाथ	अशुभ			1.5		मध्यम	श्रेष्ठ	वेध
4	अभिनन्दन			कुवैर	2		मध्यम	श्रेष्ठ	
5	सुमतिनाथ	अशुभ			1.5		अशुभ	प्रीति	
6	पद्मप्रभस्वामी	अशुभ	कुवैर		0.5		अशुभ	सम	वेध
7	सुपार्श्वनाथ		कुवैर		1.5		अशुभ	शत्रु	
8	चन्द्रप्रभस्वामी					1	मध्यम	शुभ	वेध
9	सुविधिनाथ	अशुभ			1.5		अशुभ	श्रेष्ठतर	
10	शीतलनाथ				1.5		स्व	श्रेष्ठतर	वेध
11	श्रेयान्सनाथ				1.5		मध्यम	शुभ	
12	वासुपूज्य				1		अशुभ	अशुभ	
13	विमलनाथ		स्व		1		स्व	स्वराशि	एकभं
14	अनन्तनाथ			कुवैर	2		मध्यम	स्वराशि	
15	धर्मनाथ				–		मध्यम	मध्यम	वेध
16	शान्तिनाथ				1.5		स्व	श्रेष्ठ	वेध
17	कुन्थुनाथ	अशुभ				1.5	अशुभ	शुभ	
18	अरनाथ			कुवैर	2		मध्यम	स्वराशि	
19	मल्लिनाथ	अशुभ			0.5		मध्यम	श्रेष्ठ	
20	मुनिसुव्रत				0.5		मध्यम	शुभ	
	सुव्रत				1.5		मध्यम	शुभ	
21	नमिनाथ	अशुभ		–			मध्यम	श्रेष्ठ	
22	नेमिनाथ	अशुभ	कुवैर		–		अशुभ	सम	वेध
23	पार्श्वनाथ		कुवैर		0.5		अशुभ	शत्रु	
24	वर्धमान	अशुभ	मैत्री		1		स्व	सम	
	महावीरस्वामी	अशुभ	मैत्री		0.5		स्व	सम	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
मीन	गुरु	धन	ब्राह्मण	–				उ.भाद्रपद	पश्चिम

साधक अक्षर : दे, दै, दो, दौ । (★दे दै : १ - पादवेध, ७-१७-२३ भवेध)

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	9	हस्ति	त	लभ्य		देव	मीन	अन्त्य
नाम	विरुद्ध	2, 4, 6	सिंह	अ		देय	राक्षस	तुला	अन्त्य
1	ऋषभदेव				1		मध्यम	श्रेष्ठतर	भवेध★
	आदिनाथ			कुवैर	2		मध्यम	श्रेष्ठतर	भवेध★
2	अजितनाथ	अशुभ		कुवैर	2		मध्यम	शुभ	वेध
3	सम्भवनाथ				1.5		स्व	श्रेष्ठ	
4	अभिनन्दन			कुवैर	2		स्व	श्रेष्ठ	
5	सुमतिनाथ				1.5		वैर	प्रीति	वेध
6	पद्मप्रभस्वामी				0.5		वैर	सम	
7	सुपार्श्वनाथ				1.5		वैर	शत्रु	वेध★
8	चन्द्रप्रभस्वामी					1	स्व	शुभ	
9	सुविधिनाथ				1.5		वैर	श्रेष्ठतर	
10	शीतलनाथ	अशुभ			1.5		मध्यम	श्रेष्ठतर	
11	श्रेयान्सनाथ	अशुभ			1.5		स्व	शुभ	वेध
12	वासुपूज्य	अशुभ			1		वैर	अशुभ	
13	विमलनाथ				1		मध्यम	स्वराशि	
14	अनन्तनाथ		स्व	कुवैर	2		स्व	स्वराशि	एकभं
15	धर्मनाथ				—		स्व	मध्यम	
16	शान्तिनाथ	अशुभ	स्व		1.5		मध्यम	श्रेष्ठ	
17	कुन्थुनाथ					1.5	वैर	शुभ	वेध★
18	अरनाथ		स्व	कुवैर	2		स्व	स्वराशि	एकभं
19	मल्लिनाथ				0.5		स्व	श्रेष्ठ	
20	मुनिसुव्रत	अशुभ			0.5		स्व	शुभ	वेध
	सुव्रत	अशुभ			1.5		स्व	शुभ	वेध
21	नमिनाथ				—		स्व	श्रेष्ठ	
22	नेमिनाथ				—		वैर	सम	
23	पार्श्वनाथ				0.5		वैर	शत्रु	वेध★
24	वर्धमान				1		मध्यम	सम	
	महावीरस्वामी				0.5		मध्यम	सम	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि			नक्षत्र	युजि	
मीन	गुरु	धन	ब्राह्मण	—			रेवती	पूर्व	

साधक अक्षर : ध - १० ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	2	वानर	त	लभ्य		मनुष्य	धन	मध्य
नाम	विरुद्ध	4, 6, 8	मेष	अ		देय	राक्षस	वृषभ	मध्य
1	ऋषभदेव				1		स्व	स्वराशि	
	आदिनाथ			कुवैर	2		स्व	स्वराशि	
2	अजितनाथ	अशुभ		कुवैर	2		स्व	शत्रु	
3	सम्भवनाथ				1.5		मध्यम	सम	वेध
4	अभिनन्दन			कुवेर	2		मध्यम	सम	
5	सुमतिनाथ				1.5		अशुभ	शुभ	
6	पद्मप्रभस्वामी				0.5		अशुभ	श्रेष्ठ	वेध
7	सुपार्श्वनाथ				1.5		अशुभ	शुभ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी	अशुभ				1	मध्यम	श्रेष्ठ	वेध
9	सुविधिनाथ				1.5		अशुभ	स्वराशि	
10	शीतलनाथ		स्व		1.5		स्व	स्वराशि	एकभं
11	श्रेयान्सनाथ	अशुभ	मैत्री		1.5		मध्यम	अशुभ	
12	वासुपूज्य	अशुभ			1		अशुभ	शुभ	
13	विमलनाथ	अशुभ			1		स्व	श्रेष्ठतर	वेध
14	अनन्तनाथ			कुवैर	2		मध्यम	श्रेष्ठतर	
15	धर्मनाथ	अशुभ	वैर		–		मध्यम	प्रीति	वेध
16	शान्तिनाथ				1.5		स्व	शुभ	वेध
17	कुन्थुनाथ		वैर			1.5	अशुभ	शत्रु	
18	अरनाथ			कुवैर	2		मध्यम	श्रेष्ठतर	
19	मल्लिनाथ				0.5		मध्यम	शुभ	
20	मुनिसुव्रत	अशुभ	मैत्री		0.5		मध्यम	अशुभ	
	सुव्रत	अशुभ	मैत्री		1.5		मध्यम	अशुभ	
21	नमिनाथ				–		मध्यम	शुभ	
22	नेमिनाथ				–		अशुभ	श्रेष्ठ	वेध
23	पार्श्वनाथ				0.5		अशुभ	शुभ	
24	वर्धमान				1		स्व	श्रेष्ठ	
	महावीरस्वामी				0.5		स्व	श्रेष्ठ	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
धन	गुरु	मीन	क्षत्रिय	सर्व				पूर्वाषाढा	पश्चिम

साधक अक्षर : न, ना, नि, नी, नु, नू, ने, नै । (★न, नि : ३-६-२२ भवेध)

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	8	हरिण	त	लभ्य		देव	वृश्चिक	मध्य
नाम	विरुद्ध	1, 3, 5	श्वान	अ		देय	राक्षस	मिथुन	मध्य
1	ऋषभदेव	अशुभ			1		मध्यम	श्रेष्ठ	
	आदिनाथ	अशुभ		कुवैर	2		मध्यम	श्रेष्ठ	
2	अजितनाथ			कुवैर	2		मध्यम	सम	
3	सम्भवनाथ	अशुभ			1.5		स्व	शत्रु	वेध★
4	अभिनन्दन			कुवैर	2		स्व	शत्रु	
5	सुमतिनाथ	अशुभ			1.5		वैर	श्रेष्ठतर	
6	पद्मप्रभस्वामी	अशुभ			0.5		वैर	शुभ	वेध★
7	सुपार्श्वनाथ				1.5		वैर	अशुभ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी		स्व			1	स्व	स्वराशि	एकभं
9	सुविधिनाथ	अशुभ	कुवैर		1.5		वैर	श्रेष्ठ	
10	शीतलनाथ				1.5		मध्यम	श्रेष्ठ	वेध
11	श्रेयान्सनाथ				1.5		स्व	शुभ	
12	वासुपूज्य				1		वैर	श्रेष्ठ	
13	विमलनाथ				1		मध्यम	शुभ	वेध
14	अनन्तनाथ			कुवैर	2		स्व	शुभ	
15	धर्मनाथ				—		स्व	मध्यम	वेध
16	शान्तिनाथ				1.5		मध्यम	प्रीति	वेध
17	कुन्थुनाथ	अशुभ				1.5	वैर	सम	
18	अरनाथ			कुवैर	2		स्व	शुभ	
19	मल्लिनाथ	अशुभ			0.5		स्व	प्रीति	
20	मुनिसुव्रत				0.5		स्व	शुभ	
	सुव्रत				1.5		स्व	शुभ	
21	नमिनाथ	अशुभ			—		स्व	प्रीति	
22	नेमिनाथ	अशुभ			—		वैर	शुभ	वेध★
23	पार्श्वनाथ				0.5		वैर	अशुभ	
24	वर्धमान	अशुभ			1		मध्यम	शुभ	
	महावीरस्वामी	अशुभ			0.5		मध्यम	शुभ	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
वृश्चिक	मंगल	मेष	ब्राह्मण	सिंह				अनुराधा	मध्यम

साधक अक्षर : नो, नौ ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	9	हरिण	त	लभ्य		राक्षस	वृश्चिक	आद्य
नाम	विरुद्ध	2, 4, 6	श्वान	अ		देय	दे. म.	मिथुन	आद्य
1	ऋषभदेव				1		अशुभ	श्रेष्ठ	
	आदिनाथ			कुवैर	2		अशुभ	श्रेष्ठ	
2	अजितनाथ	अशुभ		कुवैर	2		अशुभ	सम	
3	सम्भवनाथ				1.5		वैर	शत्रु	
4	अभिनन्दन			कुवैर	2		वैर	शत्रु	भवेध
5	सुमतिनाथ				1.5		स्व	श्रेष्ठतर	
6	पद्मप्रभस्वामी				0.5		स्व	शुभ	
7	सुपार्श्वनाथ				1.5		स्व	अशुभ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी		स्व			1	वैर	स्वराशि	
9	सुविधिनाथ		कुवैर		1.5		स्व	श्रेष्ठ	वेध
10	शीतलनाथ	अशुभ			1.5		अशुभ	श्रेष्ठ	
11	श्रेयान्सनाथ	अशुभ			1.5		वैर	शुभ	
12	वासुपूज्य	अशुभ			1		स्व	श्रेष्ठ	वेध
13	विमलनाथ				1		अशुभ	शुभ	
14	अनन्तनाथ			कुवैर	2		वैर	शुभ	
15	धर्मनाथ				—		वैर	मध्यम	
16	शान्तिनाथ	अशुभ			1.5		अशुभ	प्रीति	
17	कुन्थुनाथ					1.5	स्व	सम	
18	अरनाथ			कुवैर	2		वैर	शुभ	
19	मल्लिनाथ				0.5		वैर	प्रीति	वेध
20	मुनिसुव्रत	अशुभ			0.5		वैर	शुभ	
	सुव्रत	अशुभ			1.5		वैर	शुभ	
21	नमिनाथ				—		वैर	प्रीति	वेध
22	नेमिनाथ				—		स्व	शुभ	
23	पार्श्वनाथ				0.5		स्व	अशुभ	
24	वर्धमान				1		अशुभ	शुभ	भवेध
	महावीरस्वामी				0.5		अशुभ	शुभ	भवेध
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
वृश्चिक	मंगल	मेष	ब्राह्मण	सिंह				ज्येष्ठा	पश्चिम

साधक अक्षर : प, पा, पि, पी ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	3	गौ	प	लभ्य		मनुष्य	कन्या	आद्य
नाम	विरुद्ध	5, 7, 9	व्याघ्र	क		देय	राक्षस	मेष	आद्य
1	ऋषभदेव				0.5		स्व	श्रेष्ठ	
	आदिनाथ					2.5	स्व	श्रेष्ठ	
2	अजितनाथ					2.5	स्व	शुभ	
3	सम्भवनाथ	अशुभ			1		मध्यम	श्रेष्ठतर	
4	अभिनन्दन	अशुभ				2.5	मध्यम	श्रेष्ठतर	वेध
5	सुमतिनाथ				1		अशुभ	शुभ	
6	पद्मप्रभस्वामी	अशुभ	कुवैर				अशुभ	स्वराशि	
7	सुपार्श्वनाथ	अशुभ	कुवैर		1		अशुभ	श्रेष्ठ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी					1.5	मध्यम	शुभ	
9	सुविधिनाथ				1		अशुभ	श्रेष्ठ	वेध
10	शीतलनाथ				1		स्व	श्रेष्ठ	
11	श्रेयान्सनाथ				1		मध्यम	मध्यम	
12	वासुपूज्य				0.5		अशुभ	प्रीति	वेध
13	विमलनाथ		मैत्री		0.5		स्व	सम	
14	अनन्तनाथ	अशुभ				2.5	मध्यम	सम	
15	धर्मनाथ					0.5	मध्यम	शुभ	
16	शान्तिनाथ				1		स्व	शत्रु	
17	कुन्थुनाथ			कुवैर		2	अशुभ	शुभ	
18	अरनाथ	अशुभ				2.5	मध्यम	सम	
19	मल्लिनाथ						मध्यम	शत्रु	वेध
20	मुनिसुव्रत						मध्यम	मध्यम	
	सुव्रत				1		मध्यम	मध्यम	
21	नमिनाथ					0.5	मध्यम	शत्रु	वेध
22	नेमिनाथ	अशुभ	कुवैर			0.5	अशुभ	स्वराशि	
23	पार्श्वनाथ	अशुभ	कुवैर				अशुभ	श्रेष्ठ	
24	वर्धमान		स्व		0.5		स्व	स्वराशि	एकभं
	महावीरस्वामी		स्व				स्व	स्वराशि	एकभं
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
कन्या	बुध	मिथुन	वैश्य	सिंह, धन विना सर्व				उ.फाल्गुनी	मध्यम

साधक अक्षर : पु, पू ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	4	महिष	प	लभ्य		देव	कन्या	आद्य
नाम	विरुद्ध	6, 8, 1	अश्व	क		देय	राक्षस	मेष	आद्य
1	ऋषभदेव				0.5		मध्यम	श्रेष्ठ	
	आदिनाथ					2.5	मध्यम	श्रेष्ठ	
2	अजितनाथ					2.5	मध्यम	शुभ	
3	सम्भवनाथ				1		स्व	श्रेष्ठतर	
4	अभिनन्दन					2.5	स्व	श्रेष्ठतर	वेध
5	सुमतिनाथ	अशुभ			1		वैर	शुभ	
6	पद्मप्रभस्वामी						वैर	स्वराशि	
7	सुपार्श्वनाथ				1		वैर	श्रेष्ठ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी	अशुभ				1.5	स्व	शुभ	
9	सुविधिनाथ	अशुभ			1		वैर	श्रेष्ठ	वेध
10	शीतलनाथ				1		मध्यम	श्रेष्ठ	
11	श्रेयान्सनाथ				1		स्व	मध्यम	
12	वासुपूज्य	अशुभ	वैर		0.5		वैर	प्रीति	वेध
13	विमलनाथ	अशुभ			0.5		मध्यम	सम	
14	अनन्तनाथ					2.5	स्व	सम	
15	धर्मनाथ	अशुभ				0.5	स्व	शुभ	
16	शान्तिनाथ				1		मध्यम	शत्रु	
17	कुन्थुनाथ			कुवैर		2	वैर	शुभ	
18	अरनाथ					2.5	स्व	सम	
19	मल्लिनाथ	अशुभ	वैर				स्व	शत्रु	वेध
20	मुनिसुव्रत						स्व	मध्यम	
	सुव्रत				1		स्व	मध्यम	
21	नमिनाथ	अशुभ	वैर			0.5	स्व	शत्रु	वेध
22	नेमिनाथ					0.5	वैर	स्वराशि	
23	पार्श्वनाथ						वैर	श्रेष्ठ	
24	वर्धमान				0.5		मध्यम	स्वराशि	वेध
	महावीरस्वामी						मध्यम	स्वराशि	वेध
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
कन्या	बुध	मिथुन	वैश्य	सिंह, धन विना सर्व				हस्त	मध्यम

साधक अक्षर : पे, पै, पो, पौ ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	5	व्याघ्र	प	लभ्य		राक्षस	कन्या	मध्य
नाम	विरुद्ध	7, 9, 2	गौ	क		देय	दे. म.	मेष	मध्य
1	ऋषभदेव				0.5		अशुभ	श्रेष्ठ	
	आदिनाथ					2.5	अशुभ	श्रेष्ठ	
2	अजितनाथ					2.5	अशुभ	शुभ	
3	सम्भवनाथ				1		वैर	श्रेष्ठतर	वेध
4	अभिनन्दन	अशुभ				2.5	वैर	श्रेष्ठतर	
5	सुमतिनाथ				1		स्व	शुभ	
6	पद्मप्रभस्वामी		स्व				स्व	स्वराशि	एकभं
7	सुपार्श्वनाथ	अशुभ	मैत्री		1		स्व	श्रेष्ठ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी					1.5	वैर	शुभ	वेध
9	सुविधिनाथ				1		स्व	श्रेष्ठ	
10	शीतलनाथ	अशुभ			1		अशुभ	श्रेष्ठ	वेध
11	श्रेयान्सनाथ				1		वैर	मध्यम	
12	वासुपूज्य				0.5		स्व	प्रीति	
13	विमलनाथ		वैर		0.5		अशुभ	सम	वेध
14	अनन्तनाथ	अशुभ				2.5	वैर	सम	
15	धर्मनाथ					0.5	वैर	शुभ	वेध
16	शान्तिनाथ	अशुभ			1		अशुभ	शत्रु	वेध
17	कुन्थुनाथ			कुवैर		2	स्व	शुभ	
18	अरनाथ	अशुभ				2.5	वैर	सम	
19	मल्लिनाथ						वैर	शत्रु	
20	मुनिसुव्रत						वैर	मध्यम	
	सुव्रत				1		वैर	मध्यम	
21	नमिनाथ					0.5	वैर	शत्रु	
22	नेमिनाथ		स्व			0.5	स्व	स्वराशि	एकभं
23	पार्श्वनाथ	अशुभ	मैत्री				स्व	श्रेष्ठ	
24	वर्धमान		वैर		0.5		अशुभ	स्वराशि	
	महावीरस्वामी		वैर				अशुभ	स्वराशि	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
कन्या	बुध	मिथुन	वैश्य	सिंह, धन विना सर्व				चित्रा	मध्यम

साधक अक्षर : फ - १० ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	2	वानर	प	लभ्य		मनुष्य	धन	मध्य
नाम	विरुद्ध	4, 6, 8	मेष	क		देय	राक्षस	वृषभ	मध्य
1	ऋषभदेव				0.5		स्व	स्वराशि	
	आदिनाथ					2.5	स्व	स्वराशि	
2	अजितनाथ	अशुभ				2.5	स्व	शत्रु	
3	सम्भवनाथ				1		मध्यम	सम	भवेध
4	अभिनन्दन					2.5	मध्यम	सम	
5	सुमतिनाथ				1		अशुभ	शुभ	
6	पद्मप्रभस्वामी						अशुभ	श्रेष्ठ	भवेध
7	सुपार्श्वनाथ				1		अशुभ	शुभ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी	अशुभ				1.5	मध्यम	श्रेष्ठ	वेध
9	सुविधिनाथ				1		अशुभ	स्वराशि	
10	शीतलनाथ		स्व		1		स्व	स्वराशि	एकभं
11	श्रेयान्सनाथ	अशुभ	मैत्री		1		मध्यम	अशुभ	
12	वासुपूज्य	अशुभ			0.5		अशुभ	शुभ	
13	विमलनाथ	अशुभ			0.5		स्व	श्रेष्ठतर	वेध
14	अनन्तनाथ					2.5	मध्यम	श्रेष्ठतर	
15	धर्मनाथ	अशुभ	वैर			0.5	मध्यम	प्रीति	वेध
16	शान्तिनाथ				1		स्व	शुभ	वेध
17	कुन्थुनाथ		वैर	कुवैर		2	अशुभ	शत्रु	
18	अरनाथ					2.5	मध्यम	श्रेष्ठतर	
19	मल्लिनाथ						मध्यम	शुभ	
20	मुनिसुव्रत	अशुभ	मैत्री				मध्यम	अशुभ	
	सुव्रत		मैत्री		1		मध्यम	अशुभ	
21	नमिनाथ					0.5	मध्यम	शुभ	
22	नेमिनाथ					0.5	अशुभ	श्रेष्ठ	भवेध
23	पार्श्वनाथ						अशुभ	शुभ	
24	वर्धमान				0.5		स्व	श्रेष्ठ	
	महावीरस्वामी						स्व	श्रेष्ठ	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
धन	गुरु	मीन	क्षत्रिय	सर्व				पूर्वाषाढा	पश्चिम

साधक अक्षर : ब, बा, बि, बी, बु, बू ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	4	सर्प	प	लभ्य		मनुष्य	वृषभ	अन्त्य
नाम	विरुद्ध	6, 8, 1	नकुल	क		देय	राक्षस	धन	अन्त्य
1	ऋषभदेव				0.5		स्व	शत्रु	वेध
	आदिनाथ		कुवैर			2.5	स्व	शत्रु	वेध
2	अजितनाथ		स्व			2.5	स्व	स्वराशि	एकभं
3	सम्भवनाथ		मैत्री		1		मध्यम	श्रेष्ठ	
4	अभिनन्दन					2.5	मध्यम	श्रेष्ठ	
5	सुमतिनाथ	अशुभ			1		अशुभ	श्रेष्ठ	वेध
6	पद्मप्रभस्वामी						अशुभ	शुभ	
7	सुपार्श्वनाथ				1		अशुभ	प्रीति	वेध
8	चन्द्रप्रभस्वामी	अशुभ				1.5	मध्यम	सम	
9	सुविधिनाथ	अशुभ			1		अशुभ	शत्रु	
10	शीतलनाथ				1		स्व	शत्रु	
11	श्रेयान्सनाथ				1		मध्यम	शुभ	वेध
12	वासुपूज्य	अशुभ			0.5		अशुभ	श्रेष्ठतर	
13	विमलनाथ	अशुभ			0.5		स्व	शुभ	
14	अनन्तनाथ					2.5	मध्यम	शुभ	वेध
15	धर्मनाथ	अशुभ				0.5	मध्यम	शुभ	
16	शान्तिनाथ				1		स्व	अशुभ	
17	कुन्थुनाथ			कुवैर		2	अशुभ	स्वराशि	वेध
18	अरनाथ					2.5	मध्यम	शुभ	वेध
19	मल्लिनाथ	अशुभ					मध्यम	अशुभ	
20	मुनिसुव्रत						मध्यम	शुभ	वेध
	सुव्रत				1		मध्यम	शुभ	वेध
21	नमिनाथ	अशुभ				0.5	मध्यम	अशुभ	
22	नेमिनाथ					0.5	अशुभ	शुभ	
23	पार्श्वनाथ						अशुभ	प्रीति	वेध
24	वर्धमान				0.5		स्व	शुभ	
	महावीरस्वामी						स्व	शुभ	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
वृषभ	शुक्र	तुला	वैश्य	मेष				रोहिणी	पश्चिम

साधक अक्षर : बे, बै, बो, बौ ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	5	सर्प	प	लभ्य		देव	वृषभ	मध्य
नाम	विरुद्ध	7, 9, 2	नकुल	क		देय	राक्षस	धन	मध्य
1	ऋषभदेव		कुवैर		0.5		मध्यम	शत्रु	
	आदिनाथ		कुवैर			2.5	मध्यम	शत्रु	
2	अजितनाथ		स्व			2.5	मध्यम	स्वराशि	
3	सम्भवनाथ		मैत्री		1		स्व	श्रेष्ठ	एकभं
4	अभिनन्दन	अशुभ				2.5	स्व	श्रेष्ठ	
5	सुमतिनाथ				1		वैर	श्रेष्ठ	
6	पद्मप्रभस्वामी						वैर	शुभ	वेध
7	सुपार्श्वनाथ	अशुभ			1		वैर	प्रीति	
8	चन्द्रप्रभस्वामी					1.5	स्व	सम	वेध
9	सुविधिनाथ				1		वैर	शत्रु	
10	शीतलनाथ	अशुभ			1		मध्यम	शत्रु	वेध
11	श्रेयान्सनाथ				1		स्व	शुभ	
12	वासुपूज्य				0.5		वैर	श्रेष्ठतर	
13	विमलनाथ				0.5		मध्यम	शुभ	वेध
14	अनन्तनाथ	अशुभ				2.5	स्व	शुभ	
15	धर्मनाथ					0.5	स्व	शुभ	वेध
16	शान्तिनाथ	अशुभ			1		मध्यम	अशुभ	वेध
17	कुन्थुनाथ			कुवैर		2	वैर	स्वराशि	
18	अरनाथ	अशुभ				2.5	स्व	शुभ	
19	मल्लिनाथ						स्व	अशुभ	
20	मुनिसुव्रत						स्व	शुभ	
	सुव्रत				1		स्व	शुभ	
21	नमिनाथ					0.5	स्व	अशुभ	
22	नेमिनाथ					0.5	वैर	शुभ	वेध
23	पार्श्वनाथ	अशुभ					वैर	प्रीति	
24	वर्धमान				0.5		मध्यम	शुभ	
	महावीरस्वामी						मध्यम	शुभ	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
वृषभ	शुक्र	तुला	वैश्य	मेष				मृगशिर्ष	पूर्व

साधक अक्षर : भ, भा, भि, भी । (★भि, भी, ४-२४ - भवेध)

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	1	श्वान	प	लभ्य		राक्षस	धन	आद्य
नाम	विरुद्ध	3, 5, 7	हरिण	क		देय	दे. म.	वृषभ	आद्य
1	ऋषभदेव	अशुभ			0.5		अशुभ	स्वराशि	
	आदिनाथ	अशुभ				2.5	अशुभ	स्वराशि	
2	अजितनाथ					2.5	अशुभ	शत्रु	
3	सम्भवनाथ	अशुभ			1		वैर	सम	
4	अभिनन्दन	अशुभ				2.5	वैर	सम	वेध★
5	सुमतिनाथ				1		स्व	शुभ	
6	पद्मप्रभस्वामी	अशुभ					स्व	श्रेष्ठ	
7	सुपार्श्वनाथ	अशुभ			1		स्व	शुभ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी		वैर			1.5	वैर	श्रेष्ठ	
9	सुविधिनाथ		स्व		1		स्व	स्वराशि	एकभं
10	शीतलनाथ				1		अशुभ	स्वराशि	
11	श्रेयान्सनाथ				1		वैर	अशुभ	
12	वासुपूज्य				0.5		स्व	शुभ	वेध
13	विमलनाथ				0.5		अशुभ	श्रेष्ठतर	
14	अनन्तनाथ					2.5	वैर	श्रेष्ठतर	
15	धर्मनाथ					0.5	वैर	प्रीति	
16	शान्तिनाथ				1		अशुभ	शुभ	
17	कुन्थुनाथ	अशुभ		कुवैर		2	स्व	शत्रु	
18	अरनाथ					2.5	वैर	श्रेष्ठतर	
19	मल्लिनाथ						वैर	शुभ	वेध
20	मुनिसुव्रत						वैर	अशुभ	
	सुव्रत				1		वैर	अशुभ	
21	नमिनाथ					0.5	वैर	शुभ	वेध
22	नेमिनाथ	अशुभ				0.5	स्व	श्रेष्ठ	
23	पार्श्वनाथ	अशुभ					स्व	शुभ	
24	वर्धमान	अशुभ			0.5		अशुभ	श्रेष्ठ	वेध★
	महावीरस्वामी	अशुभ					अशुभ	श्रेष्ठ	वेध★
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
धन	गुरु	मीन	क्षत्रिय	सर्व				मूल	पश्चिम

साधक अक्षर : भु, भू ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	2	वानर	प	लभ्य		मनुष्य	धन	मध्य
नाम	विरुद्ध	4, 6, 8	मेष	क		देय	राक्षस	वृषभ	मध्य
1	ऋषभदेव				0.5		स्व	स्वराशि	
	आदिनाथ					2.5	स्व	स्वराशि	
2	अजितनाथ	अशुभ				2.5	स्व	शत्रु	
3	सम्भवनाथ				1		मध्यम	सम	वेध
4	अभिनन्दन					2.5	मध्यम	सम	
5	सुमतिनाथ				1		अशुभ	शुभ	
6	पद्मप्रभस्वामी						अशुभ	श्रेष्ठ	वेध
7	सुपार्श्वनाथ				1		अशुभ	शुभ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी	अशुभ				1.5	मध्यम	श्रेष्ठ	वेध
9	सुविधिनाथ				1		अशुभ	स्वराशि	
10	शीतलनाथ		स्व		1		स्व	स्वराशि	एकभं
11	श्रेयान्सनाथ	अशुभ	मैत्री		1		मध्यम	अशुभ	
12	वासुपूज्य	अशुभ			0.5		अशुभ	शुभ	
13	विमलनाथ	अशुभ			0.5		स्व	श्रेष्ठतर	वेध
14	अनन्तनाथ					2.5	मध्यम	श्रेष्ठतर	
15	धर्मनाथ	अशुभ	वैर			0.5	मध्यम	प्रीति	वेध
16	शान्तिनाथ				1		स्व	शुभ	वेध
17	कुन्थुनाथ		वैर	कुवैर		2	अशुभ	शत्रु	
18	अरनाथ					2.5	मध्यम	श्रेष्ठतर	
19	मल्लिनाथ						मध्यम	शुभ	
20	मुनिसुव्रत	अशुभ	मैत्री				मध्यम	अशुभ	
	सुव्रत	अशुभ	मैत्री		1		मध्यम	अशुभ	
21	नमिनाथ					0.5	मध्यम	शुभ	
22	नेमिनाथ					0.5	अशुभ	श्रेष्ठ	वेध
23	पार्श्वनाथ						अशुभ	शुभ	
24	वर्धमान				0.5		स्व	श्रेष्ठ	
	महावीरस्वामी						स्व	श्रेष्ठ	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
धन	गुरु	मीन	क्षत्रिय	सर्व				पूर्वाषाढा	पश्चिम

साधक अक्षर : भे, भै ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	3	नकुल	प	लभ्य		मनुष्य	धन	अन्त्य
नाम	विरुद्ध	5, 7, 9	सर्प	क		देय	राक्षस	वृषभ	अन्त्य
1	ऋषभदेव		स्व		0.5		स्व	स्वराशि	पादवेध
	आदिनाथ		स्व			2.5	स्व	स्वराशि	पादवेध
2	अजितनाथ		वैर			2.5	स्व	शत्रु	वेध
3	सम्भवनाथ	अशुभ	वैर		1		मध्यम	सम	
4	अभिनन्दन	अशुभ				2.5	मध्यम	सम	
5	सुमतिनाथ				1		अशुभ	शुभ	वेध
6	पद्मप्रभस्वामी	अशुभ					अशुभ	श्रेष्ठ	
7	सुपार्श्वनाथ	अशुभ			1		अशुभ	शुभ	भवेध
8	चन्द्रप्रभस्वामी					1.5	मध्यम	श्रेष्ठ	
9	सुविधिनाथ				1		अशुभ	स्वराशि	
10	शीतलनाथ				1		स्व	स्वराशि	
11	श्रेयान्सनाथ				1		मध्यम	अशुभ	वेध
12	वासुपूज्य				0.5		अशुभ	शुभ	
13	विमलनाथ				0.5		स्व	श्रेष्ठतर	
14	अनन्तनाथ	अशुभ				2.5	मध्यम	श्रेष्ठतर	वेध
15	धर्मनाथ					0.5	मध्यम	प्रीति	
16	शान्तिनाथ				1		स्व	शुभ	
17	कुन्थुनाथ			कुवैर		2	अशुभ	शत्रु	भवेध
18	अरनाथ	अशुभ				2.5	मध्यम	श्रेष्ठतर	वेध
19	मल्लिनाथ						मध्यम	शुभ	
20	मुनिसुव्रत						मध्यम	अशुभ	वेध
	सुव्रत				1		मध्यम	अशुभ	वेध
21	नमिनाथ					0.5	मध्यम	शुभ	
22	नेमिनाथ	अशुभ				0.5	अशुभ	श्रेष्ठ	
23	पार्श्वनाथ	अशुभ					अशुभ	शुभ	भवेध
24	वर्धमान				0.5		स्व	श्रेष्ठ	
	महावीरस्वामी						स्व	श्रेष्ठ	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
धन	गुरु	मीन	क्षत्रिय	सर्व				उत्तराषाढा	पश्चिम

साधक अक्षर : भो, भौ ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	3	नकुल	प	लभ्य		मनुष्य	मकर	अन्त्य
नाम	विरुद्ध	5, 7, 9	सर्प	क		देय	राक्षस	सिंह	अन्त्य
1	ऋषभदेव		स्व		0.5		स्व	अशुभ	एकभं
	आदिनाथ		स्व			2.5	स्व	अशुभ	एकभं
2	अजितनाथ		वैर			2.5	स्व	शुभ	वेध
3	सम्भवनाथ	अशुभ	वैर		1		मध्यम	प्रीति	
4	अभिनन्दन	अशुभ				2.5	मध्यम	प्रीति	
5	सुमतिनाथ				1		अशुभ	शत्रु	वेध
6	पद्मप्रभस्वामी	अशुभ					अशुभ	मध्यम	
7	सुपार्श्वनाथ	अशुभ			1		अशुभ	श्रेष्ठतर	भवेध
8	चन्द्रप्रभस्वामी					1.5	मध्यम	शुभ	
9	सुविधिनाथ				1		अशुभ	अशुभ	
10	शीतलनाथ				1		स्व	अशुभ	
11	श्रेयान्सनाथ				1		मध्यम	स्वराशि	वेध
12	वासुपूज्य				0.5		अशुभ	श्रेष्ठ	
13	विमलनाथ				0.5		स्व	शुभ	
14	अनन्तनाथ	अशुभ				2.5	मध्यम	शुभ	वेध
15	धर्मनाथ					0.5	मध्यम	सम	
16	शान्तिनाथ				1		स्व	श्रेष्ठ	
17	कुन्थुनाथ			कुवैर		2	अशुभ	शुभ	वेध
18	अरनाथ	अशुभ				2.5	मध्यम	शुभ	वेध
19	मल्लिनाथ						मध्यम	श्रेष्ठ	
20	मुनिसुव्रत						मध्यम	स्वराशि	वेध
	सुव्रत				1		मध्यम	स्वराशि	वेध
21	नमिनाथ					0.5	मध्यम	श्रेष्ठ	
22	नेमिनाथ	अशुभ				0.5	अशुभ	मध्यम	
23	पार्श्वनाथ	अशुभ					अशुभ	श्रेष्ठतर	वेध
24	वर्धमान				0.5		स्व	मध्यम	
	महावीरस्वामी						स्व	मध्यम	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
मकर	शनि	कुंभ	वैश्य	कर्क, मीन				उत्तराषाढा	पश्चिम

साधक अक्षर : म, मा, मि, मी, मु, मू, मे, मै । (★मे, मै : १ - पादवेध, ७-१७-२३ भवेध)

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	1	उंदिर	प	लभ्य		राक्षस	सिंह	अन्त्य
नाम	विरुद्ध	3, 5, 7	बिडाल	क		देय	दे. म.	मकर	अन्त्य
1	ऋषभदेव	अशुभ			0.5		अशुभ	शुभ	भवेध★
	आदिनाथ	अशुभ				2.5	अशुभ	शुभ	भवेध★
2	अजितनाथ					2.5	अशुभ	श्रेष्ठ	वेध
3	सम्भवनाथ	अशुभ			1		वैर	शुभ	
4	अभिनन्दन	अशुभ	कुवैर			2.5	वैर	शुभ	
5	सुमतिनाथ		स्व		1		स्व	स्वराशि	एकभं
6	पद्मप्रभस्वामी	अशुभ					स्व	शुभ	
7	सुपार्श्वनाथ	अशुभ			1		स्व	शुभ	वेध★
8	चन्द्रप्रभस्वामी					1.5	वैर	श्रेष्ठतर	
9	सुविधिनाथ				1		स्व	शुभ	
10	शीतलनाथ				1		अशुभ	शुभ	
11	श्रेयान्सनाथ				1		वैर	शत्रु	वेध
12	वासुपूज्य				0.5		स्व	सम	
13	विमलनाथ				0.5		अशुभ	प्रीति	
14	अनन्तनाथ					2.5	वैर	प्रीति	वेध
15	धर्मनाथ					0.5	वैर	श्रेष्ठ	
16	शान्तिनाथ				1		अशुभ	शुभ	
17	कुन्थुनाथ	अशुभ		कुवैर		2	स्व	श्रेष्ठ	वेध★
18	अरनाथ					2.5	वैर	प्रीति	वेध
19	मल्लिनाथ						वैर	शुभ	
20	मुनिसुव्रत						वैर	शत्रु	वेध
	सुव्रत				1		वैर	शत्रु	वेध
21	नमिनाथ					0.5	वैर	शुभ	
22	नेमिनाथ	अशुभ				0.5	स्व	शुभ	
23	पार्श्वनाथ	अशुभ					स्व	शुभ	वेध★
24	वर्धमान	अशुभ			0.5		अशुभ	शुभ	
	महावीरस्वामी	अशुभ					अशुभ	शुभ	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
सिंह	सूर्य	–	क्षत्रिय	धन, वृश्चिक विना सर्व				मघा	मध्यम

साधक अक्षर : मो, मौ ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	2	उंदिर	प	लभ्य		मनुष्य	सिंह	मध्य
नाम	विरुद्ध	4, 6, 8	बिडाल	क		देय	राक्षस	मकर	मध्य
1	ऋषभदेव				0.5		स्व	शुभ	
	आदिनाथ					2.5	स्व	शुभ	
2	अजितनाथ	अशुभ				2.5	स्व	श्रेष्ठ	
3	सम्भवनाथ				1		मध्यम	शुभ	भवेध
4	अभिनन्दन		कुवैर			2.5	मध्यम	शुभ	
5	सुमतिनाथ		मैत्री		1		अशुभ	स्वराशि	
6	पद्मप्रभस्वामी						अशुभ	शुभ	भवेध
7	सुपार्श्वनाथ				1		अशुभ	शुभ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी	अशुभ				1.5	मध्यम	श्रेष्ठतर	वेध
9	सुविधिनाथ				1		अशुभ	शुभ	
10	शीतलनाथ				1		स्व	शुभ	वेध
11	श्रेयान्सनाथ	अशुभ			1		मध्यम	शत्रु	
12	वासुपूज्य	अशुभ			0.5		अशुभ	सम	
13	विमलनाथ	अशुभ			0.5		स्व	प्रीति	वेध
14	अनन्तनाथ					2.5	मध्यम	प्रीति	
15	धर्मनाथ	अशुभ				0.5	मध्यम	श्रेष्ठ	वेध
16	शान्तिनाथ				1		स्व	शुभ	वेध
17	कुन्थुनाथ			कुवैर		2	अशुभ	श्रेष्ठ	
18	अरनाथ					2.5	मध्यम	प्रीति	
19	मल्लिनाथ						मध्यम	शुभ	
20	मुनिसुव्रत	अशुभ					मध्यम	शत्रु	
	सुव्रत				1		मध्यम	शत्रु	
21	नमिनाथ					0.5	मध्यम	शुभ	
22	नेमिनाथ					0.5	अशुभ	शुभ	भवेध
23	पार्श्वनाथ						अशुभ	शुभ	
24	वर्धमान				0.5		स्व	शुभ	
	महावीरस्वामी						स्व	शुभ	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
सिंह	सूर्य	–	क्षत्रिय	धन, वृश्चिक विना सर्व				पू.फाल्गुनी	मध्यम

साधक अक्षर : य, या, यि, यी, यु, यू ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	9	हरिण	य	लभ्य		राक्षस	वृश्चिक	आद्य
नाम	विरुद्ध	2, 4, 6	श्वान	च		देय	दे. म.	मिथुन	आद्य
1	ऋषभदेव						अशुभ	श्रेष्ठ	
	आदिनाथ					3	अशुभ	श्रेष्ठ	
2	अजितनाथ	अशुभ				3	अशुभ	सम	
3	सम्भवनाथ				0.5		वैर	शत्रु	
4	अभिनन्दन					3	वैर	शत्रु	वेध
5	सुमतिनाथ				0.5		स्व	श्रेष्ठतर	
6	पद्मप्रभस्वामी					0.5	स्व	शुभ	
7	सुपार्श्वनाथ				0.5		स्व	अशुभ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी		मैत्री	कुवैर	2		वैर	स्वराशि	
9	सुविधिनाथ		कुवैर		0.5		स्व	श्रेष्ठ	वेध
10	शीतलनाथ	अशुभ			0.5		अशुभ	श्रेष्ठ	
11	श्रेयान्सनाथ	अशुभ			0.5		वैर	शुभ	
12	वासुपूज्य	अशुभ					स्व	श्रेष्ठ	वेध
13	विमलनाथ						अशुभ	शुभ	
14	अनन्तनाथ					3	वैर	शुभ	
15	धर्मनाथ					1	वैर	मध्यम	
16	शान्तिनाथ	अशुभ			0.5		अशुभ	प्रीति	
17	कुन्थुनाथ				1.5		स्व	सम	
18	अरनाथ					3	वैर	शुभ	
19	मल्लिनाथ					0.5	वैर	प्रीति	वेध
20	मुनिसुव्रत	अशुभ				0.5	वैर	शुभ	
	सुव्रत	अशुभ			0.5		वैर	शुभ	
21	नमिनाथ					1	वैर	प्रीति	वेध
22	नेमिनाथ					1	स्व	शुभ	
23	पार्श्वनाथ					0.5	स्व	अशुभ	
24	वर्धमान						अशुभ	शुभ	वेध
	महावीरस्वामी					0.5	अशुभ	शुभ	वेध
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
वृश्चिक	मंगल	मेष	ब्राह्मण	सिंह				ज्येष्ठा	पश्चिम

साधक अक्षर : ये, यै, यो, यौ ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	1	श्वान	य	लभ्य		राक्षस	धन	आद्य
नाम	विरुद्ध	3, 5, 7	हरिण	च		देय	दे. म.	वृषभ	आद्य
1	ऋषभदेव	अशुभ					अशुभ	स्वराशि	
	आदिनाथ	अशुभ				3	अशुभ	स्वराशि	
2	अजितनाथ					3	अशुभ	शत्रु	
3	सम्भवनाथ	अशुभ			0.5		वैर	सम	
4	अभिनन्दन	अशुभ				3	वैर	सम	वेध
5	सुमतिनाथ				0.5		स्व	शुभ	
6	पद्मप्रभस्वामी	अशुभ				0.5	स्व	श्रेष्ठ	
7	सुपार्श्वनाथ	अशुभ			0.5		स्व	शुभ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी		वैर	कुवैर	2		वैर	श्रेष्ठ	
9	सुविधिनाथ		स्व		0.5		स्व	स्वराशि	एकभं
10	शीतलनाथ				0.5		अशुभ	स्वराशि	
11	श्रेयान्सनाथ				0.5		वैर	अशुभ	
12	वासुपूज्य						स्व	शुभ	वेध
13	विमलनाथ						अशुभ	श्रेष्ठतर	
14	अनन्तनाथ					3	वैर	श्रेष्ठतर	
15	धर्मनाथ					1	वैर	प्रीति	
16	शान्तिनाथ				0.5		अशुभ	शुभ	
17	कुन्थुनाथ	अशुभ			1.5		स्व	शत्रु	
18	अरनाथ					3	वैर	श्रेष्ठतर	
19	मल्लिनाथ					0.5	वैर	शुभ	वेध
20	मुनिसुव्रत					0.5	वैर	अशुभ	
	सुव्रत				0.5		वैर	अशुभ	
21	नमिनाथ					1	वैर	शुभ	वेध
22	नेमिनाथ	अशुभ				1	स्व	श्रेष्ठ	
23	पार्श्वनाथ	अशुभ				0.5	स्व	शुभ	
24	वर्धमान	अशुभ					अशुभ	श्रेष्ठ	वेध
	महावीरस्वामी	अशुभ				0.5	अशुभ	श्रेष्ठ	वेध
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
धन	गुरु	मीन	क्षत्रिय	सर्व				मूल	पश्चिम

साधक अक्षर : ऋ, र, रा, रि, री । (ऋ, वेधे चिन्त्यम्)

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	5	वानर	य	लभ्य		राक्षस	तुला	मध्य
नाम	विरुद्ध	7, 9, 2	मेष	च		देय	दे. म.	मीन	मध्य
1	ऋषभदेव						अशुभ	शुभ	
	आदिनाथ					3	अशुभ	शुभ	
2	अजितनाथ					3	अशुभ	प्रीति	
3	सम्भवनाथ				0.5		वैर	शुभ	भवेध
4	अभिनन्दन	अशुभ				3	वैर	शुभ	
5	सुमतिनाथ				0.5		स्व	शुभ	
6	पद्मप्रभस्वामी					0.5	स्व	श्रेष्ठ	एकभं
7	सुपार्श्वनाथ	अशुभ			0.5		स्व	स्वराशि	
8	चन्द्रप्रभस्वामी			कुवैर	2		वैर	अशुभ	वेध
9	सुविधिनाथ				0.5		स्व	शुभ	
10	शीतलनाथ	अशुभ	मैत्री		0.5		अशुभ	शुभ	वेध
11	श्रेयान्सनाथ		मैत्री		0.5		वैर	श्रेष्ठतर	
12	वासुपूज्य						स्व	शुभ	
13	विमलनाथ						अशुभ	शत्रु	वेध
14	अनन्तनाथ	अशुभ				3	वैर	शत्रु	
15	धर्मनाथ		वैर			1	वैर	श्रेष्ठ	वेध
16	शान्तिनाथ	अशुभ			0.5		अशुभ	सम	वेध
17	कुन्थुनाथ				1.5		स्व	प्रीति	
18	अरनाथ	अशुभ				3	वैर	शत्रु	
19	मल्लिनाथ					0.5	वैर	सम	
20	मुनिसुव्रत		मैत्री			0.5	वैर	श्रेष्ठतर	
	सुव्रत		मैत्री		0.5		वैर	श्रेष्ठतर	
21	नमिनाथ					1	वैर	सम	
22	नेमिनाथ					1	स्व	श्रेष्ठ	एकभं
23	पार्श्वनाथ	अशुभ				0.5	स्व	स्वराशि	
24	वर्धमान						अशुभ	श्रेष्ठ	
	महावीरस्वामी					0.5	अशुभ	श्रेष्ठ	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
तुला	शुक्र	वृषभ	शूद्र	सिंह विना पशु, जलज, कीट				चित्रा	मध्यम

साधक अक्षर : रु, रू, रे, रै, रो, रौ । (★रु, रू : १-पादवेध, ७-१७-२३ भवेध)

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	6	महिष	य	लभ्य		देव	तुला	अन्त्य
नाम	विरुद्ध	8, 1, 3	अश्व	च		देय	राक्षस	मीन	अन्त्य
1	ऋषभदेव	अशुभ					मध्यम	शुभ	भवेध★
	आदिनाथ	अशुभ				3	मध्यम	शुभ	भवेध★
2	अजितनाथ					3	मध्यम	प्रीति	वेध
3	सम्भवनाथ				0.5		स्व	शुभ	
4	अभिनन्दन					3	स्व	शुभ	
5	सुमतिनाथ	अशुभ			0.5		वैर	शुभ	वेध
6	पद्मप्रभस्वामी					0.5	वैर	श्रेष्ठ	
7	सुपार्श्वनाथ				0.5		वैर	स्वराशि	वेध★
8	चन्द्रप्रभस्वामी	अशुभ		कुवैर	2		स्व	अशुभ	
9	सुविधिनाथ	अशुभ			0.5		वैर	शुभ	
10	शीतलनाथ				0.5		मध्यम	शुभ	
11	श्रेयान्सनाथ				0.5		स्व	श्रेष्ठतर	वेध
12	वासुपूज्य		वैर				वैर	शुभ	
13	विमलनाथ	अशुभ					मध्यम	शत्रु	
14	अनन्तनाथ					3	स्व	शत्रु	वेध
15	धर्मनाथ	अशुभ				1	स्व	श्रेष्ठ	
16	शान्तिनाथ	अशुभ			0.5		मध्यम	सम	
17	कुन्थुनाथ	अशुभ			1.5		वैर	प्रीति	वेध★
18	अरनाथ					3	स्व	शत्रु	वेध
19	मल्लिनाथ	अशुभ	वैर			0.5	स्व	सम	
20	मुनिसुव्रत					0.5	स्व	श्रेष्ठतर	वेध
	सुव्रत				0.5		स्व	श्रेष्ठतर	वेध
21	नमिनाथ	अशुभ	वैर			1	स्व	सम	
22	नेमिनाथ					1	वैर	श्रेष्ठ	
23	पार्श्वनाथ					0.5	वैर	स्वराशि	वेध★
24	वर्धमान	अशुभ					मध्यम	श्रेष्ठ	
	महावीरस्वामी	अशुभ				0.5	मध्यम	श्रेष्ठ	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
तुला	शुक्र	वृषभ	शूद्र	सिंह विना पशु, जलज, कीट				स्वाति	मध्यम

साधक अक्षर : ल, ला ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	1	अश्व	य	लभ्य		देव	मेष	आद्य
नाम	विरुद्ध	3, 5, 7	महिष	च		देय	राक्षस	कन्या	आद्य
1	ऋषभदेव	अशुभ					मध्यम	शुभ	
	आदिनाथ	अशुभ				3	मध्यम	शुभ	
2	अजितनाथ					3	मध्यम	अशुभ	
3	सम्भवनाथ	अशुभ			0.5		स्व	शुभ	
4	अभिनन्दन	अशुभ				3	स्व	शुभ	भवेध
5	सुमतिनाथ				0.5		वैर	शुभ	
6	पद्मप्रभस्वामी	अशुभ				0.5	वैर	शत्रु	
7	सुपार्श्वनाथ	अशुभ			0.5		वैर	सम	
8	चन्द्रप्रभस्वामी			कुवैर	2		स्व	प्रीति	
9	सुविधिनाथ				0.5		वैर	शुभ	वेध
10	शीतलनाथ				0.5		मध्यम	शुभ	
11	श्रेयान्सनाथ				0.5		स्व	श्रेष्ठ	
12	वासुपूज्य		मैत्री				वैर	शुभ	वेध
13	विमलनाथ						मध्यम	श्रेष्ठ	
14	अनन्तनाथ					3	स्व	श्रेष्ठ	
15	धर्मनाथ					1	स्व	श्रेष्ठतर	
16	शान्तिनाथ				0.5		मध्यम	स्वराशि	
17	कुन्थुनाथ	अशुभ			1.5		वैर	अशुभ	
18	अरनाथ					3	स्व	श्रेष्ठ	
19	मल्लिनाथ		स्व			0.5	स्व	स्वराशि	एकभं
20	मुनिसुव्रत					0.5	स्व	श्रेष्ठ	
	सुव्रत				0.5		स्व	श्रेष्ठ	
21	नमिनाथ		स्व			1	स्व	स्वराशि	एकभं
22	नेमिनाथ	अशुभ				1	वैर	शत्रु	
23	पार्श्वनाथ	अशुभ				0.5	वैर	सम	
24	वर्धमान	अशुभ					मध्यम	शत्रु	भवेध
	महावीरस्वामी	अशुभ				0.5	मध्यम	शत्रु	भवेध
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
मेष	मंगल	वृश्चिक	क्षत्रिय	–				अश्विनी	पूर्व

साधक अक्षर : लि, ली, लु, लू, ले, लै, लो, लौ । (★ले, लै, लो, लौ : ३-६-२२ भवेध)

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	2	हस्ति	य	लभ्य		मनुष्य	मेष	मध्य
नाम	विरुद्ध	4, 6, 8	सिंह	च		देय	राक्षस	कन्या	मध्य
1	ऋषभदेव						स्व	शुभ	
	आदिनाथ					3	स्व	शुभ	
2	अजितनाथ	अशुभ				3	स्व	अशुभ	
3	सम्भवनाथ				0.5		मध्यम	शुभ	वेध★
4	अभिनन्दन					3	मध्यम	शुभ	
5	सुमतिनाथ				0.5		अशुभ	शुभ	
6	पद्मप्रभस्वामी					0.5	अशुभ	शत्रु	वेध★
7	सुपार्श्वनाथ				0.5		अशुभ	सम	
8	चन्द्रप्रभस्वामी	अशुभ		कुवैर	2		मध्यम	प्रीति	वेध
9	सुविधिनाथ				0.5		अशुभ	शुभ	
10	शीतलनाथ				0.5		स्व	शुभ	वेध
11	श्रेयान्सनाथ	अशुभ			0.5		मध्यम	श्रेष्ठ	
12	वासुपूज्य	अशुभ					अशुभ	शुभ	
13	विमलनाथ	अशुभ					स्व	श्रेष्ठ	वेध
14	अनन्तनाथ		मैत्री			3	मध्यम	श्रेष्ठ	
15	धर्मनाथ	अशुभ				1	मध्यम	श्रेष्ठतर	वेध
16	शान्तिनाथ		मैत्री		0.5		स्व	स्वराशि	एकभं
17	कुन्थुनाथ				1.5		अशुभ	अशुभ	
18	अरनाथ		मैत्री			3	मध्यम	श्रेष्ठ	
19	मल्लिनाथ					0.5	मध्यम	स्वराशि	
20	मुनिसुव्रत	अशुभ				0.5	मध्यम	श्रेष्ठ	
	सुव्रत	अशुभ			0.5		मध्यम	श्रेष्ठ	
21	नमिनाथ					1	मध्यम	स्वराशि	
22	नेमिनाथ					1	अशुभ	शत्रु	वेध★
23	पार्श्वनाथ					0.5	अशुभ	सम	
24	वर्धमान						स्व	शत्रु	
	महावीरस्वामी					0.5	स्व	शत्रु	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
मेष	मंगल	वृश्चिक	क्षत्रिय	–				भरणी	पूर्व

साधक अक्षर : व, वा, वि, वी, वु, वू । (★वु, वू : १-पादवेध, ७-१७-२३ भवेध)

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	4	सर्प	य	लभ्य		मनुष्य	वृषभ	अन्त्य
नाम	विरुद्ध	6, 8, 1	नकुल	च		देय	राक्षस	धन	अन्त्य
1	ऋषभदेव		कुवैर				स्व	शत्रु	भवेध★
	आदिनाथ		कुवैर			3	स्व	शत्रु	भवेध★
2	अजितनाथ		स्व			3	स्व	स्वराशि	एकभं
3	सम्भवनाथ		मैत्री		0.5		मध्यम	श्रेष्ठ	
4	अभिनन्दन					3	मध्यम	श्रेष्ठ	
5	सुमतिनाथ	अशुभ			0.5		अशुभ	श्रेष्ठ	वेध
6	पद्मप्रभस्वामी					0.5	अशुभ	शुभ	
7	सुपार्श्वनाथ				0.5		अशुभ	प्रीति	वेध★
8	चन्द्रप्रभस्वामी	अशुभ		कुवैर	2		मध्यम	सम	
9	सुविधिनाथ	अशुभ			0.5		अशुभ	शत्रु	
10	शीतलनाथ				0.5		स्व	शत्रु	
11	श्रेयान्सनाथ				0.5		मध्यम	शुभ	वेध
12	वासुपूज्य	अशुभ					अशुभ	श्रेष्ठतर	
13	विमलनाथ	अशुभ					स्व	शुभ	
14	अनन्तनाथ					3	मध्यम	शुभ	वेध
15	धर्मनाथ	अशुभ				1	मध्यम	शुभ	
16	शान्तिनाथ				0.5		स्व	अशुभ	
17	कुन्थुनाथ				1.5		अशुभ	स्वराशि	वेध★
18	अरनाथ					3	मध्यम	शुभ	वेध
19	मल्लिनाथ	अशुभ				0.5	मध्यम	अशुभ	
20	मुनिसुव्रत					0.5	मध्यम	शुभ	वेध
	सुव्रत				0.5		मध्यम	शुभ	वेध
21	नमिनाथ	अशुभ				1	मध्यम	अशुभ	
22	नेमिनाथ					1	अशुभ	शुभ	
23	पार्श्वनाथ					0.5	अशुभ	प्रीति	वेध★
24	वर्धमान						स्व	शुभ	
	महावीरस्वामी					0.5	स्व	शुभ	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
वृषभ	शुक्र	तुला	वैश्य	मेष				रोहिणी	पूर्व

साधक अक्षर : वे, वै, वो, वौ ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	5	सर्प	य	लभ्य		देव	वृषभ	मध्य
नाम	विरुद्ध	7, 9, 2	नकुल	च		देय	राक्षस	धन	मध्य
1	ऋषभदेव		कुवैर				मध्यम	शत्रु	
	आदिनाथ		कुवैर			3	मध्यम	शत्रु	
2	अजितनाथ		स्व			3	मध्यम	स्वराशि	
3	सम्भवनाथ		मैत्री		0.5		स्व	श्रेष्ठ	एकभं
4	अभिनन्दन	अशुभ				3	स्व	श्रेष्ठ	
5	सुमतिनाथ				0.5		वैर	श्रेष्ठ	
6	पद्मप्रभस्वामी					0.5	वैर	शुभ	भवेध
7	सुपार्श्वनाथ	अशुभ			0.5		वैर	प्रीति	
8	चन्द्रप्रभस्वामी			कुवैर	2		स्व	सम	वेध
9	सुविधिनाथ				0.5		वैर	शत्रु	
10	शीतलनाथ	अशुभ			0.5		मध्यम	शत्रु	वेध
11	श्रेयान्सनाथ				0.5		स्व	शुभ	
12	वासुपूज्य						वैर	श्रेष्ठतर	
13	विमलनाथ						मध्यम	शुभ	वेध
14	अनन्तनाथ	अशुभ				3	स्व	शुभ	
15	धर्मनाथ					1	स्व	शुभ	वेध
16	शान्तिनाथ	अशुभ			0.5		मध्यम	अशुभ	वेध
17	कुन्थुनाथ				1.5		वैर	स्वराशि	
18	अरनाथ	अशुभ				3	स्व	शुभ	
19	मल्लिनाथ					0.5	स्व	अशुभ	
20	मुनिसुव्रत					0.5	स्व	शुभ	
	सुव्रत				0.5		स्व	शुभ	
21	नमिनाथ					1	स्व	अशुभ	
22	नेमिनाथ					1	वैर	शुभ	भवेध
23	पार्श्वनाथ	अशुभ				0.5	वैर	प्रीति	
24	वर्धमान						मध्यम	शुभ	
	महावीरस्वामी					0.5	मध्यम	शुभ	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
वृषभ	शुक्र	तुला	वैश्य	मेष				मृगशिर्ष	पूर्व

साधक अक्षर : श - १० ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	8	गौ	श	लभ्य		मनुष्य	मीन	मध्य
नाम	विरुद्ध	1, 3, 5	व्याघ्र	ट		देय	राक्षस	तुला	मध्य
1	ऋषभदेव	अशुभ				0.5	स्व	श्रेष्ठतर	
	आदिनाथ	अशुभ			0.5		स्व	श्रेष्ठतर	
2	अजितनाथ				0.5		स्व	शुभ	
3	सम्भवनाथ	अशुभ					मध्यम	श्रेष्ठ	वेध
4	अभिनन्दन				0.5		मध्यम	श्रेष्ठ	
5	सुमतिनाथ	अशुभ					अशुभ	प्रीति	
6	पद्मप्रभस्वामी	अशुभ	कुवैर			1	अशुभ	सम	वेध
7	सुपार्श्वनाथ		कुवैर				अशुभ	शत्रु	
8	चन्द्रप्रभस्वामी				1.5		मध्यम	शुभ	वेध
9	सुविधिनाथ	अशुभ					अशुभ	श्रेष्ठतर	
10	शीतलनाथ						स्व	श्रेष्ठतर	वेध
11	श्रेयान्सनाथ						मध्यम	शुभ	
12	वासुपूज्य					0.5	अशुभ	अशुभ	
13	विमलनाथ		स्व			0.5	स्व	स्वराशि	एकभं
14	अनन्तनाथ				0.5		मध्यम	स्वराशि	
15	धर्मनाथ					1.5	मध्यम	मध्यम	वेध
16	शान्तिनाथ						स्व	श्रेष्ठ	वेध
17	कुन्थुनाथ	अशुभ			1		अशुभ	शुभ	
18	अरनाथ				0.5		मध्यम	स्वराशि	
19	मल्लिनाथ	अशुभ				1	मध्यम	श्रेष्ठ	
20	मुनिसुव्रत					1	मध्यम	शुभ	
	सुव्रत						मध्यम	शुभ	
21	नमिनाथ	अशुभ				1.5	मध्यम	श्रेष्ठ	
22	नेमिनाथ	अशुभ	कुवैर			1.5	अशुभ	सम	वेध
23	पार्श्वनाथ		कुवैर			1	अशुभ	शत्रु	
24	वर्धमान	अशुभ	मैत्री			0.5	स्व	सम	
	महावीरस्वामी	अशुभ	मैत्री			1	स्व	सम	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
मीन	गुरु	धन	ब्राह्मण	–				उ.भाद्रपद	पश्चिम

साधक अक्षर : स, सा, सि, सी, सु, सू ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	6	अश्व	श	लभ्य		राक्षस	कुंभ	आद्य
नाम	विरुद्ध	8, 1, 3	महिष	ट		देय	दे. म.	कर्क	आद्य
1	ऋषभदेव	अशुभ				0.5	अशुभ	शुभ	
	आदिनाथ	अशुभ			0.5		अशुभ	शुभ	
2	अजितनाथ				0.5		अशुभ	श्रेष्ठतर	
3	सम्भवनाथ						वैर	मध्यम	
4	अभिनन्दन				0.5		वैर	मध्यम	वेध
5	सुमतिनाथ	अशुभ					स्व	सम	
6	पद्मप्रभस्वामी					1	स्व	प्रीति	
7	सुपार्श्वनाथ						स्व	शुभ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी	अशुभ			1.5		वैर	श्रेष्ठ	
9	सुविधिनाथ	अशुभ					स्व	शुभ	वेध
10	शीतलनाथ						अशुभ	शुभ	
11	श्रेयान्सनाथ						वैर	श्रेष्ठ	
12	वासुपूज्य		स्व			0.5	स्व	स्वराशि	एकभं
13	विमलनाथ	अशुभ				0.5	अशुभ	अशुभ	
14	अनन्तनाथ				0.5		वैर	अशुभ	
15	धर्मनाथ	अशुभ				1.5	वैर	शत्रु	
16	शान्तिनाथ						अशुभ	शुभ	
17	कुन्थुनाथ	अशुभ			1		स्व	श्रेष्ठतर	
18	अरनाथ				0.5		वैर	अशुभ	
19	मल्लिनाथ	अशुभ	मैत्री			1	वैर	शुभ	वेध
20	मुनिसुव्रत					1	वैर	श्रेष्ठ	
	सुव्रत						वैर	श्रेष्ठ	
21	नमिनाथ	अशुभ	मैत्री			1.5	वैर	शुभ	वेध
22	नेमिनाथ					1.5	स्व	प्रीति	
23	पार्श्वनाथ					1	स्व	शुभ	
24	वर्धमान	अशुभ				0.5	अशुभ	प्रीति	वेध
	महावीरस्वामी	अशुभ				1	अशुभ	प्रीति	वेध
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
कुंभ	शनि	मकर	शूद्र	सिंह विना पशु, जलज, कीट				शतभिषा	पश्चिम

साधक अक्षर : ष - १० ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	4	महिष	श	लभ्य		देव	कन्या	आद्य
नाम	विरुद्ध	6, 8, 1	अश्व	ट		देय	राक्षस	मेष	आद्य
1	ऋषभदेव					0.5	मध्यम	श्रेष्ठ	
	आदिनाथ				0.5		मध्यम	श्रेष्ठ	
2	अजितनाथ				0.5		मध्यम	शुभ	
3	सम्भवनाथ						स्व	श्रेष्ठतर	
4	अभिनन्दन				0.5		स्व	श्रेष्ठतर	वेध
5	सुमतिनाथ	अशुभ					वैर	शुभ	
6	पद्मप्रभस्वामी					1	वैर	स्वराशि	
7	सुपार्श्वनाथ						वैर	श्रेष्ठ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी	अशुभ			1.5		स्व	शुभ	
9	सुविधिनाथ	अशुभ					वैर	श्रेष्ठ	वेध
10	शीतलनाथ						मध्यम	श्रेष्ठ	
11	श्रेयान्सनाथ						स्व	मध्यम	
12	वासुपूज्य	अशुभ	वैर			0.5	वैर	प्रीति	वेध
13	विमलनाथ	अशुभ				0.5	मध्यम	सम	
14	अनन्तनाथ				0.5		स्व	सम	
15	धर्मनाथ	अशुभ				1.5	स्व	शुभ	
16	शान्तिनाथ						मध्यम	शत्रु	
17	कुन्थुनाथ				1		वैर	शुभ	
18	अरनाथ				0.5		स्व	सम	
19	मल्लिनाथ	अशुभ	वैर			1	स्व	शत्रु	वेध
20	मुनिसुव्रत					1	स्व	मध्यम	
	सुव्रत						स्व	मध्यम	
21	नमिनाथ	अशुभ	वैर			1.5	स्व	शत्रु	वेध
22	नेमिनाथ					1.5	वैर	स्वराशि	
23	पार्श्वनाथ					1	वैर	श्रेष्ठ	
24	वर्धमान					0.5	मध्यम	स्वराशि	वेध
	महावीरस्वामी					1	मध्यम	स्वराशि	वेध
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
कन्या	बुध	मिथुन	वैश्य	सिंह, धन विना सर्व				हस्त	मध्यम

साधक अक्षर : से, सै, सो, सौ ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	7	सिंह	श	लभ्य		मनुष्य	कुंभ	आद्य
नाम	विरुद्ध	9, 2, 4	हस्ति	ट		देय	राक्षस	कर्क	आद्य
1	ऋषभदेव					0.5	स्व	शुभ	
	आदिनाथ				0.5		स्व	शुभ	
2	अजितनाथ	अशुभ			0.5		स्व	श्रेष्ठतर	
3	सम्भवनाथ						मध्यम	मध्यम	
4	अभिनन्दन				0.5		मध्यम	मध्यम	वेध
5	सुमतिनाथ						अशुभ	सम	
6	पद्मप्रभस्वामी					1	अशुभ	प्रीति	
7	सुपार्श्वनाथ						अशुभ	शुभ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी				1.5		मध्यम	श्रेष्ठ	
9	सुविधिनाथ						अशुभ	शुभ	वेध
10	शीतलनाथ	अशुभ					स्व	शुभ	
11	श्रेयान्सनाथ	अशुभ					मध्यम	श्रेष्ठ	
12	वासुपूज्य					0.5	अशुभ	स्वराशि	वेध
13	विमलनाथ					0.5	स्व	अशुभ	
14	अनन्तनाथ	अशुभ	वैर		0.5		मध्यम	अशुभ	
15	धर्मनाथ					1.5	मध्यम	शत्रु	
16	शान्तिनाथ	अशुभ	वैर				स्व	शुभ	
17	कुन्थुनाथ				1		अशुभ	श्रेष्ठतर	
18	अरनाथ	अशुभ	वैर		0.5		मध्यम	अशुभ	
19	मल्लिनाथ					1	मध्यम	शुभ	वेध
20	मुनिसुव्रत	अशुभ				1	मध्यम	श्रेष्ठ	
	सुव्रत	अशुभ					मध्यम	श्रेष्ठ	
21	नमिनाथ					1.5	मध्यम	शुभ	वेध
22	नेमिनाथ					1.5	अशुभ	प्रीति	
23	पार्श्वनाथ					1	अशुभ	शुभ	
24	वर्धमान					0.5	स्व	प्रीति	वेध
	महावीरस्वामी					1	स्व	प्रीति	वेध
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
कुंभ	शनि	मकर	शूद्र	सिंह विना पशु, जलज, कीट				पू.भाद्रपद	पश्चिम

साधक अक्षर : ह, हा ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	7	बिडाल	श	लभ्य		देव	मिथुन	आद्य
नाम	विरुद्ध	9, 2, 4	उंदिर	ट		देय	राक्षस	कर्क,वृश्चिक	आद्य
1	ऋषभदेव					0.5	मध्यम	सम	
	आदिनाथ				0.5		मध्यम	सम	
2	अजितनाथ	अशुभ			0.5		मध्यम	श्रेष्ठ	
3	सम्भवनाथ						स्व	स्वराशि	
4	अभिनन्दन		स्व		0.5		स्व	स्वराशि	एकभं
5	सुमतिनाथ		वैर				वैर	शुभ	
6	पद्मप्रभस्वामी					1	वैर	श्रेष्ठतर	
7	सुपार्श्वनाथ						वैर	शुभ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी				1.5		स्व	शत्रु	
9	सुविधिनाथ						वैर	सम	वेध
10	शीतलनाथ	अशुभ					मध्यम	सम	
11	श्रेयान्सनाथ	अशुभ					स्व	प्रीति	
12	वासुपूज्य					0.5	वैर	मध्यम	वेध
13	विमलनाथ					0.5	मध्यम	श्रेष्ठ	
14	अनन्तनाथ	अशुभ			0.5		स्व	श्रेष्ठ	
15	धर्मनाथ					1.5	स्व	अशुभतर	
16	शान्तिनाथ	अशुभ					मध्यम	शुभ	
17	कुन्थुनाथ				1		वैर	श्रेष्ठ	
18	अरनाथ	अशुभ			0.5		स्व	श्रेष्ठ	
19	मल्लिनाथ					1	स्व	शुभ	वेध
20	मुनिसुव्रत	अशुभ				1	स्व	प्रीति	
	सुव्रत	अशुभ					स्व	प्रीति	
21	नमिनाथ					1.5	स्व	शुभ	वेध
22	नेमिनाथ					1.5	वैर	श्रेष्ठतर	
23	पार्श्वनाथ					1	वैर	शुभ	
24	वर्धमान					0.5	मध्यम	श्रेष्ठतर	वेध
	महावीरस्वामी					1	मध्यम	श्रेष्ठतर	वेध
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
मिथुन	बुध	कन्या	शूद्र	सिंह, धन विना सर्व				पुनर्वसू	मध्यम

साधक अक्षर : हि, ही ।

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	7	बिडाल	श	लभ्य		देव	कर्क	आद्य
नाम	विरुद्ध	9, 2, 4	उंदिर	ट		देय	राक्षस	मिथुन, कुंभ	आद्य
1	ऋषभदेव					0.5	मध्यम	प्रीति	
	आदिनाथ				0.5		मध्यम	प्रीति	
2	अजितनाथ	अशुभ			0.5		मध्यम	शुभ	
3	सम्भवनाथ						स्व	अशुभतर	
4	अभिनन्दन		स्व		0.5		स्व	अशुभतर	एकभं
5	सुमतिनाथ		वैर				वैर	श्रेष्ठ	
6	पद्मप्रभस्वामी					1	वैर	प्रीति	
7	सुपार्श्वनाथ						वैर	श्रेष्ठ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी				1.5		स्व	मध्यम	
9	सुविधिनाथ						वैर	प्रीति	वेध
10	शीतलनाथ	अशुभ					मध्यम	प्रीति	
11	श्रेयान्सनाथ	अशुभ					स्व	सम	
12	वासुपूज्य					0.5	वैर	शत्रु	वेध
13	विमलनाथ					0.5	मध्यम	मध्यम	
14	अनन्तनाथ	अशुभ			0.5		स्व	मध्यम	
15	धर्मनाथ					1.5	स्व	स्वराशि	
16	शान्तिनाथ	अशुभ					मध्यम	श्रेष्ठतर	
17	कुन्थुनाथ				1		वैर	शुभ	
18	अरनाथ	अशुभ			0.5		स्व	मध्यम	
19	मल्लिनाथ					1	स्व	श्रेष्ठतर	वेध
20	मुनिसुव्रत	अशुभ				1	स्व	सम	
	सुव्रत	अशुभ					स्व	सम	
21	नमिनाथ					1.5	स्व	श्रेष्ठतर	वेध
22	नेमिनाथ					1.5	वैर	प्रीति	
23	पार्श्वनाथ					1	वैर	श्रेष्ठ	
24	वर्धमान					0.5	मध्यम	प्रीति	भवेध
	महावीरस्वामी					1	मध्यम	प्रीति	भवेध
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
कर्क	चंद्र	–	ब्राह्मण	–				पुनर्वसू	मध्यम

साधक अक्षर : हु, हू, हे, है, हो, हौ । (★हो, हौ ३-६-२२ भवेध)

क्रम	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साध्य	स्वकीय	8	मेष	श	लभ्य		देव	कर्क	मध्य
नाम	विरुद्ध	1, 3, 5	वानर	ट		देय	राक्षस	मिथुन, कुंभ	मध्य
1	ऋषभदेव	अशुभ				0.5	मध्यम	प्रीति	
	आदिनाथ	अशुभ			0.5		मध्यम	प्रीति	
2	अजितनाथ				0.5		मध्यम	शुभ	
3	सम्भवनाथ	अशुभ					स्व	अशुभतर	वेध★
4	अभिनन्दन				0.5		स्व	अशुभतर	
5	सुमतिनाथ	अशुभ					वैर	श्रेष्ठ	
6	पद्मप्रभस्वामी	अशुभ				1	वैर	प्रीति	वेध★
7	सुपार्श्वनाथ						वैर	श्रेष्ठ	
8	चन्द्रप्रभस्वामी				1.5		स्व	मध्यम	वेध
9	सुविधिनाथ	अशुभ					वैर	प्रीति	
10	शीतलनाथ		कुवैर				मध्यम	प्रीति	वेध
11	श्रेयान्सनाथ		कुवैर				स्व	सम	
12	वासुपूज्य					0.5	वैर	शत्रु	
13	विमलनाथ					0.5	मध्यम	मध्यम	वेध
14	अनन्तनाथ				0.5		स्व	मध्यम	
15	धर्मनाथ		स्व			1.5	स्व	स्वराशि	एकभं
16	शान्तिनाथ						मध्यम	श्रेष्ठतर	वेध
17	कुन्थुनाथ	अशुभ	मैत्री		1		वैर	शुभ	
18	अरनाथ				0.5		स्व	मध्यम	
19	मल्लिनाथ	अशुभ				1	स्व	श्रेष्ठतर	
20	मुनिसुव्रत		कुवैर			1	स्व	सम	
	सुव्रत		कुवैर				स्व	सम	
21	नमिनाथ	अशुभ				1.5	स्व	श्रेष्ठतर	
22	नेमिनाथ	अशुभ				1.5	वैर	प्रीति	वेध★
23	पार्श्वनाथ					1	वैर	श्रेष्ठ	
24	वर्धमान	अशुभ				0.5	मध्यम	प्रीति	
	महावीरस्वामी	अशुभ				1	मध्यम	प्रीति	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यराशि				नक्षत्र	युजि
कर्क	चंद्र	—	ब्राह्मण	—				पुष्य	मध्यम

श्री धारणागतियंत्र

अनुक्रम

	पृष्ठ नं.
❋ धारणागतियंत्र भूमिका	3
❋ मेलापक संदर्भ ध्यान देने योग्य	4
❋ 20 विहरमान भगवान के नाम	6
❋ वर्गवैर देखनेका कोष्टक	6
❋ पूजक का तीर्थंकरदेव प्रति लेती-देती का कोष्टक	7
❋ धारणागतियंत्र मेलापक-1	8
❋ मेलापक-1 का कोष्टक देखने की रीत	9
❋ धारणागतियंत्र मेलापक-1 (कोष्टके)	11
❋ धारणागतियंत्र मेलापक-2	32
❋ मेलापक-2 का कोष्टक देखने की रीत	32
❋ धारणागतियंत्र मेलापक-2 (कोष्टके)	35
❋ श्री तीर्थंकर राशि-मेल यंत्र	58
❋ मेलापक के बारे में अनुभव की ड़कार	60
परिशिष्ट-1 : श्री शांतिनाथ भगवान के जन्मनक्षत्र भरणी के शास्त्रपाठ	63
2 : नाडीवेध विषयक आवश्यक विचार	64
3 : अभिनंदन स्वामी के जन्मनक्षत्र विषयक आवश्यक विचारणा	65
4 : 24 भगवान के नाम-राशि आदि का कोष्टक	67

धारणागतियंत्र भूमिका

- नूतनबिंब भरवाने से पूर्व अथवा अंजनशलाका हुए प्राचीन जिनबिंब को श्रीसंघ मंदिर में या गृहमंदिर में मूलनायक के रुप में स्थापित करने से पहले पूजक ऐसे गाँव/संघ/ट्रस्ट या श्रावक का, जो भगवान भरवाये जाते है अथवा स्थापित किये जाते है, उनके साथ राशि-योनि-गण आदि छः वस्तुओं का मेलापक देखा जाता है । और यह देखने के कोष्टक को धारणागतियंत्र कहा जाता है ।
- मेलापक देखने के विषय में कल्याणकलिका में कहा गया है कि –

  पूजकस्य जिनेन्द्रस्य लभ्य-देयं परस्परम् ।
  राशि-योनि-गणादीनामानुकूल्यं विलोकयेत् ॥ (भाग-1, पृ. 335)

  अर्थ : पूजक (कोई गाँव (संघ)या श्रावक) और भगवान की लेन-देन, राशि, योनि, गण आदि का परस्पर अनुकूलन देखना ।
- मेलापक के विषय में पूर्वाचार्यो का पारंपरिक श्लोक है कि –

  योनि-गण-राशि-भेदाः लभ्यं वर्गश्च नाडीवेधश्च ।
  नूतनबिम्बविधाने षड्विधमेतद् विलोक्यं ज्ञैः ॥

  अर्थ : नूतन बिंब भरवाने में अनुभवी पुरुष योनि, गण, राशि, लेहना, वर्ग और नाडीवेध – यह 6 वस्तु देखें ।
- यहाँ पूजक और जिन के बीच योनिवैर, गणवैर या वर्गवेर नहीं होना चाहिए अथवा पूजक के योनि आदि बलवान होने चाहिए । उनके बीच राशिमेल होना चाहिए, तथा नाडीवेध नहीं होना चाहिए । उपरांत, पूजक जिन का लेनदार हो, वह भी देखना चाहिए ।
- पंद्रहवी सदी में सूत्रधार मंडनने भी स्वरचित शिल्पग्रंथ देवता मूर्ति प्रकरण मे अ.1, श्लोक 63 में प्रतिमा भरवाने के पूर्व यह षड्वर्ग अवश्य देखने को कहा है अर्थात् कोइ भी धर्म-संप्रदाय में देवप्रतिमा भरवाते वक्त ये षड्वर्ग देखकर, छान-बीन कर के अपने अनुकूल ही देव भरवाना चाहिए ।
- पूर्वोक्त श्लोक में नूतन बिंब के लिए षड्वर्ग देखने को कहा गया है । लेकिन प्राचीन प्रतिमाजी भी षड्वर्गशुद्ध ही स्थापित करने चाहिए । गणवैर, योनिवैर या नाडीवैर आदि

दोषयुक्त प्रतिमाएँ प्राचीन होने पर भी कभी कभी हानिकारक साबित हो सकती है ऐसा प.पू.इतिहासवेत्ता पं.प्र.श्री कल्याणविजयजी अपना अनुभव लिखते है ।

मेलापक संदर्भ में ध्यान देने योग्य

(1) सामान्यतः "जिस के साथ लेहना ज्यादा हो वो भगवान भरवाना ज्यादा अच्छा" ऐसी मानसिकता होती है, लेकिन बृहद् ज्योतिष सार में कहा गया है कि –

वर्णो वश्यं तथा तारा, योनिश्च ग्रहमैत्रकम् ।
गणमैत्रं भकूटं च, नाडी चैते गुणाधिका ॥

अर्थ : (1) वर्ण, (2) वश्य, (3) तारा, (4) योनि, (5) ग्रहमैत्री, (6) गणमैत्री, (7) भकूट और (8) नाडी - उत्तरोत्तर अधिक बलवान है ।

बृहद् धारणायंत्र में कहा गया है कि, "तारा, योनि, वर्ग, लेन-देन, गण, राशि और नाडी; इन में बाद बाद के योग अधिक अधिक बलवान है । जिस जिनेश्वर के साथ का योग ज्यादा बलवान हो वही जिनबिंब भरवाना श्रेष्ठ है" ।

(2) जहाँ पूजक और जिन के जन्मनक्षत्र एक ही हो वहाँ नाडीवेध का दोष हमने गिना नहीं है, परंतु उस भगवान को भी ग्राह्य किया है । कल्याणकलिका में कहा है कि जहाँ देव और धनिक का नक्षत्र एक ही हो वहाँ योनि आदि सर्व बातों की शुद्धि होती है, तथा वह भगवान अनेक पूर्वाचार्यो की अनुमति से ग्राह्य है । (कल्याणकलिका भा.1, पृ. 338)

(3) बृहद् दैवज्ञ रंजन, भाग-2, अध्याय-71, पृष्ठ 264 पर श्लोक 321 में कहा गया है कि –

वर्गवैरं योनिवैरं, गणवैरं नृदूरकम् ।
दुष्टकूटभयं सर्वं, ग्रहमैत्रेण नश्यति ॥

अर्थ : जहाँ राशिपति ग्रहो की परस्पर मैत्री हो वहाँ वर्गवैर, योनीवैर, गणवैर, नृदूरता और दुष्टकूट का समस्त अशुभ फल नष्ट हो जाता है ।

अतः ग्रहमैत्री होने से गणवैरादि अन्य सर्व दोष का नाश होता है । इस विषय के विशेषज्ञ भी वर्तमान में इस मत से भगवान ग्राह्य करते ही है । हमने भी यहाँ प्रस्तुत कोष्टक में जहाँ पूजक और जिन को (1) राशि ऐक्य हो, (2) राशिस्वामि ऐक्य हो अथवा (3) राशिस्वामि ग्रहों की परस्पर प्रीति हो एसे भगवान★ के

चिह्न के साथ यथायोग्य दूसरे और चौथे कोष्टक में मध्यम भंग पर ग्राह्य किये है ।

(4) षड्वर्ग में नाडीवेध के विषय में मुहूर्त चिंतामणि आदि ग्रंथो में भिन्न भिन्न मत देखने को मिलते है । वास्तव में परापूर्व से पूजक और जिन का मेलापक देखने में नाडीवेध दोषस्वरुप माना गया है । प.पू.श्री कल्याणविजयजीने कल्याणकलिका में दिये हुए कोष्टक में नाडीवेध त्याज्य ही माना है । सालों से प्रचलित वर्तमान कोष्टक भी तदनुसार ही है । हमने भी नाडीवेध को अवश्य त्याज्य गिनकर सर्व निरुपण किया है ।

(5) पूजक और जिन के जन्मनक्षत्र एक ही नाडी में आने से नाडीदोष होता है, जो अवश्य त्याज्य कहा है, लेकिन प्रत्येक नक्षत्र के भी चार चरण होते हैं । उसमें अगर चरणभेद से राशिभेद हो जाता है तथा पूजक और जिन की राशि अगर भिन्न भिन्न होती है तो बृहद् धारणायंत्र ग्रंथ में ग्रंथकार मुनिराजश्री दर्शनविजयजी म.सा. (त्रिपुटी म.) ऐसे स्थानो में 'वेध' के बजाए 'भवेध' शब्द का प्रयोग करते है तथा वे भगवान भी मध्यम भंग से ग्राह्य कहते है ।

जिनको वे भगवान मध्यम भंग से ग्राह्य करना हो तो वे उस ग्रंथाधारसे कर सकते है ।

(6) 20 विहरमान भगवान को भी हमने इन कोष्टकों में इटालिक टाइप मे समाविष्ट किया है । वर्तमान में साक्षात् सदेह से विचरते होने से जिनको वे भगवान भरवाने हो, तो वो वही भगवान कोष्टक के आधार पर भरवा सकते है ।

* * *

20 विहरमान भगवान के नाम

1.	सीमंधर	6.	स्वयंप्रभ	11.	वज्रधर	16.	नेमिप्रभ
2.	युगमंधर	7.	ऋषभानन	12.	चंद्रानन	17.	वीरसेन
3.	बाहु	8.	अनंतवीर्य	13.	चंद्रबाहु	18.	महाभद्र
4.	सुबाहु	9.	सुरप्रभ	14.	भुजंगदेव	19.	चंद्रदेवयशा/देवसेन
5.	सुजात	10.	विशाल	15.	ईश्वर	20.	अजीतवीर्य

प्रत्येक विहरमान भगवान के लिये

राशि : धन　　नक्षत्र : उत्तराषाढा　　योनि : नकुल

वर्ग : सर्प　　गण : मनुष्य　　नाडी : अंत्य

वर्ग वैर देखने का कोष्टक

वर्गपति	वर्ग के अक्षर	वर्ग	वैर	वर्ग	वर्ग के अक्षर	वर्गपति
गरुड	अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, अे, अै, ओ, औ	अ	↔	त	त, थ, द, ध, न	सर्प
बिलाड	क, ख, ग, घ, ङ	क	↔	प	प, फ, ब, भ, म	उंदर
सिंह	च, छ, ज, झ, ञ	च	↔	य	य, र, ल, व	हिरण
श्वान	ट, ठ, ड, ढ, ण	ट	↔	श	श, ष, स, ह	मेष

- अ ↔ त : 'अ' और 'त' वर्ग को परस्पर वैर है... इत्यादि देखे ।
- अ, क, च, ट – ये वर्ग बलवान है. त, प, य, श – ये वर्ग निर्बल है ।
- वर्गभेद के 3 प्रकार है । (1) स्ववर्ग से पाँचवा वर्ग शत्रु जानना । (2) स्ववर्ग से चौथा मित्र जानना एवं (3) स्ववर्ग के तीसरा शत्रु जानना ।

पूजक का तीर्थंकर प्रति लेती-देती का कोष्टक

20 विहरमान	8, 15, 20		12, 13, 19		16, (19)	3, 14, 18	2, 7, 10, 11, 17	1, 4, 5, 6, 9
24 तीर्थंकर / पूजक वर्ग	अ (1), 2, 4 14, 18	क 17	च 8	ट 0	त 15, 21, 22	प 6, 19, 20, 23, 24	य 1, 12, 13, (24)	श 3, 5, 7 9, 10, 11, 16
अ	0	ले-0.5	ले-1	दे-2.5	दे-2	ले-2.5	ले-3	दे-0.5
क	दे-0.5	0	दे-3.5	ले-1	ले-1.5	ले-2	दे-1.5	दे-1
च	दे-1	ले-3.5	0	ले-0.5	ले-1	ले-1.5	दे-2	दे-1.5
ट	ले-2.5	दे-1	दे-0.5	0	ले-0.5	दे-3	दे-2.5	ले-2
त	ले-2	दे-1.5	दे-1	दे-0.5	0	ले-0.5	ले-1	ले-1.5
प	दे-2.5	दे-2	दे-1.5	ले-3	दे-0.5	0	ले-0.5	ले-1
य	दे-3	ले-1.5	ले-2	ले-2.5	दे-1	दे-0.5	0	ले-0.5
श	ले-0.5	ले-1	ले-1.5	दे-2	दे-1.5	दे-1	दे-0.5	0

कोष्टक समज : 1 = ऋषभदेव, (1) = आदिनाथ
19 = चंद्रदेवयशा, (19) = देवसेन
24 = महावीर, (24) = वर्धमान
ले = पूजक का जो तो तीर्थंकर का लेणा
दे = पूजक का जो तो तीर्थंकर का देणा
अ, क..... विगेरे वर्ग के अक्षर वर्ग वैर के कोष्टक परसे जानना ।

धारणागतियंत्र मेलापक-1

साधक अक्षर पर से अनुकूल भगवान देखने का मेलापक :

श्री बृहद् धारणायंत्र ग्रंथ के आधार पर हमने भगवान के साथ पूजक के मेलापक देखने का नूतन कोष्टक तैयार किया है, जो यहाँ प्रस्तुत है । इसमें निम्नलिखित विगत नोंधनीय है ।

- मेलापक देखने के लिए कुल चार कोष्टक दिये गये है, जिन में प्रथम के दो कोष्टक षड्वर्गशुद्धि सूचित करते है और बाद के दो कोष्टक चतुर्वर्गशुद्धि सूचित करते है ।
- प्रथम कोष्टक में संपूर्ण षड्वर्गशुद्ध भगवान ग्रहण किए गये है । उपरांत, गणवैर, वर्गवैर या योनिवैर होता है फिर भी साधक के गण, वर्ग या योनि बलवान हो और ग्रहमैत्री कोष्टक के आधार पर ग्रहमैत्री के अंक ज्यादा हो ऐसे भगवान भी 'बग', 'बव' और 'बयो' (पूजक के बलवान गण, वर्ग और योनि), यही संकेत के साथ ग्रहण किये गये है ।
- दूसरे कोष्टक में मध्यम षड्वर्गशुद्ध अर्थात् राशि या गण मध्यम हो ऐसे भगवान ग्रहण किए गये है । उपरांत, उस में भी गणादि वैर हो, फिर भी साधक के गणादि बलवान हो, ग्रहमैत्री के गुणांक ज्यादा हो तो ऐसे भगवान भी ग्रहण किए गये है ।
- तीसरे कोष्टक में प्रथम कोष्टक में सूचित नियम के अनुसार ही भगवान ग्रहण किए गये है, परंतु उसे चतुर्वर्ग(योनि, गण, राशि, नाडीवेध) शुद्ध भगवान माने ।
- चौथे कोष्टक में दूसरे कोष्टक में सूचित नियम अनुसार ही, परंतु चतुर्वर्गशुद्ध मध्यमभंग पर ग्राह्य भगवान ग्रहण किए हैं ।

मेलापक-1 के कोष्टक देखने की रीत

(1) जिस व्यक्ति का प्रसिद्ध नाम जन्मनक्षत्र के अक्षर पर से ही है, उसे प्रथम के दो कोष्टक पर से षड्वर्गशुद्ध जिन नाम ग्रहण करना चाहिए ।

(2) जिसे अपने जन्मनक्षत्र की और उसके आधार पर उसके अक्षर की जानकारी नहीं है, उसे अपने प्रसिद्ध नाम के आद्य अक्षर पर से प्रथम के दो कोष्टकों के आधार पर षड्वर्गशुद्ध नाम ग्रहण करना चाहिए ।

(3) जिसे अपने जन्मनक्षत्र के अक्षर की जानकारी है और उससे अपने प्रचलित नाम का आद्य अक्षर भिन्न है, तो अपने जन्मनक्षत्र के अक्षर के आधार पर प्रस्तुत सभी कोष्टक में से कोई भी भगवान ग्रहण करें और उस भगवान के साथ अपने प्रसिद्ध नाम के आद्य अक्षर के आधार पर लेहना और वर्ग मिलाए । लेहना और वर्ग देखने का कोष्टक यहाँ प्रस्तुत है । जिनमें से वर्गवैर नहीं है ऐसे अथवा साधक का वर्ग बलवान है ऐसे और पूजक का भगवान के पास लेहना है ऐसे भगवान ग्रहण करें ।

जहाँ ऋषभदेव लिखा वहाँ ऋषभदेव नाम ही ग्रहण करें तथा आदिनाथ लिखा वहाँ आदिनाथ नाम ही ग्रहण करें । ऐसा वर्धमान और महावीर नाम में भी जानें ।

नोंध : जिस व्यक्ति का नाम जन्मराशि पर से है, फिर भी जन्मनक्षत्र के चरण के अक्षर पर से नहीं है, उसे भी उपरोक्त तीसरे बिंदु में सूचित जन्मनक्षत्र के चरण के अक्षर के आधार पर चारों कोष्टक में से कोई भी भगवान ग्रहण करना चाहिए और उसके साथ की लेन-देन अपने प्रसिद्ध नाम के अक्षर पर से देखें ।

● प्रत्येक साधक-पूजक अक्षर के साथ उसके नक्षत्र और राशि भी कोष्टक में दी गई है ।

अनुक्रम में उदाहरण :

(1) एक व्यक्ति का नाम, उसका जन्मनक्षत्र मृगशिर्ष के तीसरे चरण अनुसार 'क' अक्षर पर है, तो साधक अक्षर की पंक्ति में 'क, का, कि, की, क्ष' लिखें अक्षर पर के प्रथम कोष्टक में सूचित नमिनाथ, महावीरस्वामी आदि भगवान भरवाना श्रेष्ठ है, तथा दूसरे कोष्टक में सूचित पार्श्वनाथ भगवान भरवाना मध्यम जानें ।

(2) कमल नाम के व्यक्ति को अगर अपने जन्मनक्षत्र के अक्षर का पता नहीं है, तो उसे अपने प्रसिद्ध नाम के आद्य अक्षर 'क' के आधार पर उपरोक्त सूचित प्रथम के दो कोष्टक में से भगवान ग्रहण करना चाहिए ।

(3) एक व्यक्ति का जन्मनक्षत्र मृगशिर्ष तीसरे चरण का अक्षर 'क' है, लेकिन उसका प्रसिद्ध नाम चैतन्य है, तो उसे साधक अक्षर 'क' के चारों कोष्टक में से उत्कृष्टभंग में पहले और तीसरे कोष्टक में से कोई भी भगवान ग्रहण करके अपने प्रसिद्ध नाम चैतन्य के साथ जो तो भगवान का वर्ग और लेहना, वर्गवैर और लेन-देन के कोष्टक पर से मिलाए । तथा मध्यम भंग में दूसरे और चौथे कोष्टक में से कोई भी भगवान ग्रहण करके अपने प्रसिद्ध नाम चैतन्य के साथ जो तो भगवान का वर्ग और लेहना, वर्ग और लेन-देन के कोष्टक पर से मिलाए ।

'क' अक्षर के पहले कोष्टक में कहे गये नमिनाथ, महावीरस्वामि आदि भगवान के साथ चैतन्य के 'च' वर्ग को लेहना है तथा वर्गवैर भी नहीं है, इसलिए वह भगवान ग्रहण करें । तथा तीसरे कोष्टक में कहे गये अनंतनाथ आदि भगवान के साथ 'च' वर्ग को देना है इसलिए उसे त्याग करें ।

मध्यम भंग में दूसरे कोष्टक के पार्श्वनाथ भगवान के साथ तथा चौथे कोष्टक के कुंथुनाथ भगवान के साथ 'च' वर्ग को लेहना है तथा वर्गवैर भी नहीं है, इसलिए उसे ग्रहण करें । तथा अन्य भगवान के साथ लेहना मिलता नहीं है, तथा वर्धमान के साथ वर्गवैर होने से उस भगवान का त्याग करें ।

* * *

जिनमंदिर और वास्तु

- **शंका: जिनमंदिर में वास्तु देखें या नहीं ?**

समाधान: हाँ, देखें तो अच्छा है । वास्तुशास्त्र के कुछ मूलभूत नियम जानने से मंदिर का सविशेष प्रभाव प्राप्त कर सकते है । परंतु, मंदिरवास्तु और गृहवास्तु के कुछ मूलभूत सिद्धांत ही अलग है । जिसे उनके बारे में विशिष्ट ज्ञान न हो ऐसे अच्छे गृहवास्तुशास्त्री भी कभी कभी मंदिर को लाभ के बजाय नुकसान पहुँचा दे ऐसा हो सकता है, हुआ है, इसलिए इस बात को ध्यान में रखनी जरुरी है ।

धारणागतियंत्र मेलापक-1

साधक अक्षर परसे अनुकूल भगवान देखने का मेलापक
धारणागतियंत्र संकेतसूचि

बग, बव, बयो : देव से पूजक के अनुक्रमसे बलवान गण, वर्ग और योनि.

★ **:** ग्रहमैत्री होने पर गणवैरादि सर्व दोष नष्ट होते है उस मतसे ग्राह्य भगवान.

साधक-पूजक अक्षर	1 संपूर्ण + बलवान षड्वर्गशुद्ध	2 मध्यम + बलवान षड्वर्गशुद्ध	3 संपूर्ण + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध	4 मध्यम + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध
अ, आ (मेष- कृत्तिका)	वासुपूज्य 3 विमलनाथ 3 बग मल्लिनाथ 2.5 बग चंद्रप्रभ 1 बग		सुविधिनाथ शांतिनाथ बग नमिनाथ बग	★शीतलनाथ
इ, ई, उ, ऊ, ऐ, औ (वृषभ- कृत्तिका)	वासुपूज्य 3 पद्मप्रभ 2.5 कुंथुनाथ 0.5 विमलनाथ 3 बग वर्धमान 3 बग महावीर 2.5 बग	अभिनंदन 0 बग	नेमिनाथ संभवनाथ बग	
ओ, औ (वृषभ- रोहिणी)	विमलनाथ 3 वर्धमान 3 महावीर 2.5	★वासुपूज्य 3 ★पद्मप्रभ 2.5 अजितनाथ 0 अभिनंदन 0 चंद्रप्रभ 1		संभवनाथ धर्मनाथ ★नेमिनाथ
क, का, कि, की, क्ष (मिथुन- मृगशिर्ष)	नमिनाथ 1.5 महावीर 2 बव मुनिसुव्रत 2 बव मल्लिनाथ 2 बव	★पार्श्वनाथ 2	संभवनाथ अभिनंदन श्रेयांसनाथ अनंतनाथ अरनाथ	वर्धमान अजितनाथ ★कुंथुनाथ ★सुपार्श्व
कु, कू (मिथुन- आर्द्रा)	नेमिप्रभ 1.5 *देवसेन 1.5* *बाहु 2 बव*	मुनिसुव्रत 2 बव ★नेमिनाथ 1.5 ★पद्मप्रभ 2	अजितनाथ विमलनाथ शांतिनाथ	संभवनाथ आदिनाथ/ऋषभदेव शीतलनाथ

अक्षर	1	2	3	4
	भुजंगदेव 2 बव *महाभद्र 2 बव*	★पार्श्वनाथ 2		श्रेयांसनाथ अनंतनाथ अरनाथ ★कुंथुनाथ ★सुपार्श्वनाथ *शेष सर्व विहरमान जिन*
के, कै, को, कौ (मिथुन- पुनर्वसू)	मुनिसुव्रत 2 बव	★पद्मप्रभ 2 ★नेमिनाथ 1.5 ★पार्श्वनाथ 2 *नेमिप्रभ 1.5* *देवसेन 1.5* *बाहु 2 बव* *भुजंगदेव 2 बव* *महाभद्र 2 बव*	संभवनाथ अभिनंदन अनंतनाथ अरनाथ श्रेयांसनाथ	अजितनाथ आदिनाथ/ऋषभदेव शीतलनाथ विमलनाथ शांतिनाथ ★कुंथुनाथ ★सुपार्श्वनाथ *शेष सर्व विहरमान जिन*
ख-10 (मकर-ख- अभिजित् शेष- श्रवण)	नमिनाथ 1.5 मुनिसुव्रत 2 बव मल्लिनाथ 2 बव	महावीर 2 बव धर्मनाथ 1.5 बयो	श्रेयांसनाथ संभवनाथ अभिनंदन चंद्रप्रभ	विमलनाथ शांतिनाथ वर्धमान ★वासुपूज्य
ग, गा, गि, गी (मकर- धनिष्ठा)	पार्श्वनाथ 2 बव मुनिसुव्रत 2 बग, बव	कुंथुनाथ 0 महावीर 2 बव	सुपार्श्वनाथ वासुपूज्य श्रेयांसनाथ बग अजितनाथ बग	वर्धमान
गु, गू, गे, गै (कुंभ- धनिष्ठा)	पार्श्वनाथ 2 बव मुनिसुव्रत 2 बग, बव महावीर 2 बग, बव	कुंथुनाथ 0	सुपार्श्वनाथ सुविधिनाथ वासुपूज्य श्रेयांसनाथ बग अजितनाथ बग वर्धमान बग	सुमतिनाथ

अक्षर	1	2	3	4
गो, गौ, (कुंभ-शतभिषा)	नेमिनाथ 1.5 पार्श्वनाथ 2 बव पद्मप्रभ 2 बव मुनिसुव्रत 2 बग, बव	कुंथुनाथ 0	सुपार्श्वनाथ वासुपूज्य श्रेयांसनाथ बग अजितनाथ बग	सुमतिनाथ
घ-10 ङ-10 (मिथुन-आर्द्रा)		मुनिसुव्रत 2 बव ★नेमिनाथ 1.5 ★पद्मप्रभ 2 ★पार्श्वनाथ 2 *नेमिप्रभ 1.5* *देवसेन 1.5* *बाहु 2 बव* *भुजंगदेव 2 बव* *महाभद्र 2 बव*	अजितनाथ विमलनाथ शांतिनाथ	संभवनाथ आदिनाथ/ऋषभदेव शीतलनाथ श्रेयांसनाथ अनंतनाथ अरनाथ ★सुपार्श्वनाथ ★कुंथुनाथ *शेष सर्व विहरमान जिन*
च, चा, चि, ची (मीन-रेवती)	मल्लिनाथ 1.5 नमिनाथ 1	चंद्रप्रभ 0 महावीर 1.5 धर्मनाथ 1	अनंतनाथ अरनाथ संभवनाथ अभिनंदन शांतिनाथ विमलनाथ बव	वर्धमान बव ★सुविधिनाथ ★शीतलनाथ
चु, चू, चे, चै, चो, चौ (मेष-अश्विनी)	मल्लिनाथ 1.5 मुनिसुव्रत 1.5 नमिनाथ 1 धर्मनाथ 1 *नेमिप्रभ 1* *देवसेन 1* *बाहु 1.5* *भुजंगदेव 1.5* *महाभद्र 1.5*	चंद्रप्रभ 0 *चंद्रानन 0* *चंद्रबाहु 0* *चंद्रदेवयशा 0*	शांतिनाथ आदिनाथ ऋषभदेव शीतलनाथ श्रेयांसनाथ अनंतनाथ अरनाथ संभवनाथ विमलनाथ बव *शेष सर्व विहरमान जिन*	★सुमतिनाथ

अक्षर	1	2	3	4
छ–10 (मिथुन–आर्द्रा)		मुनिसुव्रत 1.5 ★पद्मप्रभ 1.5 ★नेमिनाथ 1 ★कुंथुनाथ 3.5 ★पार्श्वनाथ 1.5 *नेमिप्रभ 1* *देवसेन 1* *बाहु 1.5* *भुजंगदेव 1.5* *महाभद्र 1.5* *चंद्रानन 0* *चंद्रबाहु 0* *चंद्रदेवयशा 0*	अजितनाथ विमलनाथ शांतिनाथ	संभवनाथ आदिनाथ/ऋषभदेव शीतलनाथ श्रेयांसनाथ अनंतनाथ अरनाथ ★सुपार्श्वनाथ *शेष सर्व* *विहरमान जिन*
ज–10 (मकर–ज–जि–उत्तराषाढा, शेष–अभिजित्)		मल्लिनाथ 1.5 महावीर 1.5 नमिनाथ 1 धर्मनाथ 1 चंद्रप्रभ 0	विमलनाथ शांतिनाथ	संभवनाथ अभिनंदन वर्धमान ★वासुपूज्य
झ–10 (मीन–उत्तर भाद्रपद)	*नेमिप्रभ 1* *देवसेन 1* *बाहु 1.5* *भुजंगदेव 1.5* *महाभद्र 1.5*	मल्लिनाथ 1.5 नमिनाथ 1 मुनिसुव्रत 1.5 महावीर 1.5 *चंद्रानन 0* *चंद्रबाहु 0* *चंद्रदेवयशा 0*	विमलनाथ आदिनाथ ऋषभदेव अजितनाथ *शेष सर्व* *विहरमान जिन*	अनंतनाथ अरनाथ अभिनंदन श्रेयांसनाथ वर्धमान ★सुविधिनाथ ★सुमतिनाथ
ट, टा, टि, टी, टु, टू (सिंह–पू. फाल्गुनी)	अजितनाथ 2.5 आदिनाथ 2.5 शीतलनाथ 2 बव *अनंतवीर्य 2.5* *ईश्वर 2.5* *अजीतवीर्य 2.5* *नेमिप्रभ 0.5*	अरनाथ 2.5 संभवनाथ 2 बव धर्मनाथ 0.5 नमिनाथ 0.5 ★सुमतिनाथ 2	विमलनाथ वर्धमान महावीर *शेष सर्व* *विहरमान जिन*	चंद्रप्रभ मल्लिनाथ

अक्षर	1	2	3	4
	देवसेन 0.5 *सीमंधर 2 बव* *सुबाहु 2 बव* *सुजात 2 बव* *स्वयंप्रभ 2 बव* *सुरप्रभ 2 बव*			
टे, टै (सिंह-उत्तरा फाल्गुनी)	अजितनाथ 2.5 आदिनाथ 2.5 शांतिनाथ 2 बव शीतलनाथ 2 बव *अनंतवीर्य 2.5* *ईश्वर 2.5* *अजीतवीर्य 2.5* *नेमिप्रभ 0.5* *देवसेन 0.5* *सीमंधर 2 बव* *सुबाहु 2 बव* *सुजात 2 बव* *स्वयंप्रभ 2 बव* *सुरप्रभ 2 बव*	अनंतनाथ 2.5 अरनाथ 2.5 धर्मनाथ 0.5 संभवनाथ 2 बव ★सुमतिनाथ 2	विमलनाथ ऋषभदेव वर्धमान महावीर *शेष सर्व* *विहरमान जिन*	चंद्रप्रभ
टो, टौ (कन्या-उत्तरा फाल्गुनी)	आदिनाथ 2.5 अजितनाथ 2.5 शीतलनाथ 2 बव *अनंतवीर्य 2.5* *ईश्वर 2.5* *अजीतवीर्य 2.5* *नेमिप्रभ 0.5* *देवसेन 0.5* *सीमंधर 2 बव* *सुबाहु 2 बव* *सुजात 2 बव* *स्वयंप्रभ 2 बव* *सुरप्रभ 2 बव*	संभवनाथ 2 बव अनंतनाथ 2.5 अरनाथ 2.5 श्रेयांसनाथ 2 बव धर्मनाथ 0.5 ★सुपार्श्वनाथ 2 ★नेमिनाथ 0.5	ऋषभदेव वर्धमान महावीर *शेष सर्व* *विहरमान जिन*	विमलनाथ चंद्रप्रभ मुनिसुव्रत ★कुंथुनाथ ★पार्श्वनाथ ★पद्मप्रभ

अक्षर	1	2	3	4
ठ–10 (कन्या–हस्त)	संभवनाथ 2 बव धर्मनाथ 0.5	आदिनाथ 2.5 अजितनाथ 2.5 अनंतनाथ 2.5 अरनाथ 2.5 शीतलनाथ 2 बव श्रेयांसनाथ 2 बव ★नेमिनाथ 0.5 ★सुपार्श्वनाथ 2 *अनंतवीर्य 2.5* *ईश्वर 2.5* *अजीतवीर्य 2.5* *नेमिप्रभ 0.5* *देवसेन 0.5* *सीमंधर 2 बव* *सुबाहु 2 बव* *सुजात 2 बव* *स्वयंप्रभ 2 बव* *सुरप्रभ 2 बव*	चंद्रप्रभ	ऋषभदेव मुनिसुव्रत विमलनाथ ★पार्श्वनाथ ★पद्मप्रभ ★कुंथुनाथ *शेष सर्व* *विहरमान जिन*
ड, डा (कर्क–पुष्य)	धर्मनाथ 0.5 नमिनाथ 0.5	आदिनाथ 2.5 अजितनाथ 2.5 अनंतनाथ 2.5 अरनाथ 2.5 ★सुमतिनाथ 2 *अनंतवीर्य 2.5* *ईश्वर 2.5* *अजीतवीर्य 2.5* *नेमिप्रभ 0.5* *देवसेन 0.5* *सीमंधर 2 बव* *सुबाहु 2 बव* *सुजात 2 बव* *स्वयंप्रभ 2 बव* *सुरप्रभ 2 बव*	मल्लिनाथ	ऋषभदेव वर्धमान महावीर *शेष सर्व* *विहरमान जिन*

अक्षर	1	2	3	4
डि, डी डु, डू, डे, डै, डो, डौ (कर्क- अश्लेषा)	नेमनाथ 0.5 सुविधिनाथ 2 बव धर्मनाथ 0.5 बग नमिनाथ 0.5 बग शीतलनाथ 2 बव, बग	शांतिनाथ 2 बव, बग	पद्मप्रभ मल्लिनाथ बग	चंद्रप्रभ बग विमलनाथ बग
ढ-10 (धन- पूर्वाषाढा)	आदिनाथ 2.5 शीतलनाथ 2 बव *अनंतवीर्य 2.5* *ईश्वर 2.5* *अजीतवीर्य 2.5* *नेमिप्रभ 0.5* *देवसेन 0.5* *सीमंधर 2 बव* *सुबाहु 2 बव* *सुजात 2 बव* *स्वयंप्रभ 2 बव* *सुरप्रभ 2 बव*	अनंतनाथ 2.5 अभिनंदन 2.5 अरनाथ 2.5 नमिनाथ 0.5 ★सुविधिनाथ 2 ★ सुमतिनाथ 2	ऋषभदेव वर्धमान महावीर *शेष सर्व* *विहरमान जिन*	मल्लिनाथ
ण-10 (कन्या- हस्त)	संभवनाथ 2 बव धर्मनाथ 0.5	अजितनाथ 2.5 आदिनाथ 2.5 अनंतनाथ 2.5 अरनाथ 2.5 शीतलनाथ 2 बव श्रेयांसनाथ 2 बव ★सुपार्श्वनाथ 2 ★नेमिनाथ 0.5 *अनंतवीर्य 2.5* *ईश्वर 2.5* *अजीतवीर्य 2.5* *नेमिप्रभ 0.5* *देवसेन 0.5* *सीमंधर 2 बव*	चंद्रप्रभ विमलनाथ	ऋषभदेव मुनिसुव्रत ★पार्श्वनाथ ★कुंथुनाथ ★पद्मप्रभ *शेष सर्व* *विहरमान जिन*

अक्षर	1	2	3	4
		सुबाहु 2 बव *सुजात 2 बव* *स्वयंप्रभ 2 बव* *सुरप्रभ 2 बव*		
त, ता (तुला-स्वाति)	संभवनाथ 1.5	शांतिनाथ 1.5 शीतलनाथ 1.5 वर्धमान 1 महावीर 0.5 मल्लिनाथ 0.5 बयो धर्मनाथ 0 नमिनाथ 0 ★अभिनंदन 2 ★वासुपूज्य 1 ★पद्मप्रभ 0.5		
ति, ती तु, तू, ते, तै (तुला-विशाखा)	सुपार्श्वनाथ 1.5 सुविधिनाथ 1.5 वासुपूज्य 1 पद्मप्रभ 0.5 पार्श्वनाथ 0.5 शीतलनाथ 1.5 बग संभवनाथ 1.5 बग वर्धमान 1 बग, बयो महावीर 0.5 बग, बयो	नेमनाथ 0 ★अभिनंदन 2		
तो, तौ (वृश्चिक-विशाखा)	सुविधिनाथ 1.5 वासुपूज्य 1 पद्मप्रभ 0.5 शांतिनाथ 1.5 बग मल्लिनाथ 1.5 बग	नेमिनाथ 0 नमिनाथ 0 बग	चंद्रप्रभ बग	
थ-10 (मीन-उत्तर भाद्रपद)	विमलनाथ 1 *सीमंधर 1.5* *सुबाहु 1.5* *सुजात 1.5*	श्रेयांसनाथ 1.5 वर्धमान 1 महावीर 0.5 मुनिसुव्रत 0.5	अजितनाथ *शेष सर्व विहरमान जिन*	अभिनंदन

अक्षर	1	2	3	4
	स्वयंप्रभ 1.5 *सुरप्रभ 1.5* *युगमंधर 1* *ऋषभानन 1* *विशाल 1* *व्रजधर 1* *वीरसेन 1* *बाहु 0.5* *भुजंगदेव 0.5* *महाभद्र 0.5*	मल्लिनाथ 0.5 नमिनाथ 0 ★ऋषभदेव 1 ★ आदिनाथ 2 ★अरनाथ 2 ★अनंतनाथ 2 ★सुविधिनाथ 1.5 ★*अनंतवीर्य 2* ★*ईश्वर 2* ★*अजीतवीर्य 2*		
द, दा (कुंभ-पूर्व भाद्रपद)	शीतलनाथ 1.5 शांतिनाथ 1.5 बयो	श्रेयांसनाथ 1.5 मुनिसुव्रत 0.5 संभवनाथ 1.5 ★अजितनाथ 2 ★सुपार्श्वनाथ 1.5 ★पार्श्वनाथ 0.5		चंद्रप्रभ ★कुंथुनाथ
दि, दी (मीन-पूर्व भाद्रपद)	शीतलनाथ 1.5 विमलनाथ 1 शांतिनाथ 1.5 बयो *सीमंधर 1.5* *सुबाहु 1.5* *सुजात 1.5* *स्वयंप्रभ 1.5* *सुरप्रभ 1.5* *युगमंधर 1* *ऋषभानन 1* *विशाल 1* *व्रजधर 1* *वीरसेन 1* *बाहु 0.5* *भुजंगदेव 0.5* *महाभद्र 0.5*	संभवनाथ 1.5 श्रेयांसनाथ 1.5 मुनिसुव्रत 0.5 धर्मनाथ 0 ★अनंतनाथ 2 ★अरनाथ 2 ★आदिनाथ 2 ★सुमतिनाथ 1.5 ★ऋषभदेव 1 ★अनंतवीर्य 2 ★ईश्वर 2 ★अजितवीर्य 2	अजितनाथ *शेष सर्व* *विहरमान जिन*	चंद्रप्रभ

अक्षर	1	2	3	4
दु, दू (मीन-उत्तर भाद्रपद)	विमलनाथ 1 *सीमंधर 1.5* *सुबाहु 1.5* *सुजात 1.5* *स्वयंप्रभ 1.5* *सुरप्रभ 1.5* *युगमंधर 1* *ऋषभानन 1* *विशाल 1* *व्रजधर 1* *वीरसेन 1* *बाहु 0.5* *भुजंगदेव 0.5* *महाभद्र 0.5*	श्रेयांसनाथ 1.5 वर्धमान 1 महावीर 0.5 मुनिसुव्रत 0.5 मल्लिनाथ 0.5 नमिनाथ 0 ★आदिनाथ 2 ★सुविधिनाथ 1.5 ★सुमतिनाथ 1.5 ★अनंतनाथ 2 ★अरनाथ 2 ★ऋषभदेव 1 ★*अनंतवीर्य 2* ★*ईश्वर 2* ★*अजितवीर्य 2*	अजितनाथ *शेष सर्व* *विहरमान जिन*	अभिनंदन
दे, दै, दो, दौ (मीन-रेवती)	संभवनाथ 1.5 मल्लिनाथ 0.5	शीतलनाथ 1.5 शांतिनाथ 1.5 विमलनाथ 1 वर्धमान 1 महावीर 0.5 धर्मनाथ 0 नमिनाथ 0 ★अनंतनाथ 2 ★अरनाथ 2 ★सुविधिनाथ 1.5	अभिनंदन चंद्रप्रभ	
ध-10 (धन-पूर्वाषाढा)	शीतलनाथ 1.5 वर्धमान 1 महावीर 0.5 *सीमंधर 1.5* *सुबाहु 1.5* *सुजात 1.5*	मल्लिनाथ 0.5 नमिनाथ 0 ★ऋषभदेव 1 ★आदिनाथ 2 ★अनंतनाथ 2 ★अरनाथ 2		अभिनंदन

अक्षर	1	2	3	4
	स्वयंप्रभ 1.5 *सुरप्रभ 1.5* *युगमंधर 1* *ऋषभानन 1* *विशाल 1* *व्रजधर 1* *वीरसेन 1* *बाहु 0.5* *भुजंगदेव 0.5* *महाभद्र 0.5*	★सुविधिनाथ 1.5 ★सुमतिनाथ 1.5 ★*अनंतवीर्य 2 अबव* ★*ईश्वर 2 अबव* ★ *अजीतवीर्य 2 अबव*		
न, ना, नि, नी, नु, नू, ने, नै (वृश्चिक-अनुराधा)	श्रेयांसनाथ 1.5 मल्लिनाथ 0.5 मुनिसुव्रत 0.5	वर्धमान 1 महावीर 0.5 नमिनाथ 0 ★सुमतिनाथ 1.5 *सीमंधर 1.5* *सुबाहु 1.5* *सुजात 1.5* *स्वयंप्रभ 1.5* *सुरप्रभ 1.5* *युगमंधर 1* *ऋषभानन 1* *विशाल 1* *व्रजधर 1* *वीरसेन 1* *बाहु 0.5* *भुजंगदेव 0.5* *महाभद्र 0.5*	चंद्रप्रभ अनंतनाथ अरनाथ	ऋषभदेव आदिनाथ अजितनाथ *शेष सर्व* *विहरमान जिन*
नो, नौ (वृश्चिक-ज्येष्ठा)	सुमतिनाथ 1.5 शांतिनाथ 1.5 पद्मप्रभ 0.5 शीतलनाथ 1.5 बग विमलनाथ 1 बग	नेमिनाथ 0	चंद्रप्रभ बग	कुंथुनाथ

अक्षर	1	2	3	4
प, पा, पि, पी (कन्या- उत्तरा फाल्गुनी)	शीतलनाथ 1 वर्धमान 0.5 ऋषभदेव 0.5 *सीमंधर 1* *सुबाहु 1* *सुजात 1* *स्वयंप्रभ 1* *सुरप्रभ 1* *युगमंधर 0.5* *ऋषभानन 0.5* *विशाल 0.5* *वज्रधर 0.5* *वीरसेन 0.5*	संभवनाथ 1 श्रेयांसनाथ 1 विमलनाथ 0.5 मुनिसुव्रत 0 महावीर 0 ★सुपार्श्वनाथ 1 ★पार्श्वनाथ 0 ★पद्मप्रभ 0 ★नेमिनाथ 0 बाहु 0 भुजंगदेव 0 महाभद्र 0	आदिनाथ अजितनाथ *शेष सर्व* *विहरमान जिन*	चंद्रप्रभ धर्मनाथ अरनाथ अनंतनाथ ★कुंथुनाथ
पु, पू (कन्या- हस्त)	संभवनाथ 1	श्रेयांसनाथ 1 शीतलनाथ 1 विमलनाथ 0.5 ऋषभदेव 0.5 मुनिसुव्रत 0 ★सुपार्श्वनाथ 1 ★पद्मप्रभ 0 ★पार्श्वनाथ 0 *सीमंधर 1* *सुबाहु 1* *सुजात 1* *स्वयंप्रभ 1* *सुरप्रभ 1* *युगमंधर 0.5* *ऋषभानन 0.5* *विशाल 0.5* *वज्रधर 0.5*	चंद्रप्रभ	अजितनाथ आदिनाथ अनंतनाथ धर्मनाथ अरनाथ ★नेमिनाथ ★कुंथुनाथ *शेष सर्व* *विहरमान जिन*

अक्षर	1	2	3	4
		वीरसेन 0.5 *बाहु 0* *भुजंगदेव 0* *महाभद्र 0*		
पे, पै, पो, पौ (कन्या- चित्रा)	सुपार्श्वनाथ 1 सुविधिनाथ 1 सुमतिनाथ 1 वासुपूज्य 0.5 वर्धमान 0.5 बग, बयो	पार्श्वनाथ 0 पद्मप्रभ 0 महावीर 0 बग, बयो	कुंथुनाथ नेमिनाथ अभिनंदन बग अजितनाथ बग	
फ-10 (धन- पूर्वाषाढा)	शीतलनाथ 1 वर्धमान 0.5 ऋषभदेव 0.5 *सीमंधर 1* *सुबाह 1* *सुजात 1* *स्वयंप्रभ 1* *सुरप्रभ 1* *युगमंधर 0.5* *ऋषभानन 0.5* *विशाल 0.5* *वज्रधर 0.5* *वीरसेन 0.5*	महावीर 0 मल्लिनाथ 0 ★सुविधिनाथ 1 ★सुमतिनाथ 1 *बाहु 0* *भुजंगदेव 0* *महाभद्र 0*	आदिनाथ *शेष सर्व* *विहरमान जिन*	अरनाथ अनंतनाथ नमिनाथ अभिनंदन
ब, बा, बि, बी, बु, बू (वृषभ- रोहिणी)	वर्धमान 0.5 विमलनाथ 0.5	संभवनाथ 1 महावीर 0 ★वासुपूज्य 0.5 ★पद्मप्रभ 0	अजितनाथ	अभिनंदन चंद्रप्रभ धर्मनाथ ★नेमिनाथ
बे, बै, बो, बौ (वृषभ- मृगशिर्ष)	श्रेयांसनाथ 1 संभवनाथ 1	मुनिसुव्रत 0 वर्धमान 0.5 महावीर 0 ★वासुपूज्य 0.5	अभिनंदन अनंतनाथ अरनाथ	अजितनाथ ★कुंथुनाथ

अक्षर	1	2	3	4
भ, भा, भि, भी (धन-मूल)	सुविधिनाथ 1 सुमतिनाथ 1 सुपार्श्वनाथ 1 शीतलनाथ 1 बग शांतिनाथ 1 बग विमलनाथ 0.5 बग ऋषभदेव 0.5 बग *सीमंधर 1 बग* *सुबाहु 1 बग* *सुजात 1 बग* *स्वयंप्रभ 1 बग* *सुरप्रभ 1 बग* *युगमंधर 0.5 बग* *ऋषभानन 0.5 बग* *विशाल 0.5 बग* *वज्रधर 0.5 बग* *वीरसेन 0.5 बग*	पद्मप्रभ 0 पार्श्वनाथ 0 *बाहु 0 बग* *भुजंगदेव 0 बग* *महाभद्र 0 बग*	नेमनाथ आदिनाथ बग अनंतनाथ बग अरनाथ बग चंद्रप्रभ बग, बयो *शेष सर्व* *विहरमान* *जिन बग*	
भु, भू (धन-पूर्वाषाढा)	शीतलनाथ 1 वर्धमान 0.5 ऋषभदेव 0.5 *सीमंधर 1* *सुबाहु 1* *सुजात 1* *स्वयंप्रभ 1* *सुरप्रभ 1* *युगमंधर 0.5* *ऋषभानन 0.5* *विशाल 0.5* *वज्रधर 0.5* *वीरसेन 0.5*	मल्लिनाथ 0 महावीर 0 ★सुविधिनाथ 1 ★सुमतिनाथ 1 *बाहु 0* *भुजंगदेव 0* *महाभद्र 0*	आदिनाथ *शेष सर्व* *विहरमान जिन*	अनंतनाथ अरनाथ नमिनाथ अभिनंदन

अक्षर	1	2	3	4
भे, भै (धन-उत्तराषाढा)	शीतलनाथ 1 शांतिनाथ 1 विमलनाथ 0.5 वर्धमान 0.5 •ऋषभदेव 0.5	महावीर 0 मल्लिनाथ 0 ★सुविधिनाथ 1	•आदिनाथ	चंद्रप्रभ नमिनाथ अभिनंदन धर्मनाथ
भो, भौ (मकर-उत्तराषाढा)	शांतिनाथ 1 विमलनाथ 0.5	मल्लिनाथ 0 वर्धमान 0.5 महावीर 0 ★वासुपूज्य 0.5		अभिनंदन चंद्रप्रभ धर्मनाथ नमिनाथ
म, मा, मि, मी, मु, मू, मे, मै (सिंह-मघा)	सुमतिनाथ 1 सुविधिनाथ 1 शांतिनाथ 1 बग शीतलनाथ 1 बग विमलनाथ 0.5 बग वर्धमान 0.5 बग	वासुपूज्य 0.5 पद्मप्रभ 0 महावीर 0 बग	नेमिनाथ धर्मनाथ बग चंद्रप्रभ बग मल्लिनाथ बग नमिनाथ बग	
मो, मौ (सिंह-पूर्वा फाल्गुनी)	ऋषभदेव 0.5 वर्धमान 0.5 *सीमंधर 1* *सुबाहु 1* *सुजात 1* *स्वयंप्रभ 1* *सुरप्रभ 1* *युगमंधर 0.5* *ऋषभानन 0.5* *विशाल 0.5* *वज्रधर 0.5* *वीरसेन 0.5*	मल्लिनाथ 0 महावीर 0 ★सुमतिनाथ 1 ★सुविधिनाथ 1 *बाहु 0* *भुजंगदेव 0* *महाभद्र 0*	आदिनाथ अजितनाथ *शेष सर्व* *विहरमान जिन*	अनंतनाथ अरनाथ नमिनाथ

● प.पू.मुनिश्री दर्शनविजयजी के मतसे यहाँ नाडीपादवेध होता है, जो अधमाधम कहा गया है अतः ऋषभदेव या आदिनाथ भगवान ग्राह्य नही है । पूजक और जिनका जन्मनक्षत्र अेक ही होने से नाडीवेध दोष गिना नही जाता, वह मतसे ऋषभदेव तथा आदिनाथ नामसे भगवान ग्राह्य हो सकते है ।

अक्षर	1	2	3	4
य, या, यि, यी, यु, यू (वृश्चिक- ज्येष्ठा)	सुमतिनाथ 0.5 शांतिनाथ 0.5 बग *सीमंधर 0.5 बग* *सुबाहु 0.5 बग* *सुजात 0.5 बग* *स्वयंप्रभ 0.5 बग* *सुरप्रभ 0.5 बग*	कुंथुनाथ 1.5 ★चंद्रप्रभ 2 ऋषभदेव 0 बग ★ *चंद्रानन 2* ★ *चंद्रबाहु 2* ★ *चंद्रदेवयशा 2*	पद्मप्रभ नेमिनाथ आदिनाथ बग *शेष सर्व* *विहरमान जिन बग*	
ये, यै यो, यौ (धन- मूल)	सुमतिनाथ 0.5 सुपार्श्वनाथ 0.5 सुविधिनाथ 0.5 शांतिनाथ 0.5 बग शीतलनाथ 0.5 बग *सीमंधर 0.5 बग* *सुबाहु 0.5 बग* *सुजात 0.5 बग* *स्वयंप्रभ 0.5 बग* *सुरप्रभ 0.5 बग*	विमलनाथ 0 बग ★चंद्रप्रभ 2 ऋषभदेव 0 बग ★ *चंद्रानन 2* ★ *चंद्रबाहु 2* ★ *चंद्रदेवयशा 2*	पद्मप्रभ नेमिनाथ पार्श्वनाथ आदिनाथ बग अनंतनाथ बग अरनाथ बग *शेष सर्व* *विहरमान जिन बग*	
र, रा, रि, री, ऋ (तुला- चित्रा)	कुंथुनाथ 1.5 सुमतिनाथ 0.5 सुपार्श्वनाथ 0.5 सुविधिनाथ 0.5 श्रेयांसनाथ 0.5 बग	वासुपूज्य 0 वर्धमान 0 बग	नेमिनाथ पद्मप्रभ पार्श्वनाथ अजितनाथ बग मुनिसुव्रत बग महावीर बग	
रु, रू, रे, रै, रो, रौ (तुला- स्वाति)	संभवनाथ 0.5	शीतलनाथ 0.5 शांतिनाथ 0.5 वर्धमान 0 ★वासुपूज्य 0	धर्मनाथ अभिनंदन	महावीर नमिनाथ मल्लिनाथ ★पद्मप्रभ ★नेमिनाथ

अक्षर	1	2	3	4
ल, ला (मेष-अश्विनी)	संभवनाथ 0.5 श्रेयांसनाथ 0.5	शांतिनाथ 0.5 शीतलनाथ 0.5 विमलनाथ 0 ऋषभदेव 0 ★चंद्रप्रभ 2 ★सुमतिनाथ 0.5 *सीमंधर 0.5* *सुबाहु 0.5* *सुजात 0.5* *स्वयंप्रभ 0.5* *सुरप्रभ 0.5* ★ *चंद्रानन 2* ★ *चंद्रबाहु 2* ★ *चंद्रदेवयशा 2*	मल्लिनाथ नमिनाथ अनंतनाथ अरनाथ धर्मनाथ मुनिसुव्रत	आदिनाथ *शेष सर्व* *विहरमान जिन*
लि, ली, लु, लू, ले, लै, लो, लौ (मेष-भरणी)	शांतिनाथ 0.5 सीमंधर 0.5 सुबाहु 0.5 सुजात 0.5 स्वयंप्रभ 0.5 सुरप्रभ 0.5	श्रेयांसनाथ 0.5 ऋषभदेव 0 ★सुमतिनाथ 0.5 ★सुविधिनाथ 0.5 ★ *चंद्रानन 2* ★ *चंद्रबाहु 2* ★ *चंद्रदेवयशा 2*	आदिनाथ *शेष सर्व* *विहरमान जिन*	मल्लिनाथ नमिनाथ अनंतनाथ अरनाथ अभिनंदन मुनिसुव्रत श्रेयांसनाथ
व, वा, वि, वी, वु, वू (वृषभ-रोहिणी)		विमलनाथ 0 वर्धमान 0 संभवनाथ 0.5 ★वासुपूज्य 0	अजितनाथ महावीर	अभिनंदन धर्मनाथ चंद्रप्रभ ★पद्मप्रभ ★नेमिनाथ

अक्षर	1	2	3	4
वे, वै वो, वौ (वृषभ- मृगशिर्ष)	श्रेयांसनाथ 0.5 संभवनाथ 0.5	★कुंथुनाथ 1.5 ★सुपार्श्वनाथ 0.5 ★वासुपूज्य 0	मुनिसुव्रत अभिनंदन अनंतनाथ अरनाथ	अजितनाथ वर्धमान महावीर ★पार्श्वनाथ
श-10 (मीन- उत्तर भाद्रपद)	आदिनाथ 0.5 अजितनाथ 0.5 *चंद्रानन 1.5* *चंद्रबाहु 1.5* *चंद्रदेवयशा 1.5* *अनंतवीर्य 0.5* *ईश्वर 0.5* *अजीतवीर्य 0.5*	अनंतनाथ 0.5 अरनाथ 0.5 अभिनंदन 0.5 श्रेयांसनाथ 0 ★सुविधिनाथ 0 ★सुमतिनाथ 0 *सीमंधर 0* *सुबाहु 0* *सुजात 0* *स्वयंप्रभ 0* *सुरप्रभ 0*	ऋषभदेव विमलनाथ *शेष सर्व* *विहरमान जिन*	मल्लिनाथ नमिनाथ मुनिसुव्रत वर्धमान महावीर
ष-10 (कन्या- हस्त)	चंद्रप्रभ 1.5	अजितनाथ 0.5 आदिनाथ 0.5 अनंतनाथ 0.5 अरनाथ 0.5 संभवनाथ 0 शीतलनाथ 0 श्रेयांसनाथ 0 ★कुंथुनाथ 1 ★सुपार्श्वनाथ 0 *चंद्रानन 1.5* *चंद्रबाहु 1.5* *चंद्रदेवयशा 1.5* *अनंतवीर्य 0.5* *ईश्वर 0.5* *अजीतवीर्य 0.5* *सीमंधर 0*	धर्मनाथ	ऋषभदेव विमलनाथ मुनिसुव्रत ★पद्मप्रभ ★नेमिनाथ ★पार्श्वनाथ *शेष सर्व* *विहरमान जिन*

अक्षर	1	2	3	4
		सुबाहु 0 सुजात 0 स्वयंप्रभ 0 सुरप्रभ 0		
स, सा, सि, सी, सु, सू (कुंभ- शतभिषा)	कुंथुनाथ 1 अजितनाथ 0.5 बग आदिनाथ 0.5 बग *चंद्रानन 1.5 बग* *चंद्रबाहु 1.5 बग* *चंद्रदेवयशा 1.5 बग* *अनंतवीर्य 0.5 बग* *ईश्वर 0.5 बग* *अजीतवीर्य 0.5 बग*	सुपार्श्वनाथ 0 सुमतिनाथ 0 शीतलनाथ 0 बग श्रेयांसनाथ 0 बग *सीमंधर 0 बग* *सुबाहु 0 बग* *सुजात 0 बग* *स्वयंप्रभ 0 बग* *सुरप्रभ 0 बग*	वासुपूज्य पार्श्वनाथ पद्मप्रभ ऋषभदेव बग नेमिनाथ मुनिसुव्रत बग *शेष सर्व* *विहरमान जिन बग*	
से, सै, सो, सौ (कुंभ- पूर्व भाद्रपद)	आदिनाथ 0.5 अजितनाथ 0.5 *चंद्रानन 1.5* *चंद्रबाहु 1.5* *चंद्रदेवयशा 1.5* *अनंतवीर्य 0.5* *ईश्वर 0.5* *अजीतवीर्य 0.5*	चंद्रप्रभ 1.5 श्रेयांसनाथ 0 संभवनाथ 0 शीतलनाथ 0 ★कुंथुनाथ 1 ★सुपार्श्वनाथ 0 *सीमंधर 0* *सुबाहु 0* *सुजात 0* *स्वयंप्रभ 0* *सुरप्रभ 0*	ऋषभदेव *शेष सर्व* *विहरमान जिन*	मुनिसुव्रत ★पार्श्वनाथ
ह, हा (मिथुन- पुनर्वसू)	अभिनंदन 0.5 अनंतनाथ 0.5 अरनाथ 0.5	अजितनाथ 0.5 आदिनाथ 0.5 संभवनाथ 0 श्रेयांसनाथ 0 शीतलनाथ 0 ★कुंथुनाथ 1	मुनिसुव्रत	विमलनाथ ऋषभदेव शांतिनाथ ★पद्मप्रभ ★सुपार्श्वनाथ ★पार्श्वनाथ

अक्षर	1	2	3	4
		चंद्रानन 1.5 *चंद्रबाहु 1.5* *चंद्रदेवयशा 1.5* *अनंतवीर्य 0.5* *ईश्वर 0.5* *अजीतवीर्य 0.5* *सीमंधर 0* *सुबाहु 0* *सुजात 0* *स्वयंप्रभ 0* *सुरप्रभ 0*		*शेष सर्व* *विहरमान जिन*
हि, ही (कर्क– पुनर्वसू)		चंद्रप्रभ 0.5 आदिनाथ 0.5 अजितनाथ 0.5 अनंतनाथ 0.5 अरनाथ 0.5 शांतिनाथ 0 शीतलनाथ 0 श्रेयांसनाथ 0 ★सुमतिनाथ 0 *चंद्रानन 1.5* *चंद्रबाहु 1.5* *चंद्रदेवयशा 1.5* *अनंतवीर्य 0.5* *ईश्वर 0.5* *अजीतवीर्य 0.5* *सीमंधर 0* *सुबाहु 0* *सुजात 0* *स्वयंप्रभ 0* *सुरप्रभ 0*	धर्मनाथ	विमलनाथ मुनिसुव्रत ऋषभदेव *शेष सर्व* *विहरमान जिन*

अक्षर	1	2	3	4
हु, हू हे, है, हो, हौ (कर्क- पुष्य)		आदिनाथ 0.5 अजितनाथ 0.5 अनंतनाथ 0.5 अरनाथ 0.5 *सुमतिनाथ 0 *चंद्रानन 1.5* *चंद्रबाहु 1.5* *चंद्रदेवयशा 1.5* *अनंतवीर्य 0.5* *ईश्वर 0.5* *अजीतवीर्य 0.5* *सीमंधर 0* *सुबाहु 0* *सुजात 0* *स्वयंप्रभ 0* *सुरप्रभ 0*	धर्मनाथ मल्लिनाथ नमिनाथ	ऋषभदेव वर्धमान महावीर *शेष सर्व* *विहरमान जिन*

नवग्रह और दशदिक्पाल के जैन स्वरुप

- हमारी उपलब्ध साहित्य परंपरा में 10वीं सदी के प्राचीनतम सर्वमान्य ग्रंथ निर्वाणकलिका में तथा आचारदिनकर में नवग्रह और दशदिक्पाल का स्वरुपवर्णन प्राप्त होता है, फिर भी आज तक के जिनमंदिरों में उनके शिल्प तथा ग्रहमूर्तिओं के स्वरुप तथा शांतिस्नात्र इत्यादि विधिविधानों में होते पाटलापूजनों में पाटला पर के उनके स्वरुप वैदिक परंपरा के अनुसार ही होतें हैं, जो सोचनीय है ।
- जैनशास्त्रप्रमाण उपरांत प्राचीन द्रष्टांतप्रमाण और अनुभवी विद्वानो के साथ हुए विचारविमर्श के बाद नवग्रह और दशदिक्पाल के जैन स्वरुप निर्धारित करके 'जैन शिल्प विधान' शिल्पग्रंथ में उनका सचित्र विवरण दिया गया है ।
- जैन नवग्रह तथा दशदिक्पाल की मूर्तियाँ वह स्वरुप की ही भरवाई जाएँ तथा विधिविधानों में उपयोगी पाटलाओं में भी अब वही स्वरुप के नवग्रह-दशदिक्पाल के चित्र हो ऐसा अपेक्षित है ।

धारणागतियंत्र मेलापक-2

जो तो निश्चित भगवान कौन कौन-से साधक अक्षर पर ग्राह्य बनते हैं वह देखने का मेलापक :

- उपरोक्त मेलापक देखने के लिए कुल चार कोष्टक दिये गये है, जिन में से प्रथम के दो कोष्टक षड्वर्गशुद्धि सूचित करते है और बाद के दोनों कोष्टक चतुर्वर्गशुद्धि सूचित करते है ।
- प्रथम कोष्टक में दिखाये गये साधक अक्षर पर जो तो भगवान संपूर्ण षड्वर्गशुद्धिवाले ग्राह्य बनते है । उपरांत, गणवैर, वर्गवैर या योनिवैर होने पर भी साधक के गण, वर्ग या योनि यदि बलवान है और ग्रहमैत्री कोष्टक के आधार पर, ग्रहमैत्री के अंक ज्यादा है, तो ऐसे अक्षर भी बग, बव और बयो (पूजक/साधक के बलवान गण, वर्ग और योनि), इस संकेत के साथ ग्रहण किये गये है ।
- दूसरे कोष्टक में दिखाये गये अक्षर पर, जो तो भगवान मध्यम षड्वर्गशुद्धिवाले ग्राह्य बनते है अर्थात् उसमें राशि या गण मध्यम होते है । उपरांत, यहाँ पर भी गणादि वैर हो, फिर भी साधक के गणादि बलवान हो, ग्रहमैत्री के गुणांक ज्यादा हो, तो ऐसे साधक अक्षर भी ग्रहण किये गये है ।
- तीसरे कोष्टक में प्रथम कोष्टक में सूचित नियम अनुसार ही साधक अक्षर ग्रहण किये गये है, परंतु वह चतुर्वर्ग(योनि, गण, राशि और नाडीवेध) शुद्ध अक्षर जानें ।
- चौथे कोष्टक में दूसरे कोष्टक में सूचित नियम अनुसार ही, लेकिन चतुर्वर्गशुद्ध मध्यमभंग में ग्राह्य साधक अक्षर ग्रहण किये गये है ।

मेलापक-2 के कोष्टक देखने की पद्धति

- आपको जो भगवान भरवाने की भावना-इच्छा हो, वे भगवान आपके खुद के या परिवार के अन्य कोई सदस्य के नाम पर ग्राह्य बनते है कि नहीं, वह जानने के लिए प्रस्तुत कोष्टक अत्यंत उपयोगी बनेगा । ऐसे ही, संघ या ट्रस्ट को, जो तो भगवान ग्राह्य बनते है कि नहीं, वह भी जान सकेंगे ।

(1) अगर व्यक्ति को जन्मनक्षत्र की और उसके आधार पर उसके चरण अक्षर की जानकारी नहीं है, उसे अपने प्रसिद्ध नाम का आद्याक्षर, जो तो भगवान के कोष्टक में प्रथम दो कोष्टक में मिलता हो, तो वह भगवान उस व्यक्ति को षड्वर्गशुद्ध ग्राह्य बनते है ऐसा जानें ।

(2) अगर व्यक्ति का नाम जन्मनक्षत्र के चरण अक्षर पर से ही है और जो तो भगवान के कोष्टक में पहले दो कोष्टक में वे अक्षर मिलते है, तो वे भगवान उस व्यक्ति को षड्वर्गशुद्ध ग्राह्य बनते है ऐसा जानें ।

(3) अगर व्यक्ति को जन्मनक्षत्र के चरण अक्षर का पता है और उन्हीं से प्रचलित नाम का आद्यअक्षर भिन्न है, उसे अपने जन्मनक्षत्र के चरण अक्षर, जो तो भगवान के कोष्टक में चारों कोष्टक में से कहीं भी मिलता है, उसे वह भगवान चतुर्वर्गशुद्ध ग्राह्य बनते है । बाद में वह व्यक्ति अपना प्रचलित नाम के आद्यअक्षर के साथ, जो तो भगवान के साथ का वर्गमेल और लेन-देन देखें । अगर वर्गवैर नहीं है अथवा व्यक्ति/साधक का वर्ग बलवान है और साधक-पूजक का जो तो भगवान के पास से लेहना है, तो वे भगवान जो तो व्यक्ति को षड्वर्गशुद्ध ग्राह्य बनते है ।

नोंध : (1) कभी कभी व्यक्ति का नाम जन्मराशि पर से है फिर भी जन्मनक्षत्र के चरण अक्षर पर से नहीं है, उसे भी उपरोक्त तीसरे बिंदु में सूचित किया गया है उसके अनुसार ही जन्मनक्षत्र के चरण अक्षर के आधार पर षड्वर्गशुद्ध भगवान ग्राह्य करने चाहिए ।

(2) वर्गमेल और लेन-देन देखने का कोष्टक आगे दिया गया है ।

(3) विशेष स्पष्टता हेतु जो तो साधक अक्षर के साथ ही उसकी राशि और नक्षत्र भी कोष्टक में दिये गये है । तथा प्रथम के दो कोष्टक में जो तो भगवान के साथ का लेहना भी साधक अक्षर के साथ ही दिखाया गया है ।

(4) आदिनाथ और ऋषभदेव तथा महावीर और वर्धमान, ऐसे अलग नामों से कोष्टक दिये गये है । वहाँ पर वही नाम से भगवान ग्राह्य समजें ।

(5) 20 विहरमान जिन में से ज्यादा प्रचलित ऐसे श्री सीमंधरस्वामि भगवान का कोष्टक भी अंत में स्वतंत्र रुप में दिया गया है ।

अनुक्रम में उदाहरण :

(1) सुनील नाम के व्यक्ति को उसके जन्मनक्षत्र और उसके आधार पर उसके चरण अक्षर की जानकारी नहीं है । श्री आदिनाथ भगवान उसे ग्राह्य है कि नहीं, वह उसे जानना है तो उसके प्रसिद्ध नाम का आद्याक्षर 'सु' आदिनाथ भगवान संबंधित कोष्टक में पहले दो कोष्टक में आते है कि नहीं वह देखें । यहाँ, प्रथम कोष्टक में ही 'सु' अक्षर है, इसलिए सुनील को आदिनाथ भगवान संपूर्ण षड्वर्गशुद्ध से ग्राह्य है ऐसा जानें । उसका लेहना 0.5 जानें तथा बग संज्ञा है इसलिए साधक सुनील का गण बलवान है ऐसा निश्चित होता है ।

(2) धर्मेश नाम के व्यक्ति की राशि धन और जन्मनक्षत्र पूर्वाषाढा है । नक्षत्र के चरण अक्षर ध-10 है । अर्थात् जन्मनक्षत्र के चरण अक्षरों पर से ही नाम है । श्री आदिनाथ भगवान उसे ग्राह्य है कि नहीं वह जानने के लिए आदिनाथ भगवान संबंधित प्रथम के दो कोष्टक में ध-10 (धन-पूर्वाषाढा) है कि नहीं वह देखें । यहाँ पर, दूसरे कोष्टक में ही वह मिल जाता है इसलिए धर्मेश को आदिनाथ भगवान मध्यम भंग पर षड्वर्गशुद्ध ग्राह्य है ऐसा जानें । तथा उसका लेहना 2 जानें ।

(3) हेमार्य नाम के व्यक्ति की जन्मराशि सिंह और जन्मनक्षत्र पूर्वाफाल्गुनी है तथा नक्षत्र के चरण अक्षर 'मो, मौ' है । अर्थात् प्रचलित नाम का आद्याक्षर नक्षत्र के चरण अक्षर पर नहीं है । अब, हेमार्य को आदिनाथ भगवान ग्राह्य है कि नहीं वह देखना है तो मो-मौ (सिंह-पू.फाल्गुनी) अक्षर भी आदिनाथ भगवान संबंधित कोष्टक में चारों कोष्टक में से कहीं भी उपलब्ध हो तो आदिनाथ भगवान हेमार्य को चतुर्वर्गशुद्ध रुप से ग्राह्य गिनें । यहाँ, तीसरे ही कोष्टक में वही अक्षर प्राप्त होते है । अब आदिनाथ भगवान की हेमार्य के साथ की लेन-देन और वर्गमेल देखना होता है । उसके कोष्टक पर से वह मिलाने से, जिन और पूजक के बीच वर्गवैर नहीं है, तथा हेमार्य को आदिनाथ भगवान के पास 0.5 लेहना है । ऐसे, हेमार्य को आदिनाथ भगवान षड्वर्गशुद्ध से ग्राह्य बनते है ऐसा जानें ।

* * *

धारणागतियंत्र मेलापक-2

जो तो नियत भगवान कौन कौन-से साधक अक्षर से ग्राह्य बनते है वो देखने का मेलापक

धारणागतियंत्र संकेतसूचि : बग, बव, बयो : देव से अधिक पूजकके अनुक्रमसे बलवान गण, वर्ग और योनि ।

★ : ग्रहमैत्री होते गणवैरादि सर्व दोष नष्ट होते है वो मतसे ग्राह्य भगवान ।

1 संपूर्ण + बलवान षड्वर्गशुद्ध	2 मध्यम + बलवान षड्वर्गशुद्ध	3 संपूर्ण + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध	4 मध्यम + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध
1. श्री आदिनाथ भगवान			
ट-टा, टि-टी, टु-टू/2.5 (सिंह-पू.फाल्गुनी) टे-टै/2.5 (सिंह-उ.फाल्गुनी) टो-टौ/2.5 (कन्या-उ.फाल्गुनी) ढ-10/2.5 (धन-पूर्वाषाढा) श-10/0.5 (मीन-उ.भाद्रपद) स-सा, सि-सी, सु-सू/0.5 बग (कुंभ-शतभिषा) से-सै, सो-सौ/0.5 (कुंभ-पू.भाद्रपद)	ठ-10/2.5 (कन्या-हस्त) ड-डा/2.5 (कर्क-पुष्य) ण-10/2.5 (कन्या-हस्त) थ-10/★ (मीन-उ.भाद्रपद) दि-दी/2★ (मीन-पू.भाद्रपद) दु-दू/2★ (मीन-उ.भाद्रपद) ध-10/2★ (धन-पूर्वाषाढा) ष-10/0.5 (कन्या-हस्त) ह,हा/0.5 (मिथुन-पुनर्वसू) हि-ही/0.5 (कर्क-पुनर्वसू) हु-हू, हे-है, हो-हौ/0.5 (कर्क-पुष्य)	चु-चू, चे-चै, चो-चौ (मेष-अश्विनी) झ-10 (मीन-उ.भाद्रपद) प-पा, पि-पी (कन्या-उ.फाल्गुनी) फ-10 (धन-पूर्वाषाढा) भ-भा, भि-भी/बग(धन-मूल) भु-भू (धन-पूर्वाषाढा) मो-मौ (सिंह-पू.फाल्गुनी) य-या, यि-यी, यु-यू/बग (वृश्चिक-ज्येष्ठा) ये-यै, यो-यौ/बग (धन-मूल) लि-ली, लु-लू, ले-लै, लो-लौ (मेष-भरणी)	कु-कू (मिथुन-आर्द्रा) के-कै, को-कौ (मिथुन-पुनर्वसू) घ-10, ङ-10 (मिथुन-आर्द्रा) छ-10 (मिथुन-आर्द्रा) न-ना, नि-नी, नु-नू, ने-नै (वृश्चिक-अनुराधा) पु-पू (कन्या-हस्त) ल-ला (मेष-अश्विनी)

1. संपूर्ण + बलवान षड्वर्गशुद्ध	2. मध्यम + बलवान षड्वर्गशुद्ध	3. संपूर्ण + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध	4. मध्यम + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध
1. श्री ऋषभदेव भगवान			
प-पा, पि-पी/0.5 (कन्या-उ.फाल्गुनी) फ-10/0.5 (धन-पूर्वाषाढा) भ-भा, भि-भी / 0.5 बग (धन-मूल) भु-भू / 0.5 (धन-पूर्वाषाढा) मो-मौ / 0.5 (सिंह-पू.फाल्गुनी)	थ-10 / 1★ (मीन-उ.भाद्रपद) दि-दी / 1★ (मीन-पू.भाद्रपद) दु-दू / 1 ★ (मीन-उ.भाद्रपद) ध-10 / 1 ★ (धन-पूर्वाषाढा) पु-पू/0.5 (कन्या-हस्त) य-या, यि-यी, यु-यू / 0 बग (वृश्चिक-ज्येष्ठा) ये-यै, यो-यौ / 0 बग (धन-मूल) ल-ला / 0 (मेष-अश्विनी) लि-ली, लु-लू, ले-लै, लो-लौ / 0 (मेष-भरणी)	चु-चू, चे-चै, चो-चौ (मेष-अश्विनी) टे-टै (सिंह-उ.फाल्गुनी) टो-टौ (कन्या-उ.फाल्गुनी) ढ-10 (धन-पूर्वाषाढा) श-10 (मीन-उ.भाद्रपद) स-सा, सि-सी, सु-सू/बग (कुंभ-शतभिषा) से-सै, सो-सौ (कुंभ-पू.भाद्रपद)	कु-कू (मिथुन-आर्द्रा) के-कै, को-कौ (मिथुन-पुनर्वसू) घ-10, ङ-10 (मिथुन-आर्द्रा) छ-10 (मिथुन-आर्द्रा) ठ-10 (कन्या-हस्त) ड-डा (कर्क-पुष्य) ण-10 (कन्या-हस्त) ष-10 (कन्या-हस्त) ह-हा (मिथुन-पुनर्वसू) हि-ही (कर्क-पुनर्वसू) हु-हू, हे-है, हो-हौ (कर्क-पुष्य)
2. श्री अजितनाथ भगवान			
ट-टा, टि-टी, टु-टू / 2.5 (सिंह-पू.फाल्गुनी) टे-टै/2.5 (सिंह-उ.फाल्गुनी) टो-टौ/2.5 (कन्या-उ.फाल्गुनी) श-10/0.5 (मीन-उ.भाद्रपद) स-सा, सि-सी, सु-सू/0.5 बग (कुंभ-शतभिषा)	ओ-औ/0 (वृषभ-रोहिणी) ठ-10/2.5 (कन्या-हस्त) ड-डा/2.5 (कर्क-पुष्य) ण-10 / 2.5 (कन्या-हस्त) द-दा/2★ (कुंभ-पू.भाद्रपद) ष-10/0.5 (कन्या-हस्त) ह-हा / 0.5 (मिथुन-पुनर्वसू)	कु-कू (मिथुन-आर्द्रा) ग-गा, गि-गी/बग (मकर-धनिष्ठा) गु-गू, गे-गै/बग (कुंभ-धनिष्ठा) गो-गौ / बग (कुंभ-शतभिषा) घ-10, ङ-10 (मिथुन-आर्द्रा) छ-10 (मिथुन-आर्द्रा) झ-10 (मीन-उ.भाद्रपद)	क-का, कि-की, क्ष (मिथुन-मृगशिर्ष) के-कै, को-कौ (मिथुन-पुनर्वसू) न-ना, नि-नी, नु-नू, ने-नै (वृश्चिक-अनुराधा) पु-पू (कन्या-हस्त) बे-बै, बो-बौ (वृषभ-मृगशिर्ष) वे-वै, वो-वौ (वृषभ-मृगशिर्ष)

1. संपूर्ण + बलवान षड्वर्गशुद्ध	2. मध्यम + बलवान षड्वर्गशुद्ध	3. संपूर्ण + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध	4. मध्यम + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध
से-सै, सो-सौ/0.5 (कुंभ-पू.भाद्रपद)	हि-ही/0.5 (कर्क-पुनर्वसू) हु-हू, हे-है, हो-हौ/0.5 (कर्क-पुष्य)	थ-10 (मीन-उ.भाद्रपद) दि-दी (मीन-पू.भाद्रपद) दु-दू (मीन-उ.भाद्रपद) प-पा, पि-पी (कन्या-उ.फाल्गुनी) पे-पै, पो-पौ / बग(कन्या-चित्रा) ब-बा, बि-बी, बु-बू (वृषभ-रोहिणी) मो-मौ (सिंह-पू.फाल्गुनी) र-रा, रि-री / बग (तुला-चित्रा) व-वा, वि-वी, वु-वू (वृषभ-रोहिणी)	
3. श्री संभवनाथ भगवान			
ठ-10/2 बव (कन्या-हस्त) ण-10/2 बव (कन्या-हस्त) त-ता/1.5 (तुला-स्वाति) ति-ती, तु-तू, ते-तै/1.5 बग (तुला-विशाखा) दे-दै, दो-दौ/1.5 (मीन-रेवती) पु-पू/1 (कन्या-हस्त) बे-बै, बो-बौ/1 (वृषभ-मृगशिर्ष) रु-रू, रे-रै, रो-रौ / 0.5 (तुला-स्वाति)	ट-टा, टि-टी, टु-टू/2 बव (सिंह-पू.फाल्गुनी) टे-टै/2 बव (सिंह-उ.फाल्गुनी) टो-टौ/2 बव (कन्या-उ.फाल्गुनी) द-दा/1.5 (कुंभ-पू.भाद्रपद) दि-दी/1.5 (मीन-पू.भाद्रपद) प-पा, पि-पी/1 (कन्या-उ.फाल्गुनी) ब-बा, बि-बी, बु-बू/1 (वृषभ-रोहिणी) व-वा, वि-वी, वु-वू / 0.5	इ-ई, उ-ऊ, अे-अै / बग (वृषभ-कृत्तिका) क-का, कि-की, क्ष (मिथुन-मृगशिर्ष) के-कै, को-कौ (मिथुन-पुनर्वसू) ख-10 (मकर-ख:अभिजित्, शेष:श्रवण) च-चा, चि-ची (मीन-रेवती) चु-चू, चे-चै, चो-चौ (मेष-अश्विनी)	ओ-औ (वृषभ-रोहिणी) कु-कू (मिथुन-आर्द्रा) घ-10, ङ-10 (मिथुन-आर्द्रा) छ-10 (मिथुन-आर्द्रा) ज-10 (मकर-ज-जि:उत्तराषाढा, शेष: अभिजित्)

1. संपूर्ण + बलवान षड्वर्गशुद्ध	2. मध्यम + बलवान षड्वर्गशुद्ध	3. संपूर्ण + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध	4. मध्यम + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध
ल-ला/0.5 (मेष-अश्विनी) वे-वै, वो-वौ/0.5 (वृषभ-मृगशिर्ष)	(वृषभ-रोहिणी) ष-10/0 (कन्या-हस्त) से-सै, सो-सौ/0 (कुंभ-पू.भाद्रपद) ह-हा/0 (मिथुन-पुनर्वसू)		
4. श्री अभिनंदनस्वामी भगवान			
ह-हा/0.5 (मिथुन-पुनर्वसू)	इ-ई, उ-ऊ, अे-अै/0 बव (वृषभ-कृत्तिका) ओ-औ/0 (वृषभ-रोहिणी) ढ-10/2.5 (धन-पूर्वाषाढा) त-ता/2★ (तुला-स्वाति) ति-ती, तु-तू, ते-तै/2★ (तुला-विशाखा) श-10/0.5 (मीन-उ.भाद्रपद)	क-का, कि-की, क्ष (मिथुन-मृगशिर्ष) के-कै, को-कौ (मिथुन-पुनर्वसू) ख-10 (मकर-ख:अभिजित्, शेष:श्रवण) च-चा, चि-ची (मीन-रेवती) दे-दै, दो-दौ (मीन-रेवती) पे-पै, पो-पौ/बग (कन्या-चित्रा) बे-बै, बो-बौ (वृषभ-मृगशिर्ष) रु-रू, रे-रै, रो-रौ (तुला-स्वाति) वे-वै, वो-वौ (वृषभ-मृगशिर्ष)	ज-10 (मकर-ज-जि:उत्तराषाढा, शेष:अभिजित्) झ-10 (मीन-उ.भाद्रपद) थ-10 (मीन-उ.भाद्रपद) दु-दू (मीन-उ.भाद्रपद) ध-10 (धन-पूर्वाषाढा) फ-10 (धन-पूर्वाषाढा) ब-बा, बि-बी, बु-बू (वृषभ-रोहिणी) भु-भू (धन-पूर्वाषाढा) भे-भै (धन-उत्तराषाढा) भो-भौ (मकर-उत्तराषाढा) लि-ली, लु-लू, ले-लै, लो-लौ (मेष-भरणी) व-वा, वि-वी, वु-वू (वृषभ-रोहिणी)

1. संपूर्ण + बलवान षड्वर्गशुद्ध	2. मध्यम + बलवान षड्वर्गशुद्ध	3. संपूर्ण + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध	4. मध्यम + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध
5. श्री सुमतिनाथ भगवान			
नो-नौ/1.5 (वृश्चिक-ज्येष्ठा) पे-पै, पो-पौ/1 (कन्या-चित्रा) भ-भा, भि-भी/1 (धन-मूल) म-मा, मि-मी, मु-मू, मे-मै/1 (सिंह-मघा) य-या, यि-यी, यु-यू/0.5 (वृश्चिक-ज्येष्ठा) ये-यै, यो-यौ/0.5 (धन-मूल) र-रा, रि-री, ऋ/0.5 (तुला-चित्रा)	ट-टा, टि-टी, टु-टू/2★ (सिंह-पू.फाल्गुनी) टे-टै/2 ★ (सिंह-उ.फाल्गुनी) ड-डा/2 ★ (कर्क-पुष्य) ढ-10/2 ★ (धन-पूर्वाषाढा) दि-दी/1.5 ★ (मीन-पू.भाद्रपद) दु-दू/1.5 ★ (मीन-उ.भाद्रपद) ध-10/1.5 ★ (धन-पूर्वाषाढा) न-ना, नि-नी, नु-नू, ने-नै/ 1.5 ★ (वृश्चिक-अनुराधा) फ-10/1 ★ (धन-पूर्वाषाढा) भु-भू/1★ (धन-पूर्वाषाढा) मो-मौ/1 ★ (सिंह-पू.फाल्गुनी) ल-ला/0.5 ★ (मेष-अश्विनी) लि-ली, लु-लू, ले-लै, लो-लौ /0.5 ★ (मेष-भरणी) श-10/0 ★ (मीन-उ.भाद्रपद)		गु-गू, गे-गै (कुंभ-धनिष्ठा) गो-गौ (कुंभ-शतभिषा) चु-चू, चे-चै, चो-चौ / ★ (मेष-अश्विनी) झ-10/★ (मीन-उ.भाद्रपद)

1. संपूर्ण + बलवान षड्वर्गशुद्ध	2. मध्यम + बलवान षड्वर्गशुद्ध	3. संपूर्ण + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध	4. मध्यम + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध
	स-सा, सि-सी, सु-सू/0 (कुंभ-शतभिषा) हि-ही/0 ★ (कर्क-पुनर्वसू) हु-हू, हे-है, हो-हौ/0★ (कर्क-पुष्य)		
6. श्री पद्मप्रभस्वामी भगवान			
इ-ई, उ-ऊ, अे-अै/2.5 (वृषभ-कृत्तिका) गो-गौ/2 बव (कुंभ-शतभिषा) ति-ती, तु-तू, ते-तै/0.5 (तुला-विशाखा) तो-तौ/0.5 (वृश्चिक-विशाखा) नो-नौ/0.5 (वृश्चिक-ज्येष्ठा)	ओ-औ/2.5 ★ (वृषभ-रोहिणी) कु-कू/2 ★ (मिथुन-आर्द्रा) के-कै, को-कौ/2 ★ (मिथुन-पुनर्वसू) घ-10, ङ-10/2 ★ (मिथुन-आर्द्रा) छ-10/1.5 ★ (मिथुन-आर्द्रा) त-ता/0.5 ★ (तुला-स्वाति) प-पा,पि-पी/0★ (कन्या-उ.फाल्गुनी) पु-पू/0 ★ (कन्या-हस्त) पे-पै, पो-पौ/0 (कन्या-चित्रा) ब-बा, बि-बी, बु-बू/0 ★ (वृषभ-रोहिणी) भ-भा, भि-भी/0 ★ (धन-मूल) म-मा, मि-मी, मु-मू, मे-मै/0 (सिंह-मघा)	डि-डी, डु-डू, डे-डै, डो-डौ (कर्क-अश्लेषा) य-या, यि-यी, यु-यू (वृश्चिक-ज्येष्ठा) ये-यै, यो-यौ (धन-मूल) र-रा, रि-री, ऋ (तुला-चित्रा) स-सा, सि-सी, सु-सू (कुंभ-शतभिषा)	टो-टौ/★ (कन्या-उ.फाल्गुनी) ठ-10 / ★ (कन्या-हस्त) ण-10/★ (कन्या-हस्त) रु-रू, रे-रै, रो-रौ/★ (तुला-स्वाति) व-वा, वि-वी, वु-वू/★ (वृषभ-रोहिणी) ष-10/★ (कन्या-हस्त) ह-हा/★ (मिथुन-पुनर्वसू)

1. संपूर्ण + बलवान षड्वर्गशुद्ध	2. मध्यम + बलवान षड्वर्गशुद्ध	3. संपूर्ण + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध	4. मध्यम + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध
7. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान			
ति-ती, तु-तू, ते-तै/1.5 (तुला-विशाखा) पे-पै, पो-पौ / 1 (कन्या-चित्रा) भ-भा, भि-भी/1 (धन-मूल) ये-यै, यो-यौ/0.5 (धन-मूल) र-रा, रि-री, ऋ/0.5 (तुला-चित्रा)	टो-टौ/2 ★ (कन्या-उ.फाल्गुनी) ठ-10/2 ★ (कन्या-हस्त) ण-10/2 ★ (कन्या-हस्त) द-दा/1.5 ★ (कुंभ-पू.भाद्रपद) प-पा, पि-पी/1 ★ (कन्या-उ.फाल्गुनी) पु-पू/1 ★ (कन्या-हस्त) वे-वै, वो-वौ/0.5 ★ (वृषभ-मृगशिर्ष) ष-10/0 ★ (कन्या-हस्त) स-सा, सि-सी, सु-सू/0 (कुंभ-शतभिषा) से-सै, सो-सौ/0 ★ (कुंभ-पू.भाद्रपद)	ग-गा, गि-गी (मकर-धनिष्ठा) गु-गू, गे-गै (कुंभ-धनिष्ठा) गो-गौ (कुंभ-शतभिषा)	क-का, कि-की, क्ष/★ (मिथुन-मृगशिर्ष) कु-कू/★ (मिथुन-आर्द्रा) के-कै, को-कौ/★ (मिथुन-पुनर्वसू) घ-10, ङ-10/★ (मिथुन-आर्द्रा) छ-10/★ (मिथुन-आर्द्रा) ह-हा/★ (मिथुन-पुनर्वसू)
8. श्री चंद्रप्रभस्वामी भगवान			
अ-आ/1 बग (मेष-कृत्तिका) ष-10 / 1.5 (कन्या-हस्त)	ओ-औ/1 (वृषभ-रोहिणी) च-चा, चि-ची / 0 (मीन-रेवती) चु-चू, चे-चै, चो-चौ / 0 (मेष-अश्विनी)	ख-10 (मकर-ख : अभिजित्, शेष : श्रवण) ठ-10 (कन्या-हस्त) ण-10 (कन्या-हस्त)	ट-टा, टि-टी, टु-टू (सिंह-पू.फाल्गुनी) टे-टै (सिंह-उ.फाल्गुनी) टो-टौ (कन्या-उ.फाल्गुनी)

1. संपूर्ण + बलवान षड्वर्गशुद्ध	2. मध्यम + बलवान षड्वर्गशुद्ध	3. संपूर्ण + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध	4. मध्यम + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध
	ज-10/0 (मकर-ज-जि : उत्तराषाढा, शेष : अभिजित्) य-या, यि-यी, यु-यू/2 ★ (वृश्चिक-ज्येष्ठा) ये-यै, यो-यौ/2 ★ (धन-मूल) ल-ला/2 ★ (मेष-अश्विनी) से-सै, सो-सौ / 1.5 (कुंभ-पू.भाद्रपद) हि-ही / 1.5 (कर्क-पुनर्वसू)	तो-तौ/बग (वृश्चिक-विशाखा) दे-दै, दो-दौ (मीन-रेवती) न-ना, नि-नी, नु-नू, ने-नै (वृश्चिक-अनुराधा) नो-नौ / बग (वृश्चिक-ज्येष्ठा) पु-पू (कन्या-हस्त) भ-भा, भि-भी / बग बयो (धन-मूल) म-मा, मि-मी, मु-मू, मे-मै / बग (सिंह-मघा)	डि-डी, डु-डू, डे-डै, डो-डौ / बग (कर्क-अश्लेषा) द-दा (कुंभ-पू.भाद्रपद) दि-दी (मीन-पू.भाद्रपद) प-पा, पि-पी (कन्या-उ.फाल्गुनी) ब-बा, बि-बी, बु-बू (वृषभ-रोहिणी) भे-भै (धन-उत्तराषाढा) भो-भौ (मकर-उत्तराषाढा) व-वा, वि-वी, वु-वू (वृषभ-रोहिणी)
9. श्री सुविधिनाथ भगवान			
डि-डी, डु-डू, डे-डै, डो-डौ /2 बव (कर्क-अश्लेषा) ति-ती, तु-तू, ते-तै/1.5 (तुला-विशाखा) तो-तौ / 1.5 (वृश्चिक-विशाखा) पे-पै, पो-पौ/1 (कन्या-चित्रा) भ-भा, भि-भी / 1 (धन-मूल) म-मा, मि-मी, मु-मू, मे-मै / 1 (सिंह-मघा)	ढ-10/2 ★ (धन-पूर्वाषाढा) थ-10/1.5 ★ (मीन-उ.भाद्रपद) दु-दू/1.5 ★ (मीन-उ.भाद्रपद) दे-दै, दो-दौ/1.5 ★ (मीन-रेवती) ध-10/1.5 ★ (धन-पूर्वाषाढा) फ-10/1 ★ (धन-पूर्वाषाढा) भु-भू/1 ★ (धन-पूर्वाषाढा) भे-भै/1 ★ (धन-उत्तराषाढा) मो-मौ/1 ★ (सिंह-पू.फाल्गुनी)	अ-आ (मेष-कृत्तिका) गु-गू, गे-गै (कुंभ-धनिष्ठा)	च-चा, चि-ची/★ (मीन-रेवती) झ-10/★ (मीन-उ.भाद्रपद)

1. संपूर्ण + बलवान षड्वर्गशुद्ध	2. मध्यम + बलवान षड्वर्गशुद्ध	3. संपूर्ण + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध	4. मध्यम + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध
ये-यै, यो-यौ/0.5 (धन-मूल) र-रा, रि-री, ऋ/0.5 (तुला-चित्रा)	लि-ली, लु-लू, ले-लै, लो-लौ /0.5 ★ (मेष-भरणी) श-10/0 ★ (मीन-उ.भाद्रपद)		
10. श्री शीतलनाथ भगवान			
ट-टा, टि-टी, टु-टू/2 बव (सिंह-पू.फाल्गुनी) टे-टै/2 बव (सिंह-उ.फाल्गुनी) टो-टौ/2 बव (कन्या-उ.फाल्गुनी) डि-डी, डु-डू, डे-डै, डो-डौ /2 बग बव (कर्क-अश्लेषा) ढ-10/2 बव (धन-पूर्वाषाढा) ति-ती, तु-तू, ते-तै/1.5 बग (तुला-विशाखा) द-दा/1.5 (कुंभ-पू.भाद्रपद) दि-दी/1.5 (मीन-पू.भाद्रपद) ध-10/1.5 (धन-पूर्वाषाढा) नो-नौ/1.5 बग (वृश्चिक-ज्येष्ठा) प-पा, पि-पी/1 (कन्या-उ.फाल्गुनी) फ-10/1 (धन-पूर्वाषाढा) भ-भा, भि-भी/1 बग (धन-मूल)	ठ-10/2 बव (कन्या-हस्त) ण-10/2 बव (कन्या-हस्त) त-ता/1.5 (तुला-स्वाति) दे-दै, दो-दौ / 1.5 (मीन-रेवती) पु-पू/1 (कन्या-हस्त) रु-रू, रे-रै, रो-रौ /0.5 (तुला-स्वाति) ल-ला/0.5 (मेष-अश्विनी) ष-10/0 (कन्या-हस्त) स-सा, सि-सी, सु-सू /0 बग (कुंभ-शतभिषा) से-सै, सो-सौ/0 (कुंभ-पू.भाद्रपद) ह-हा/0 (मिथुन-पुनर्वसू) हि-ही/0 (कर्क-पुनर्वसू)	चु-चू, चे-चै, चो-चौ (मेष-अश्विनी)	अ-आ/★ (मेष-कृत्तिका) कु-कू (मिथुन-आर्द्रा) के-कै, को-कौ (मिथुन-पुनर्वसू) घ-10, ङ-10 (मिथुन-आर्द्रा) च-चा, चि-ची/★ (मीन-रेवती) छ-10 (मिथुन-आर्द्रा)

1. संपूर्ण + बलवान षड्वर्गशुद्ध	2. मध्यम + बलवान षड्वर्गशुद्ध	3. संपूर्ण + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध	4. मध्यम + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध
भु-भू/1 (धन-पूर्वाषाढा) भे-भै/1 ★ (धन-उत्तराषाढा) म-मा, मि-मी, मु-मू, मे-मै/1 बग (सिंह-मघा) ये-यै, यो-यौ/0.5 बग (धन-मूल)			
11. श्री श्रेयांसनाथ भगवान			
न-ना, नि-नी, नु-नू, ने-नै / 1.5 (वृश्चिक-अनुराधा) बे-बै, बो-बौ/1 (वृषभ-मृगशिर्ष) र-रा, रि-री, ऋ/0.5 बग (तुला-चित्रा) ल-ला/0.5 (मेष-अश्विनी) वे-वै, वो-वौ/0.5 (वृषभ-मृगशिर्ष)	टो-टौ/2 बव (कन्या-उ.फाल्गुनी) ठ-10/2 बव (कन्या-हस्त) ण-10/2 बव (कन्या-हस्त) थ-10/1.5 (मीन-उ.भाद्रपद) द-दा/1.5 (कुंभ-पू.भाद्रपद) दि-दी/1.5 (मीन-पू.भाद्रपद) दु-दू/1.5 (मीन-उ.भाद्रपद) प-पा, पि-पी/1 (कन्या-उ.फाल्गुनी) पु-पू/1 (कन्या-हस्त) लि-ली, लु-लू, ले-लै, लो-लौ / 0.5 (मेष-भरणी) श-10/0 (मीन-उ.भाद्रपद) ष-10/0 (कन्या-हस्त)	क-का, कि-की, क्ष (मिथुन-मृगशिर्ष) के-कै, को-कौ (मिथुन-पुनर्वसू) ख-10 (मकर-ख : अभिजित्, शेष : श्रवण) ग-गा, गि-गी/बग (मकर-धनिष्ठा) गु-गू, गे-गै/बग (कुंभ-धनिष्ठा) गो-गौ / बग (कुंभ - शतभिषा)	कु-कू (मिथुन-आर्द्रा) घ-10, ङ-10 (मिथुन-आर्द्रा) छ-10 (मिथुन-आर्द्रा) झ-10 (मीन-उ.भाद्रपद) लि-ली, लु-लू, ले-लै, लो-लौ (मेष-भरणी)

1. संपूर्ण + बलवान षड्वर्गशुद्ध	2. मध्यम + बलवान षड्वर्गशुद्ध	3. संपूर्ण + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध	4. मध्यम + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध
	स-सा, सि-सी, सु-सू/0 बग (कुंभ-शतभिषा) से-सै, सो-सौ/0 (कुंभ-पू.भाद्रपद) ह-हा/0 (मिथुन-पुनर्वसू) हि-ही/0 (कर्क-पुनर्वसू)		
12. श्री वासुपूज्यस्वामी			
अ-आ/3 (मेष-कृत्तिका) इ-ई, उ-ऊ, अे-अै /3 (वृषभ-कृत्तिका) ति-ती, तु-तू, ते-तै / 1 (तुला-विशाखा) तो-तौ/1 (वृश्चिक-विशाखा) पे-पै, पो-पौ/0.5 (कन्या-चित्रा)	ओ-औ/3 ★ (वृषभ-रोहिणी) त-ता/1 ★ (तुला-स्वाति) ब-बा, बि-बी, बु-बू /0.5 ★ (वृषभ-रोहिणी) भो-भौ/0.5 ★ (मकर-उत्तराषाढा) म-मा, मि-मी, मु-मू, मे-मै / 0.5 (सिंह-मघा) र-रा, रि-री, ऋ/0 (तुला-चित्रा) रु-रू, रे-रै, रो-रौ / 0 ★ (तुला-स्वाति) व-वा, वि-वी, वु-वू/0 ★ (वृषभ-रोहिणी) वे-वै, वो-वौ/0 ★ (वृषभ-मृगशिर्ष)	ग-गा, गि-गी (मकर-धनिष्ठा) गु-गू, गे-गै (कुंभ-धनिष्ठा) गो-गौ (कुंभ-शतभिषा) स-सा, सि-सी, सु-सू (कुंभ-शतभिषा)	ख-10/★ (मकर-ख : अभिजित्, शेष : श्रवण) ज-10/★ (मकर-ज-जि:उत्तराषाढा, शेष : अभिजित्)

1. संपूर्ण + बलवान षड्वर्गशुद्ध	2. मध्यम + बलवान षड्वर्गशुद्ध	3. संपूर्ण + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध	4. मध्यम + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध
13. श्री विमलनाथ भगवान			
अ-आ/3 बग (मेष-कृत्तिका) इ-ई, उ-ऊ, अे-अै / 3 बग (वृषभ-कृत्तिका) ओ-औ/3 (वृषभ-रोहिणी) थ-10/1 (मीन-उ.भाद्रपद) दि-दी/1 (मीन-पू.भाद्रपद) दु-दू/1 (मीन-उ.भाद्रपद) नो-नौ/1 बग (वृश्चिक-ज्येष्ठा) ब-बा, बि-बी, बु-बू/0.5 (वृषभ-रोहिणी) भ-भा, भि-भी/0.5 बग (धन-मूल) भे-भै/0.5 (धन-उत्तराषाढा) भो-भौ/0.5 (मकर-उत्तराषाढा) म-मा, मि-मी, मु-मू, मे-मै /0.5 बग (सिंह-मघा)	दे-दै, दो-दौ/1 (मीन-रेवती) प-पा, पि-पी/0.5 (कन्या-उ.फाल्गुनी) पु-पू/0.5 (कन्या-हस्त) ये-यै, यो-यौ/0 बग (धन-मूल) ल-ला/0 (मेष-अश्विनी) व-वा, वि-वी, वु-वू/0 (वृषभ-रोहिणी)	कु-कू (मिथुन-आर्द्रा) घ-10, ङ-10 (मिथुन-आर्द्रा) च-चा, चि-ची/बव (मीन-रेवती) चु-चू, चे-चै, चो-चौ/बव (मेष-अश्विनी) छ-10 (मिथुन-आर्द्रा) ज-10 (मकर-ज-जि: उत्तराषाढा, शेष : अभिजित्) झ-10 (मीन-उ.भाद्रपद) ट-टा, टि-टी, टु-टू (सिंह-पू.फाल्गुनी) टे-टै/ (सिंह-उ.फाल्गुनी) ण-10 (कन्या-हस्त) श-10 (मीन-उ.भाद्रपद)	के-कै, को-कौ (मिथुन-पुनर्वसू) ख-10 (मकर, ख : अभिजित्, शेष : श्रवण) टो-टौ (कन्या-उ.फाल्गुनी) ठ-10 (कन्या-हस्त) डि-डी, डु-डू, डे-डै, डो-डौ/ बग (कर्क-अश्लेषा) ष-10 (कन्या-हस्त) ह-हा (मिथुन-पुनर्वसू) हि-ही (कर्क-पुनर्वसू)
14. श्री अनंतनाथ भगवान			
ह-हा/0.5 (मिथुन-पुनर्वसू)	टे-टै/2.5 (सिंह-उ.फाल्गुनी) टो-टौ/2.5 (कन्या-उ.फाल्गुनी)	क-का, कि-की, क्ष (मिथुन-मृगशिर्ष)	कु-कू (मिथुन-आर्द्रा) घ-10, ङ-10 (मिथुन-आर्द्रा)

1. संपूर्ण + बलवान षड्वर्गशुद्ध	2. मध्यम + बलवान षड्वर्गशुद्ध	3. संपूर्ण + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध	4. मध्यम + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध
	ठ-10/2.5 (कन्या-हस्त) ड-डा / 2.5 (कर्क-पुष्य) ढ-10/2.5 (धन-पूर्वाषाढा) ण-10/2.5 (कन्या-हस्त) थ-10/2 ★ (मीन-उ.भाद्रपद) दि-दी / 2 ★ (मीन-पू.भाद्रपद) दु-दू/2 ★ (मीन-उ.भाद्रपद) दे-दै, दो-दौ/2 ★ (मीन-रेवती) ध-10/2 ★ (धन-पूर्वाषाढा) श-10/0.5 (मीन-उ.भाद्रपद) ष-10/0.5 (कन्या-हस्त) हि-ही / 0.5 (कर्क-पुनर्वसू) हु-हू, हे-है, हो-हौ/0.5 (कर्क-पुष्य)	के-कै, को-कौ (मिथुन-पुनर्वसू) च-चा, चि-ची (मीन-रेवती) चु-चू, चे-चै, चो-चौ (मेष-अश्विनी) बे-बै, बो-बौ (वृषभ-मृगशिर्ष) भ-भा, भि-भी/बग (धन-मूल) ये-यै, यो-यौ / बग (धन-मूल) ल-ला (मेष-अश्विनी) वे-वै, वो-वौ (वृषभ-मृगशिर्ष)	छ-10 (मिथुन-आर्द्रा) झ-10 (मीन-उ.भाद्रपद) प-पा, पि-पी (कन्या-उ.फाल्गुनी) पु-पू (कन्या-हस्त) फ-10 (धन-पूर्वाषाढा) भु-भू (धन-पूर्वाषाढा) मो-मौ (सिंह-पू.फाल्गुनी) लि-ली, लु-लू, ले-लै, लो-लौ (मेष-भरणी)
15. श्री धर्मनाथ भगवान			
चु-चू, चे-चै, चो-चौ/1 (मेष-अश्विनी) ठ-10/0.5 (कन्या-हस्त) ड-डा/0.5 (कर्क-पुष्य) डि-डी, डु-डू, डे-डै, डो-डौ	ख-10/1.5 बयो (मकर, ख-अभिजित्, शेष-श्रवण) च-चा, चि-ची/1 (मीन-रेवती) ज-10/1 (मकर-ज-जि:उत्तराषाढा, शेष : अभिजित्)	म-मा, मि-मी, मु-मू, मे-मै / बग (सिंह-मघा) रु-रू, रे-रै, रो-रौ (तुला-स्वाति) ल-ला (मेष-अश्विनी)	ओ-औ (वृषभ-रोहिणी) प-पा, पि-पी (कन्या-उ.फाल्गुनी) पु-पू (कन्या-हस्त) ब-बा, बि-बी, बु-बू (वृषभ-रोहिणी)

1. संपूर्ण + बलवान षड्वर्गशुद्ध	2. मध्यम + बलवान षड्वर्गशुद्ध	3. संपूर्ण + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध	4. मध्यम + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध
/0.5 बग (कर्क-अश्लेषा) ण-10/0.5 (कन्या-हस्त)	ट-टा, टि-टी, टु-टू/0.5 (सिंह-पू.फाल्गुनी) टे-टै/0.5 (सिंह-उ.फाल्गुनी) टो-टौ/0.5 (कन्या-उ.फाल्गुनी) त-ता/0 (तुला-स्वाति) दि-दी/0 (मीन-पू.भाद्रपद) दे-दै, दो-दौ/0 (मीन-रेवती)	ष-10 (कन्या-हस्त) हि-ही (कर्क-पुनर्वसू) हु-हू, हे-है, हो-हौ (कर्क-पुष्य)	भे-भै (धन-उत्तराषाढा) भो-भौ (मकर-उत्तराषाढा) व-वा, वि-वी, वु-वू (वृषभ-रोहिणी)
16. श्री शांतिनाथ भगवान			
टे-टै/2 बव (सिंह-उ.फाल्गुनी) तो-तौ/1.5 बग (वृश्चिक-विशाखा) द-दा/1.5 बयो (कुंभ-पू.भाद्रपद) दि-दी/1.5 बयो (मीन-पू.भाद्रपद) नो-नौ/1.5 (वृश्चिक-ज्येष्ठा) भ-भा, भि-भी/1 बग (धन-मूल) भे-भै/1 (धन-उत्तराषाढा) भो-भौ/1 (मकर-उत्तराषाढा) म-मा, मि-मी, मु-मू, मे-मै / 1 बग (सिंह-मघा) य-या, यि-यी, यु-यू / 0.5 बग (वृश्चिक-ज्येष्ठा)	डि-डी, डु-डू, डे-डै, डो-डौ/ /2 बग बव (कर्क-अश्लेषा) त-ता/1.5 (तुला-स्वाति) दे-दै, दो-दौ/1.5 (मीन-रेवती) रु-रू, रे-रै, रो-रौ/0.5 (तुला-स्वाति) ल-ला/0.5 (मेष-अश्विनी) हि-ही/0 (कर्क-पुनर्वसू)	अ-आ / बग (मेष-कृत्तिका) कु-कू (मिथुन-आर्द्रा) घ-10, ङ-10 (मिथुन-आर्द्रा) च-चा, चि-ची (मीन-रेवती) चु-चू, चे-चै, चो-चौ (मेष-अश्विनी) छ-10 (मिथुन-आर्द्रा) ज-10 (मकर-ज-जि : उत्तराषाढा, शेष : अभिजित्)	के-कै, को-कौ (मिथुन-पुनर्वसू) ख-10 (मकर, ख : अभिजित्, शेष : श्रवण) ह-हा (मिथुन-पुनर्वसू)

1. संपूर्ण + बलवान षड्वर्गशुद्ध	2. मध्यम + बलवान षड्वर्गशुद्ध	3. संपूर्ण + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध	4. मध्यम + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध
ये-यै, यो-यौ/0.5 बग (धन-मूल) लि-ली, लु-लू, ले-लै, लो-लौ / 0.5 (मेष-भरणी)			
17. श्री कुंथुनाथ भगवान			
इ-ई, उ-ऊ, अे-अै/0.5 (वृषभ-कृत्तिका) र-रा, रि-री, ऋ/1.5 (तुला-चित्रा) स-सा, सि-सी, सु-सू/1 (कुंभ-शतभिषा)	ग-गा, गि-गी/0 (मकर-धनिष्ठा) गु-गू, गे-गै/0 (कुंभ-धनिष्ठा) गो-गौ/0 (कुंभ-शतभिषा) छ-10/3.5 ★ (मिथुन-आर्द्रा) य-या, यि-यी, यु-यू/1.5 (वृश्चिक-ज्येष्ठा) वे-वै, वो-वौ/1.5 ★ (वृषभ-मृगशिर्ष) ष-10/1 ★ (कन्या-हस्त) से-सै, सो-सौ/1 ★ (कुंभ-पू.भाद्रपद) ह-हा/1 ★ (मिथुन-पुनर्वसू)	पे-पै, पो-पौ (कन्या-चित्रा)	क-का, कि-की, क्ष/★ (मिथुन-मृगशिर्ष) कु-कू/★ (मिथुन-आर्द्रा) के-कै, को-कौ/★ (मिथुन-पुनर्वसू) घ-10, ङ-10/★ (मिथुन-आर्द्रा) टो-टौ/★ (कन्या-उ.फाल्गुनी) ठ-10/★ (कन्या-हस्त) ण-10/★ (कन्या-हस्त) द-दा/★ (कुंभ-पू.भाद्रपद) नो-नौ (वृश्चिक-ज्येष्ठा) प-पा, पि-पी/★ (कन्या-उ.फाल्गुनी) पु-पू/★ (कन्या-हस्त) बे-बै, बो-बौ/★ (वृषभ-मृगशिर्ष)

1. संपूर्ण + बलवान षड्वर्गशुद्ध	2. मध्यम + बलवान षड्वर्गशुद्ध	3. संपूर्ण + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध	4. मध्यम + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध
18. श्री अरनाथ भगवान			
ह–हा/0.5 (मिथुन–पुनर्वसू)	ट–टा, टि–टी, टु–टू/2.5 (सिंह–पू.फाल्गुनी) टे–टै/2.5 (सिंह–उ.फाल्गुनी) टो–टौ/2.5 (कन्या–उ.फाल्गुनी) ठ–10/2.5 (कन्या–हस्त) ड–डा/2.5 (कर्क–पुष्य) ढ–10/2.5 (धन–पूर्वाषाढा) ण–10/2.5 (कन्या–हस्त) थ–10/2 ★ (मीन–उ.भाद्रपद) दि–दी/2 ★ (मीन–पू.भाद्रपद) दु–दू/2 ★ (मीन–उ.भाद्रपद) दे–दै, दो–दौ/2 ★ (मीन–रेवती) ध–10/2 ★ (धन–पूर्वाषाढा) श–10/0.5 (मीन–उ.भाद्रपद) ष–10/0.5 (कन्या–हस्त) हि–ही/0.5 (कर्क–पुनर्वसू) हु–हू, हे–है, हो–हौ/0.5 (कर्क–पुष्य)	क–का, कि–की, क्ष (मिथुन–मृगशिर्ष) के–कै, को–कौ (मिथुन–पुनर्वसू) च–चा, चि–ची (मीन–रेवती) चु–चू, चे–चै, चो–चौ (मेष–अश्विनी) न–ना, नि–नी, नु–नू, ने–नै (वृश्चिक–अनुराधा) भ–भा, भि–भी/बग (धन–मूल) ये–यै, यो–यौ/बग (धन–मूल) ल–ला (मेष–अश्विनी) वे–वै, वो–वौ (वृषभ–मृगशिर्ष)	कु–कू (मिथुन–आर्द्रा) घ–10, ङ–10 (मिथुन–आर्द्रा) छ–10 (मिथुन–आर्द्रा) झ–10 (मीन–उ.भाद्रपद) प–पा, पि–पी (कन्या–उ.फाल्गुनी) पु–पू (कन्या–हस्त) फ–10 (धन–पूर्वाषाढा) भु–भू (धन–पूर्वाषाढा) मो–मौ (सिंह–पू. फाल्गुनी) लि–ली, लु–लू, ले–लै, लो–लौ (मेष–भरणी)

1. संपूर्ण + बलवान षड्वर्गशुद्ध	2. मध्यम + बलवान षड्वर्गशुद्ध	3. संपूर्ण + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध	4. मध्यम + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध
19. श्री मल्लिनाथ भगवान			
अ-आ/2.5 बग (मेष-कृत्तिका) क-का, कि-की, क्ष / 2 बव (मिथुन-मृगशिर्ष) ख-10/2 बव (मकर-ख:उत्तराषाढा, शेष : अभिजित्) च-चा, चि-ची/1.5 (मीन-रेवती) चु-चू, चे-चै, चो-चौ/1.5 (मेष-अश्विनी) तो-तौ/1.5 बग (वृश्चिक-विशाखा) दे-दै, दो-दौ/0.5 (मीन-रेवती) न-ना, नि-नी, नु-नू, ने-नै /0.5 (वृश्चिक-अनुराधा)	ज-10/1.5 (मकर-ज-जि:उत्तराषाढा, शेष : अभिजित्) झ-10/1.5 (मीन-उ.भाद्रपद) त-ता/0.5 बयो (तुला-स्वाति) थ-10/0.5 (मीन-उ.भाद्रपद) दु-दू/0.5 (मीन-उ.भाद्रपद) ध-10/0.5 (धन-पूर्वाषाढा) फ-10/0 (धन-पूर्वाषाढा) भु-भू/0 (धन-पूर्वाषाढा) भे-भै/0 (धन-उत्तराषाढा) भो-भौ/0 (मकर-उत्तराषाढा) मो-मौ/0 (सिंह-पू.फाल्गुनी)	ड-डा (कर्क-पुष्य) डि-डी, डु-डू, डे-डै, डो-डौ / बग (कर्क-अश्लेषा) म-मा, मि-मी, मु-मू, मे-मै / बग (सिंह-मघा) ल-ला (मेष-अश्विनी) हु-हू, हे-है, हो-हौ (कर्क-पुष्य)	ट-टा, टि-टी, टु-टू (सिंह-पू.फाल्गुनी) ढ-10 (धन-पूर्वाषाढा) रु-रू, रे-रै, रो-रौ (तुला-स्वाति) लि-ली, लु-लू, ले-लै, लो-लौ (मेष-भरणी) श-10 (मीन-उ.भाद्रपद)
20. श्री मुनिसुव्रतस्वामी			
क-का, कि-की, क्ष/2 बव (मिथुन-मृगशिर्ष) के-कै, को-कौ/2 बव (मिथुन-पुनर्वसू) ख-10/2 बव (मकर-ख : अभिजित्, शेष : श्रवण)	कु-कू/2 बव (मिथुन-आर्द्रा) घ-10, ङ-10/2 बव (मिथुन-आर्द्रा) छ-10/1.5 (मिथुन-आर्द्रा) झ-10/1.5 (मीन-उ.भाद्रपद) थ-10/0.5 (मीन-उ.भाद्रपद)	र-रा, रि-री, ऋ/बग (तुला-चित्रा) ल-ला (मेष-अश्विनी) वे-वै, वो-वौ (वृषभ-मृगशिर्ष) स-सा, सि-सी, सु-सू / बग (कुंभ-शतभिषा)	टो-टौ (कन्या-उ.फाल्गुनी) ठ-10 (कन्या-हस्त) ण-10 (कन्या-हस्त) लि-ली, लु-लू, ले-लै, लो-लौ (मेष-भरणी) श-10 (मीन-उ.भाद्रपद)

1. संपूर्ण + बलवान षड्वर्गशुद्ध	2. मध्यम + बलवान षड्वर्गशुद्ध	3. संपूर्ण + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध	4. मध्यम + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध
ग-गा, गि-गी/2 बग बव (मकर-धनिष्ठा) गु-गू, गे-गै/2 बग बव (कुंभ-धनिष्ठा) गो-गौ/2 बग बव (कुंभ-शतभिषा) चु-चू, चे-चै, चो-चौ/1.5 (मेष-अश्विनी) न-ना, नि-नी, नु-नू, ने-नै /0.5 (वृश्चिक-अनुराधा)	द-दा/0.5 (कुंभ-पू.भाद्रपद) दि-दी/0.5 (मीन-पू.भाद्रपद) दु-दू/0.5 (मीन-उ.भाद्रपद) प-पा, पि-पी/0 (कन्या-उ.फाल्गुनी) पु-पू/0 (कन्या-हस्त) बे-बै, बो-बौ/0 (वृषभ-मृगशिर्ष)	ह-हा (मिथुन-पुनर्वसू)	ष-10 (कन्या-हस्त) से-सै, सो-सौ (कुंभ-पू.भाद्रपद) हि-ही (कर्क-पुनर्वसू)
21. श्री नमिनाथ भगवान			
क-का, कि-की, क्ष/1.5 (मिथुन-मृगशिर्ष) ख-10/1.5 (मकर-ख:अभिजित्, शेष : श्रवण) च-चा, चि-ची/1 (मीन-रेवती) चु-चू, चे-चै, चो-चौ/1 (मेष-अश्विनी) ड-डा/0.5 (कर्क-पुष्य) डि-डी, डु-डू, डे-डै, डो-डौ / 0.5 बग (कर्क-अश्लेषा)	ज-10/1 (मकर-ज-जि:उत्तराषाढा, शेष : अभिजित्) झ-10/1 (मीन-उ.भाद्रपद) ट-टा, टि-टी, टु-टू/0.5 (सिंह-पू.फाल्गुनी) ढ-10/0.5 (धन-पूर्वाषाढा) त-ता/0 (तुला-स्वाति) तो-तौ/0 बग (वृश्चिक-विशाखा) थ-10/0 (मीन-उ.भाद्रपद) दु-दू/0 (मीन-उ.भाद्रपद)	अ-आ/बग (मेष-कृत्तिका) म-मा, मि-मी, मु-मू, मे-मै /बग (सिंह-मघा) ल-ला (मेष-अश्विनी) हु-हू, हे-है, हो-हौ (कर्क-पुष्य)	फ-10 (धन-पूर्वाषाढा) भु-भू (धन-पूर्वाषाढा) भे-भै (धन-उत्तराषाढा) भो-भौ (मकर-उत्तराषाढा) मो-मौ (सिंह-पू.फाल्गुनी) रु-रू, रे-रै, रो-रौ (तुला-स्वाति) लि-ली, लु-लू, ले-लै, लो-लौ (मेष-भरणी) श-10 (मीन-उ.भाद्रपद)

1. संपूर्ण + बलवान षड्वर्गशुद्ध	2. मध्यम + बलवान षड्वर्गशुद्ध	3. संपूर्ण + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध	4. मध्यम + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध
	दे-दै, दो-दौ/0 (मीन-रेवती) ध-10/0 (धन-पूर्वाषाढा) न-ना, नि-नी, नु-नू, ने-नै / 0 (वृश्चिक-अनुराधा)		
22. श्री नेमिनाथ भगवान			
गो-गौ/1.5 (कुंभ-शतभिषा) डि-डी, डु-डू, डे-डै, डो-डौ / 0.5 (कर्क-अश्लेषा)	कु-कू/1.5 ★ (मिथुन-आर्द्रा) के-कै, को-कौ/1.5 ★ (मिथुन-पुनर्वसू) घ-10, ङ-10/1.5 ★ (मिथुन-आर्द्रा) छ-10/1 ★ (मिथुन-आर्द्रा) टो-टौ/0.5 ★ (कन्या-उ.फाल्गुनी) ठ-10/0.5 ★ (कन्या-हस्त) ण-10/0.5 ★ (कन्या-हस्त) ति-ती, तु-तू, ते-तै/0 (तुला-विशाखा) तो-तौ/0 (वृश्चिक-विशाखा) नो-नौ/0 (वृश्चिक-ज्येष्ठा) प-पा, पि-पी/0 ★ (कन्या-उ.फाल्गुनी)	इ-ई, उ-ऊ, अे-अै (वृषभ-कृत्तिका) पे-पै, पो-पौ (कन्या-चित्रा) भ-भा, भि-भी (धन-मूल) म-मा, मि-मी, मु-मू, मे-मै (सिंह-मघा) य-या, यि-यी, यु-यू (वृश्चिक-ज्येष्ठा) ये-यै, यो-यौ (धन-मूल) र-रा, रि-री, ऋ (तुला-चित्रा) स-सा, सि-सी, सु-सू (कुंभ-शतभिषा)	ओ-औ/★ (वृषभ-रोहिणी) पु-पू/★ (कन्या-हस्त) ब-बा, बि-बी, बु-बू/★ (वृषभ-रोहिणी) रु-रू, रे-रै, रो-रौ/★ (तुला-स्वाति) व-वा, वि-वी, वु-वू/★ (वृषभ-रोहिणी) ष-10/★ (कन्या-हस्त)

1. संपूर्ण + बलवान षड्वर्गशुद्ध	2. मध्यम + बलवान षड्वर्गशुद्ध	3. संपूर्ण + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध	4. मध्यम + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध
23. श्री पार्श्वनाथ भगवान			
ग-गा, गि-गी/2 बव (मकर-धनिष्ठा) गु-गू, गे-गै/2 बव (कुंभ-धनिष्ठा) गो-गौ/2 बग (कुंभ-शतभिषा) ति-ती, तु-तू, ते-तै/0.5 (तुला-विशाखा)	क-का, कि-की, क्ष/2 ★ (मिथुन-मृगशिर्ष) कु-कू/2 ★ (मिथुन-आर्द्रा) के-कै, को-कौ/2 ★ (मिथुन-पुनर्वसू) घ-10, ङ-10/2 ★ (मिथुन-आर्द्रा) छ-10/1.5 ★ (मिथुन-आर्द्रा) द-दा/0.5 ★ (कुंभ-पू.भाद्रपद) प-पा, पि-पी/0 ★ (कन्या-उ.फाल्गुनी) पु-पू/0 ★ (कन्या-हस्त) पे-पै, पो-पौ /0 (कन्या-चित्रा) भ-भा, भि-भी/0 (धन-मूल)	ये-यै, यो-यौ (धन-मूल) र-रा, रि-री, ऋ (तुला-चित्रा) स-सा, सि-सी, सु-सू (कुंभ-शतभिषा) क्ष/2 बव	टो-टौ/★ (कन्या-उ.फाल्गुनी) ठ-10/★ (कन्या-हस्त) ण-10/★ (कन्या-हस्त) वे-वै, वो-वौ/★ (वृषभ-मृगशिर्ष) ष-10/★ (कन्या-हस्त) से-सै, सो-सौ/★ (कुंभ-पू.भाद्रपद) ह-हा/★ (मिथुन-पुनर्वसू)
24. श्री महावीरस्वामि भगवान			
इ-ई, उ-ऊ, अे-अै/2.5 बग (वृषभ-कृत्तिका) ओ-औ/2.5 (वृषभ-रोहिणी) क-का, कि-की, क्ष/2 बव (मिथुन-मृगशिर्ष)	ख-10/2 बव (मकर-ख : अभिजित्, शेष : श्रवण) ग-गा, गि-गी/2 बव (मकर-धनिष्ठा) च-चा, चि-ची/1.5 (मीन-रेवती)	ट-टा, टि-टी, टु-टू (सिंह-पू.फाल्गुनी) टे-टै (सिंह-उ.फाल्गुनी) टो-टौ (कन्या-उ.फाल्गुनी) ढ-10 (धन-पूर्वाषाढा)	ड-डा (कर्क-पुष्य) रु-रू, रे-रै, रो-रौ (तुला-स्वाति) वे-वै, वो-वौ (वृषभ-मृगशिर्ष) श-10 (मीन-उ.भाद्रपद)

1. संपूर्ण + बलवान षड्वर्गशुद्ध	2. मध्यम + बलवान षड्वर्गशुद्ध	3. संपूर्ण + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध	4. मध्यम + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध
गु-गू, गे-गै/2 (बग, बव (कुंभ-धनिष्ठा)	ज-10/1.5 (मकर-ज-जि:उत्तराषाढा, शेष : अभिजित्)	र-रा, रि-री, ऋ/बग (तुला-चित्रा)	हु-हू, हे-है, हो-हौ (कर्क-पुष्य)
ति-ती, तु-तू, ते-तै/0.5 बग बयो (तुला-विशाखा)	झ-10/1.5 (मीन-उ.भाद्रपद)	व-वा, वि-वी, वु-वू (वृषभ-रोहिणी)	
ध-10/1.5 (धन-पूर्वाषाढा)	त-ता/0.5 (तुला-स्वाति)		
	थ-10/0.5 (मीन-उ.भाद्रपद)		
	दु-दू/0.5 (मीन-उ.भाद्रपद)		
	दे-दै, दो-दौ/0.5 (मीन-रेवती)		
	न-ना, नि-नी, नु-नू, ने-नै /0.5 (वृश्चिक-अनुराधा)		
	प-पा, पि-पी/0 (कन्या-उ.फाल्गुनी)		
	पे-पै, पो-पौ /0 बग बयो (कन्या-चित्रा)		
	फ-10/0 (धन-पूर्वाषाढा)		
	ब-बा, बि-बी, बु-बू/0 (वृषभ-रोहिणी)		
	बे-बै, बो-बौ/0 (वृषभ-मृगशिर्ष)		
	भु-भू/0 (धन-पूर्वाषाढा)		
	भे-भै/0 (धन-उत्तराषाढा)		
	भो-भौ/0 (मकर-उत्तराषाढा)		
	म-मा, मि-मी, मु-मू, मे-मै /0 बग (सिंह-मघा)		
	मो-मौ/0 (सिंह-पू.फाल्गुनी)		

1. संपूर्ण + बलवान षड्वर्गशुद्ध	2. मध्यम + बलवान षड्वर्गशुद्ध	3. संपूर्ण + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध	4. मध्यम + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध
24. श्री वर्धमानस्वामि भगवान			
इ-ई, उ-ऊ, अे-अै/3 बग (वृषभ-कृत्तिका) ओ-औ/3 (वृषभ-रोहिणी) ति-ती, तु-तू, ते-तै/1 बग बयो (तुला-विशाखा) ध-10/1 (धन-पूर्वाषाढा) प-पा, पि-पी/0.5 (कन्या-उ.फाल्गुनी) पे-पै, पो-पौ/0.5 बग बयो (कन्या-चित्रा) फ-10/0.5 (धन-पूर्वाषाढा) ब-बा, बि-बी, बु-बू/0.5 (वृषभ-रोहिणी) भु-भू/0.5 (धन-पूर्वाषाढा) भे-भै/0.5 (धन-उत्तराषाढा) म-मा, मि-मी, मु-मू, मे-मै /0.5 बग (सिंह-मघा) मो-मौ/0.5 (सिंह-पू.फाल्गुनी)	त-ता/1 (तुला-स्वाति) थ-10/1 (मीन-उ.भाद्रपद) दु-दू/1 (मीन-उ.भाद्रपद) दे-दै, दो-दौ/1 (मीन-रेवती) न-ना, नि-नी, नु-नू, ने-नै /1 (वृश्चिक-अनुराधा) बे-बै, बो-बौ/0.5 (वृषभ-मृगशिर्ष) भो-भौ/0.5 (मकर-उत्तराषाढा) र-रा, रि-री, ऋ/0 बग (तुला-चित्रा) रु-रू, रे-रै, रो-रौ/0 (तुला-स्वाति) व-वा, वि-वी, वु-वू/0 (वृषभ-रोहिणी)	गु-गू, गे-गै/बग (कुंभ-धनिष्ठा) ट-टा, टि-टी, टु-टू (सिंह-पू.फाल्गुनी) टे-टै (सिंह-उ.फाल्गुनी) टो-टौ (कन्या-उ.फाल्गुनी) ढ-10 (धन-पूर्वाषाढा)	क-का, कि-की, क्ष (मिथुन-मृगशिर्ष) ख-10 (मकर-ख : अभिजित्, शेष : श्रवण) ग-गा, गि-गी (कुंभ-धनिष्ठा) च-चा, चि-ची/बव (मीन-रेवती) ज-10 (मकर-ज-जि : उत्तराषाढा, शेष : अभिजित्) झ-10 (मीन-उ.भाद्रपद) ड-डा (कर्क-पुष्य) वे-वै, वो-वौ (वृषभ-मृगशिर्ष) श-10 (मीन-उ.भाद्रपद) हु-हू, हे-है, हो-हौ (कर्क-पुष्य)

1. संपूर्ण + बलवान षड्वर्गशुद्ध	2. मध्यम + बलवान षड्वर्गशुद्ध	3. संपूर्ण + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध	4. मध्यम + बलवान चतुर्वर्गशुद्ध
श्री सीमंधरस्वामि भगवान			
टे-टै/2 बव (सिंह-उ.फाल्गुनी) टो-टौ/2 बव (कन्या-उ.फाल्गुनी) ढ-10/2 बव (धन-पूर्वाषाढा) थ-10/1.5 (मीन-उ.भाद्रपद) दि-दी/1.5 (मीन-पू.भाद्रपद) दु-दू/1.5 (मीन-उ.भाद्रपद) ध-10/1.5 (धन-पूर्वाषाढा) प-पा, पि-पी/1 (कन्या-उ.फाल्गुनी) फ-10/1 (धन-पूर्वाषाढा) भ-भा, भि-भी/1 बग (धन-मूल) भु-भू/1 (धन-पूर्वाषाढा) मो-मौ/1 (सिंह-पू.फाल्गुनी) य-या, यि-यी, यु-यू /0.5 बग (वृश्चिक-ज्येष्ठा) ये-यै, यो-यौ/0.5 बग (धन-मूल) लि-ली, लु-लू, ले-लै, लो-लौ / 0.5 (मेष-भरणी)	ठ-10/2 बव (कन्या-हस्त) ड-डा/2 बव (कर्क-पुष्य) ण-10/2 बव (कन्या-हस्त) न-ना, नि-नी, नु-नू, ने-नै /1.5 (वृश्चिक-अनुराधा) पु-पू/1 (कन्या-हस्त) ल-ला/0.5 (मेष-अश्विनी) श-10/0 (मीन-उ.भाद्रपद) ष-10/0 (कन्या-हस्त) स-सा, सि-सी, सु-सू/0 बग (कुंभ-शतभिषा) से-सै, सो-सौ/0 (कुंभ-पू.भाद्रपद) ह-हा/0 (मिथुन-पुनर्वसू) हि-ही/0 (कर्क-पुनर्वसू) हु-हू, हे-है, हो-हौ/0 (कर्क-पुष्य)	चु-चू, चे-चै, चो-चौ (मेष-अश्विनी) झ-10 (मीन-उ.भाद्रपद) ट-टा, टि-टी, टु-टू (सिंह-पू.फाल्गुनी)	कु-कू (मिथुन-आर्द्रा) के-कै, को-कौ (मिथुन-पुनर्वसू) घ-10, ङ-10 (मिथुन-आर्द्रा) छ-10 (मिथुन-आर्द्रा)

श्री तीर्थंकर राशि-मेल यंत्र

राशि	सर्वोत्तम ✓1	श्रेष्ठतर ✓2	श्रेष्ठ ✓3	प्रीति ✓4	शुभ ✓5
मेष-मं. (अ,ल,इ)	16,19,21	कर्क 15	मीन 13,14,18 मकर 11,20	वृश्चिक 8	कुंभ 12, मिथुन 3, 4 सिंह 5, धन 1,9,10
वृषभ-शु (ब,व,उ)	2,17	कुंभ 12	मिथुन 3,4 सिंह 5	तुला 7,23	कन्या 6,22,24 मकर 11,20 मीन 13,14,18
मिथुन-बु (क,छ,घ)	3,4	कन्या 6,22,24	वृषभ 2,17 मीन 13,14,18	मकर 11,20	मेष 16,19,21 सिंह 5, तुला 7,23
कर्क-चंद्र (ड,ह)	15	मेष 16,19,21	सिंह 5 तुला 7,23	धन 1,9,10	वृषभ 2,17 कन्या 6,22,24
सिंह-सू (म,ट)	5	वृश्चिक 8	कर्क 15 वृषभ 2, 17	मीन 13,14,18	मेष 16,19,21 मिथुन 3,4 तुला 7,23 धन 1,9,10 कन्या 6,22,24
कन्या-बु (प,ठ,ण)	6,22,24	मिथुन 3,4	तुला 7,23 धन 1,9,10	कुंभ 12	वृषभ 2, 17 कर्क 15 सिंह 5, वृश्चिक 8
तुला-शु (र, त)	7,23	मकर 11,20	कर्क 15 कन्या 6,22,24	वृषभ 2,17	धन 1,9,10 कुंभ 12 सिंह 5 मिथुन 3,4 कन्या 6,22,24
वृश्चिक-मं (न,य)	8	सिंह 5	धन 1,9,10 कुंभ 12	मेष 16,19,21	कन्या 6,22,24 मकर 11,20 मीन 13,14,18
धन-गु (भ,फ,ध,ढ)	1,9,10	मीन 13,14,18	कन्या 6,22,24 वृश्चिक 8	कर्क 15	मेष 16,19,21 सिंह 5 तुला 7,23 कुंभ 12
मकर-श (ख,ज,क्ष)	11,20	तुला 7,23	मेष 16,19,21 कुंभ 12	मिथुन 3,4	वृषभ 2,17 वृश्चिक 8 मीन 13,14,18
कुंभ-श (ग,श,स,ष)	12	वृषभ 2,17	मकर 11,20	कन्या 6,22,24	मेष 16,19,21 तुला 7,23 धन 1,9,10
मीन-गु (द,च,झ,थ)	13,14,18	धन 1,9,10	मेष 16,19,21 मिथुन 3,4	सिंह 5	वृषभ 2,17 वृश्चिक 8 मकर 11,20

मूलनायक भगवान की आस-पास बेठनेवाले भगवान का मूलनायक भगवान के साथ राशिमेल देखने का कोष्टक ज्योतिषशास्त्र की ग्रहमैत्री के आधार से तैयार किया गया है, जिसमे लिखे अंक तीर्थंकर भगवान के क्रम अनुसार है ।

श्री तीर्थंकर राशि-मेल यंत्र

राशि	सम ✓6	मध्यम ×7	अशुभ ×8	शत्रु ×9	अतिशत्रु ×10
मेष-मं. (अ,ल,इ)	तुला 7,23		वृषभ 2,17	कन्या 6,22,24	–
वृषभ-शु (ब,व,उ)	वृश्चिक 8	–	मेष 16,19,21	धन 1,9,10	कर्क 15
मिथुन-बु (क,छ,घ)	धन 1,9,10	कुंभ 12	–	वृश्चिक 8	कर्क 15
कर्क-चंद्र (ड,ह)	मकर 11,20	वृश्चिक 8 मीन 13,14,18	–	कुंभ 12	मिथुन 3,4
सिंह-सू (म,ट)	कुंभ 12	–		मकर 11, 20	
कन्या-बु (प,ठ,ण)	मीन 13,14,18	मकर 11,20	–	मेष 16,19,21	
तुला-शु (र,त)	मेष 16,19,21	–	वृश्चिक 8	मीन 13,14,18	
वृश्चिक-मं (न,य)	वृषभ 2,17	कर्क 15	तुला 7,23	मिथुन 3,4	
धन-गु (भ,फ,ध,ढ)	मिथुन 3,4	–	मकर 11,20	वृषभ 2,17	–
मकर-श (ख,ज,क्ष)	कर्क 15	कन्या 6,22,24	धन 1,9,10	सिंह 5	
कुंभ-श (ग,श,स,ष)	सिंह 5	मिथुन 3,4	मीन 13,14,18	कर्क 15	
मीन-गु (द,च,झ,थ)	कन्या 6,22,24	कर्क 15	कुंभ 12	तुला 7,23	

जैसे कि - 1 याने ऋषभदेव, 2 - अजीतनाथ, 10 याने शीतलनाथ, 23 याने पार्श्वनाथ समजना. उपर कोष्टक में 1 से 3 नंबर उत्तम, 4 से 6 शुभ ओर 7 से 10 अशुभ.

मेलापक के बारे में अनुभव की डकार

पूजक और जिन के मेलापक के बारे में कुछ जरुरी विचारणा :

'श्री बृहद् धारणायंत्र' ग्रंथ के संपादन कार्य के दौरान हमें अनेक अनुभवी विद्वानों के जो अनुभव जाननें-समजने का अवसर प्राप्त हुआ, उन्हें साररुप में कुछ बिंदुओं के द्वारा यहाँ प्रस्तुत करते है :–

- समग्र भारत के सकल श्रीसंघो में कुछ स्थान ऐसे भी मिल शकते हैं जहाँ पूजक संघ या गाँव का मूलनायक परमात्मा के साथ षड्वर्ग न मिलें, कभी विपरीत मिले और फिर भी सब कुछ अच्छा-व्यवस्थित हो तथा उत्तरोत्तर वृद्धि-प्रगति होती हो, परंतु इसलिए षड्वर्गशुद्धि देखना निरर्थक है, ऐसा अर्थ मत निकालें, क्योंकि उसके लिए अन्य अनेक कारण जिम्मेदार हो सकते हैं ।

(1) कुछ स्थानों पर, सर्व गाँवो में अथवा संघो में एक ही भगवान मूलनायक स्वरुप में विराजमान किये गये हो ऐसा भी देखने को मिलता है । गुजरात में विरमगाम के आसपास के बहुत सारे गाँवो में ज्यादातर मूलनायक के स्वरुप में श्री शांतिनाथ भगवान देखने को मिलते है । राजस्थान में कुछ क्षेत्र में प्रभु महावीरस्वामी के, तो कुछ क्षेत्र में पार्श्वनाथ भगवान के ही तीर्थ देखने को मिलते है ।

जो तो क्षेत्र के अमुक अधिष्ठायक देव-देवीयाँ, क्षेत्रपालक हो और वे अपने इष्ट परमात्मा के प्रभाववृद्धि आदि में निमित्त बनते हो, ऐसे या ऐसे कुछ अन्य कारणवश इस तरह बन सकता है ।

(2) कभी तो, पार्श्वनाथ भगवान या शांतिनाथ भगवान इत्यादि अपने विशिष्ट प्रभावक गुणों जैसे कि, समृद्धिकरण, शांतिकरण आदि के कारण पूर्व के गीतार्थ महापुरुषोंने लाभालाभ देख कर उसी तरह यथायोग्य भगवान स्थापित किये हो, ऐसा भी हो सकता है ।

(3) कभी, गाँव या संघ का पुराना नाम अलग से हो और उसके आधार पर भगवान को स्थापित किया गया हो, बाद में कोई भी कारणवश गाँव या संघ या क्षेत्र के नाम में परिवर्तन हुआ हो और उस नये नाम के साथ प्राचीन परमात्मा का षड्वर्ग अभी मिलता न हो, ऐसा भी हो सकता है ।

(4) कभी, जमीन में से भगवान का निकलना, प्राचीन परमात्मा होना, प्रभु के चमत्कार लोगों को मिलना, प्रतिष्ठा के बाद संघ के सुख-समृद्धि-उन्नति-आबादी में बढोतरी आना इत्यादि कारणों से जो तो परमात्मा श्रीसंघ के सर्वजन को प्रबल श्रद्धा-आस्था के कारणरूप हो ऐसा भी हो सकता है ।

इस तरह, उपरोक्त सूचित यथायोग्य परिस्थिति में षड्वर्गशुद्धि गौण बनती है और जो तो क्षेत्र के अथवा परमात्मा के अधिष्ठायक देव-देवी का सान्निध्य, श्रीसंघ की प्रबल आस्था और श्रद्धा जैसे कारण प्रमुख बनते है, ऐसा जानें ।

इस बारे में ऐसा निष्कर्ष निकलता है कि - सामान्यरुप से सब कुछ अच्छा चलता हो तब लेन-देन इत्यादि षड्वर्गशुद्धि की बात को आगे करके प्राचीन शुभ प्रतिष्ठित परमात्माओं का उत्थापन करना, मूलनायक का स्थानफेर करना इत्यादि उचित नहीं है ।

प्रत्येक संघ में, सभी जगह, सब कुछ अच्छा ही हो, ऐसा नहीं है, इसलिए सामान्य-सामान्य तकलीफ आदि को ध्यान में ले कर उस का दोष मंदिर पर, जिनप्रतिमा पर अथवा लेन-देन इत्यादि जैसी षड्वर्गशुद्धि पर डाल देना उचित नहीं है । जो तो विशेष परिस्थिति में ऐसी बातें संविग्न गीतार्थ तथा मुख्यतः इस विषय के विशिष्ट अनुभवी महापुरुषों के अधीन होती है । इसलिए विवेक और औचित्यपूर्ण तरीके से उनका अनुसरण करना चाहिए ।

- नूतन भरवाते जिनबिंबो में, नूतन मंदिरो में नये मूलनायक की स्थापना की जाती हो वहाँ षड्वर्गशुद्धि को महत्त्व देना जरुरी है । जहाँ प्राचीन परमात्मा मूलनायक के रुप में बिराजमान हो, वहाँ संघ/ट्रस्ट का नाम जो तो परमात्मा को सानुकूल करके षड्वर्गशुद्धि मिलानी हो तो मिला सकते है ।
- पूजक और जिन का षड्वर्ग मेलापक देखने में अगर पूजक का प्रसिद्ध नाम जन्मनक्षत्र के चरण अक्षर पर से न हो, वहाँ लेन-देन और वर्गमेल, पूजक के प्रसिद्ध नाम पर से देखें जातें है, ऐसे ही मूलनायक भगवान का प्रसिद्ध नाम अगर अन्य है, मूलनायक भगवान की ख्याति उनके प्रसिद्ध नाम के कारण सविशेष है तो वहाँ पूजक की तरह जिन के प्रसिद्ध नाम पर से भी लेन-देन और वर्गमेल देख सकते है । जैसे कि, शंखेश्वर पार्श्वनाथ या केसरियाजी आदिनाथ भगवान के लिए जैसे उनके मूलभूत नाम पार्श्वनाथ अथवा आदिनाथ पर से लेन-देन या वर्ग

देखा जाता है । ऐसे ही, उनके प्रसिद्ध नाम शंखेश्वर और केसरियाजी के अनुसार 'श' पर से या 'क' पर से भी लेन-देन और वर्ग देखा जा सकता है ।

- एक ही भगवान के अगर दो नाम प्रसिद्ध है, जैसे कि ऋषभदेव और आदिनाथ, महावीरस्वामि और वर्धमानस्वामि इत्यादि, तो जिस नाम पर लेहना और वर्गमेल शुद्धि ज्यादा मिलती हो, उस नाम से भगवान भरवाने चाहिए ।
- कुछ विशेषज्ञों के मतानुसार श्री पार्श्वनाथ परमात्मा वर्तमान में अति प्रभावक, समाधि तथा समृद्धिदायक और भक्तों के प्रबल आस्थास्थान स्वरुप होने के कारण कोई भी गाँव या संघ में उनको मूलनायक स्वरुप में स्थापित कर सकते है, और वह शुभ परिणाम देनेवाले होते है ।
- नूतन संघमंदिर में जब श्रीसंघ/ट्रस्ट के नाम के अनुकूल षड्वर्गशुद्ध नूतन भगवान स्थापित करते वक्त वह प्रतिमा भराने का या प्रतिष्ठा कराने का चढावा बोलनेवाले के साथ जो तो भगवान की षड्वर्गशुद्धि मिलाना आवश्यक नहीं है । चढावा बोलनेवाला व्यक्ति सकल श्रीसंघ द्वारा प्रतिमा भरवाता है या उनकी प्रतिष्ठा करता है, इसलिए उनकी भगवान के साथ की लेन-देन इत्यादि देखा नहीं जाता ।

* * *

जिनमंदिरों में शिल्पदोष

- शिल्पशास्त्र की द्रष्टि से मंदिरों में कौनसी बात दोषरुप है, उसका मुख्यतः वर्णन 'जैन शिल्प विधान' शिल्पग्रंथ में किया गया है ।
- शिल्पदोषों में कहीं अपवाद होते है । प्रत्येक दोष में गौण-मुख्य भाव भी होता है । अर्थात् कुछ दोष गौण होते है, तो कुछ मुख्य । जो तो क्षेत्र (स्थान), मंदिर, प्रतिष्ठा आदि संयोगो के आधार पर दोषों के गौण-मुख्य भाव में भी परिवर्तन आता है, अर्थात् मुख्य दोष भी वहाँ गौण हो जाते है । उपरांत, जो तो काल में सहज बनती बाबत, अमुक काल के बाद दोषरुप मानी जाती है । जो तो दोष का अशुभ प्रभाव दिखाने की भी निश्चित समयमर्यादा होती है तथा उसके निवारण के भी कुछ उपाय संभवित होते है ।
- प्राचीन प्रभावक मंदिरों में विशिष्ट ज्ञान के अभाव में कोई दोष निकालना योग्य नहीं है । जो तो मंदिर में दोष है कि नहीं, उसका अंतिम निर्णय श्रीसंघ के हित को ध्यान में रख कर शिल्पशास्त्रों के ज्ञाता तथा प्रस्तुत विषय के विशाल अनुभवी संविग्न गीतार्थ अधिकारी अधीन जानें ।

परिशिष्ट

(1) श्री शांतिनाथ भगवान के जन्मनक्षत्र 'भरणी' संबंधित शास्त्रपाठ

1. निर्वाणकलिका कर्ता : पू.आ.पादलिप्तसूरीश्वरजी म.

   ''तथा षोडशं शान्तिनाथं हेमवर्णं मृगलाञ्छनं
   भरण्यां जातं मेषराशिं चेति ।''

2. कलिकालसर्वज्ञ आ.श्री हेमचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजा के गुरुदेव आ.श्री देवचंद्रसूरिजी कृत 'सिरिसंतिनाहचरियं', वि.सं. 1160

   ''एवंविहे च गहसंठाणे समागए .... जेट्ठबहुलतेरसीए
   भरणीनक्खत्तसंगए ससंके पसूया एसा ... दारयं ।''

3. क.स.श्री हेमचन्द्राचार्यकृत त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र, पर्व-9, सर्ग-9, श्लोक 49-50

   ततो नवसु मासेषु विनेष्वर्धाष्टमेषु च ।
   ज्येष्ठकृष्णत्रयोदश्यां भरणीस्थे निशाकरे ॥

   ग्रहेषु चोच्चसंस्थेषु मृगाङ्क इव पूर्वदिक् ।
   मृगाङ्कं काञ्चनरुचिमचिरा सुषुवे सुतम् ॥

4. पौर्णमिक गच्छ के पू.आ.अजितप्रभसूरिकृत शांतिनाथ चरित्र, वि.सं. 1307, प्रस्ताव-6, श्लोक 28-30

   गतेषु मासेषु नवस्वर्धाष्टदिवसेषु च ।
   ज्येष्ठकृष्णत्रयोदश्यां भरणिस्थे निशाकरे ॥28॥

   निशीथसमये स्वर्णवर्णं कान्तिसमन्वितम् ।
   सा देवी सुषुवे पुत्रं विश्वत्रयसुखावहम् ॥30॥

5. आचारदिनकर प्रताकार भा.2, पृ. 143 पर
   श्री शांतिनाथ भ. का जन्मनक्षत्र भरणी ही कहा है ।

6. पू.आ. मुनिभद्रसूरिकृतश्री शांतिनाथ महाकाव्य :
   सर्ग-14, श्लोक 84-85 में भी जन्मनक्षत्र - भरणी ।

प्रकाशन : वीर सं. 2437

संपादक : पं. हरगोवनदास, पं. बेचरदास

7. पू.आ. भावचंद्रसूरिरचित श्री शांतिनाथ चरित्र :
सर्ग-6, जीसमें जन्मनक्षत्र भरणी ही कहा है ।

8. पू.आ. माणिक्यचंद्रसूरिकृत श्री शांतिनाथ चरित्र :
जीसमें जन्मनक्षत्र - भरणी कहा है ।

9. पू.आ. मुनिदेवसूरिजी, पू.आ. तिलकप्रभसूरिजी तथा पू. जिनवल्लभगणिकृत शांतिनाथ चरित्र अभी अप्रगट है, जीसमें भी उनका जन्म नक्षत्र भरणी ही कहा है । यह तिलकप्रभसूरिकृत शांतिनाथ चरित्र पाटण हेमचंद्राचार्य भंडार में है, जिसमें ''.....भरणिष्ठे निशाकरे....'' ऐसा पाठ मीलता है ।

नोंध : उपलब्ध किसी-भी प्राचीन ग्रंथो में श्री शांतिनाथ भगवान का जन्मनक्षत्र अश्विनी मिलता नहीं हैं ।

— ● —

(2) नाडीवेध बाबत आवश्यक विचार

- **ग्रंथनाम : बृहदवकहडाचक्रम्**

  प्रकाशन : चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी, वि.सं. 2026

  संग्राहक : वाराणसेयसंस्कृतविश्वविद्यालय ज्योतिष विभागाध्यक्ष ज्योतिषाचार्यश्री कमलाकान्त शुक्ल

  संपादक : पं.श्री अवधविहारी त्रिपाठी

- **नाडीकूटफल प्रकरण : श्लो. 33 से 36**

  (1) **एकनाडीस्थनक्षत्रे दंपत्योर्मरणं ध्रुवम् ।**
  सेवायां च भवेद्धानिर्विवाहे प्राणनाशनः ॥

  अर्थ : अगर किसी दो के जन्मनक्षत्र अेकनाडीगत हो तो

  (1) पति-पत्नी संबंधे निश्चित दोनों को मृत्यु फलदायक होता है । (2) स्वामि ओर सेवक के संबंध में हानिकारक होता है और (3) विवाह संबंध में प्राणनाशक होता है ।

(2) **आदिनाडी वरं हन्ति मध्यनाडी च कन्यकाम् ।**
अन्त्यनाड्यां द्वयोर्मृत्युर्नाडीदोषं त्यजेद्बुधः ॥

अर्थ : अगर दोनों के जन्मनक्षत्र आद्यनाडी में हो तो वर का मृत्यु होता है, मध्यनाडीगत हो तो कन्या का मृत्यु होता है और अंत्यनाडी में हो तो दोनोका (अकाल) मृत्यु का कारण बनता है । इसलिए विवेकी पुरुष नाडीदोष का त्याग करें ।

(3) **नाडीदोषपरिहार :**

एकनक्षत्रजातानां नाडीदोषो न विद्यते ।
अन्यर्क्षप्रतिवेधे तु विवाहो वर्जितः सदा ॥

अर्थ : एक हि नक्षत्र में जन्मे हुअे को नाडीवेध (दोष) होता नहीं । अन्य नक्षत्रो के साथ नाडीवेध हुआ हो तो उनका विवाह सर्वथा वर्जित है ।

राश्यैक्ये भिन्नमृक्षं चेद् भैक्ये राशिद्वयं तथा ।
पादभेदेऽपि नाडीनां गणानां च न दुष्टता ॥

अर्थ : (1) किसी दोनो की राशि एक हि हो, लेकिन जन्मनक्षत्र भिन्न हो । (2) किसी दोनो के जन्मनक्षत्र एक हि हो परन्तु राशिभेद हो तथा (3) अगर किसी दो के जन्मनक्षत्र एक ही होनेके बावजूद चरणभेद-पादभेद हो जाता हो तो – नाडी और गण का दोष नहि माना जाता है । (बृहद्धारणागतियंत्र में पू.मुनिश्री दर्शनविजयजी म. 'त्रिपुटी' उसको 'भवेध' संबोधते हैं ।)

– ● –

(3) परमतारक देवाधिदेव श्री अभिनंदनस्वामी के जन्मनक्षत्र के बारे में जरुरी स्पष्टीकरण

- मुनि लब्धिनिधानविजय

अपने यहाँ सकल श्रीसंघ में परमतारक चौबीस तीर्थंकर परमात्मा के पाँचो कल्याणको की आराधना प्रचलित है और हर साल अनेक पुण्यात्मा यह आराधना करते है ।

(1) इस चौबीसी के चौथे तीर्थंकर श्री अभिनंदनस्वामी का जन्म कल्याणक माह सुदि-2 के दिन आता है और जन्मनक्षत्र पुनर्वसू (मिथुनराशि) है ।

(2) कुछ विद्वानों का मानना है कि माह सुदि-2 के दिन कभी भी पुनर्वसू नक्षत्र आता ही नहीं इसलिए प्रभु का जन्मनक्षत्र श्रवण और मकर राशि मानना चाहिए परंतु यह बात विचारणीय है ।

(3) हमारे प्राचीन चरित्रग्रंथ...

1) पू.आ.श्री शीलांकाचार्यश्री कृत 'चउपन्नमहापुरिसचरियं'
2) कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचंद्राचार्यकृत 'श्री त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रम्'
3) पू.आ.श्री सोमतिलकसूरिकृत 'श्री सप्ततिशतस्थान प्रकरणम्'
4) महोपाध्याय श्री विनयविजयजीकृत 'श्री लोकप्रकाश शास्त्र' इत्यादि अनेक प्रमाणभूत ग्रंथों में परमात्मा श्री अभिनंदनस्वामी का जन्मकल्याणक माह सुदि-2 और जन्मनक्षत्र पुनर्वसू (मिथुनराशि) का ही उल्लेख मिलता है ।

(4) उपरोक्त प्रत्येक ग्रंथ में चौबीस परमात्मा के प्रथम 4 कल्याणक (च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान) कोई एक ही नक्षत्र में और मोक्षकल्याणक अलग नक्षत्र में हुए है ऐसा उल्लेख दिखता है । (उदा. प्रभुवीर के 4 कल्याणक उत्तरा फाल्गुनी में और मोक्ष 'स्वाति' नक्षत्र में हुआ) ।

परमतारक श्री अभिनंदनस्वामी के अन्य कल्याणक जो तिथि में सूचित है उनमें भी पुनर्वसू नक्षत्र और मोक्षकल्याणक में पुष्यनक्षत्र सुसंगत ही है । वह इस प्रकार है :

च्यवन कल्याणक बैसाख सुदि-4, पुनर्वसूनक्षत्र
दीक्षा कल्याणक माह सुदि-12, पुनर्वसूनक्षत्र
केवलज्ञान कल्याणक पौष सुदि-14, पुनर्वसूनक्षत्र
मोक्ष कल्याणक बैसाख सुदि-8, पुष्यनक्षत्र

(5) उपरांत, दिगंबर परंपरा के दो प्राचीन ग्रंथ-उत्तरपुराण और तिलोयपन्नति में भी प्रभु का जन्मनक्षत्र पुनर्वसू सूचित है । जो कि जन्मकल्याणक की तिथि के रुप में माह सुदि-12 का उल्लेख देखने को मिलता है ।

(6) सुविहित आचार्यों की परंपरा में भी परमात्मा श्री अभिनंदनस्वामी का जन्मनक्षत्र पुनर्वसू ही स्वीकार किया गया है, और आज तक सकल श्रीसंघने उसका निर्विवादपूर्वक स्वीकार किया है ।

इस तरह, शास्त्रप्रमाण तथा परंपरा प्रमाण द्वारा सिद्ध होता है कि प्रभु अभिनंदनस्वामी का जन्मनक्षत्र पुनर्वसू है, इसलिए ऐसे ही हरेक को स्वीकार कर लेना चाहिए ।

* * *

24 भगवान के नाम-राशि आदि का कोष्टक

नं.	नाम	लांछन	राशि	नक्षत्र	योनि	वर्ग	गण	नाडी
1	ऋषभदेव	वृषभ	धन	उत्तराषाढा	नकुल	अ	मनुष्य	अंत्य
2	अजितनाथ	हाथी	वृषभ	रोहिणी	सर्प	अ	मनुष्य	अंत्य
3	संभवनाथ	घोडो	मिथुन	मृगशिर	सर्प	श	देव	मध्य
4	अभिनंदन	वानर	मिथुन	पुनर्वसू	बिलाड	अ	देव	आद्य
5	सुमतिनाथ	क्रौंचपक्षी	सिंह	मघा	उंदर	श	राक्षस	अंत्य
6	पद्मप्रभ	पद्म	कन्या	चित्रा	व्याघ्र	प	राक्षस	मध्य
7	सुपार्श्वनाथ	स्वस्तिक	तुला	विशाखा	व्याघ्र	श	राक्षस	अंत्य
8	चंद्रप्रभ	चंद्र	वृश्चिक	अनुराधा	हरण	च	देव	मध्य
9	सुविधिनाथ	मकर	धन	मूल	श्वान	श	राक्षस	आद्य
10	शीतलनाथ	श्रीवत्स	धन	पूर्वाषाढा	वानर	श	मनुष्य	मध्य
11	श्रेयांसनाथ	गेंडो	मकर	श्रवण	वानर	श	देव	अंत्य
12	वासुपूज्य	महिष(पाडो)	कुंभ	शतातारा	अश्व	च	राक्षस	आद्य
13	विमलनाथ	वराह	मीन	उ.भाद्रपद	गौ	य	मनुष्य	मध्य
14	अनंतनाथ	सिंचाणो	मीन	रेवती	हस्ति	अ	देव	अंत्य
15	धर्मनाथ	वज्र	कर्क	पुष्य	अज(मेष)	त	देव	मध्य
16	शांतिनाथ	हरिण	मेष	भरणी	हस्ति	श	मानव	मध्य
17	कुंथुनाथ	बकरा	वृषभ	कृत्तिका	अज(मेष)	क	राक्षस	अंत्य
18	अरनाथ	नंद्यावर्त	मीन	रेवती	हस्ति	अ	देव	अंत्य
19	मल्लिनाथ	कलश	मेष	अश्विनी	अश्व	प	देव	आद्य
20	मुनिसुव्रत	कछुआ	मकर	श्रवण	वानर	प	देव	अंत्य
21	नमिनाथ	नीलकमल	मेष	अश्विनी	अश्व	त	देव	आद्य
22	नेमिनाथ	शंख	कन्या	चित्रा	व्याघ्र	त	राक्षस	मध्य
23	पार्श्वनाथ	सर्प	तुला	विशाखा	व्याघ्र	प	राक्षस	अंत्य
24	महावीर	सिंह	कन्या	उ.फाल्गुनी	गौ	प	मनुष्य	आद्य

ध्वजा के स्वरुप का रहस्य

- शिल्पविधि शास्त्रग्रंथो से यह निष्कर्ष निकलता है कि जिस देव का मंदिर हो, उस देव के स्वदेहवर्ण के अनुसार ध्वजा का वर्ण होना चाहिए तथा उसमें उस देव के वाहन और आयुध को चित्रित किया जाय, क्योंकि मंदिर की ध्वजा देखकर दर्शक को देव की पहिचान हो सके - यह हेतु इसी रीति से प्राप्त हो सकता है ।
- अपने यहाँ अरिहंत और सिद्ध की ध्वजा भी उस शास्त्रीय नियम के अनुसार ही है । अरिहंत और सिद्ध के स्वीकृत वर्ण क्रमशः श्वेत और लाल ही हमने इनकी ध्वजाओं में (इन दोनों वर्णों को) स्वीकार किया है । जिनेश्वरदेव वीतराग हैं, इसलिए उनका कोई वाहन नहीं है और आयुध भी नहीं है । इसलिए ध्वजा में वाहन या आयुध के बदले स्वस्तिक, तीन बिन्दु और सबसे ऊपर सिद्धशिला बनाई जाती है । अरिहंतदेव के द्वारा बताये गये चार गति रुप संसार का अंत करने के लिए ज्ञान-दर्शन-चारित्र रूपी रत्नत्रय की आराधना करते हुए अन्त में सिद्धशिला पर शाश्वत स्थान प्राप्त करने का निर्देश ध्वजा के प्रतीकों में दिया गया है ।
- फिर आकाश में जब तक सूर्य और चंद्र भ्रमण करते रहेंगे, तब तक प्रतिष्ठा भी चिरस्थायी (शाश्वतप्रायः) बनी रहे - ऐसा भाव श्लोकों द्वारा प्रतिष्ठा के समय व्यक्त किया जाता है, इसलिए उनके प्रतीक रुप में अथवा केवलज्ञान और केवलदर्शन के प्रतीक रूप में सूर्य और चंद्र ये दोनो चिह्न भी अपनी ध्वजा में रखना स्वीकार किया गया है । इस प्रकार कुल पाँच चिह्नों से युक्त ध्वजा का रूप हमारे परापूर्वकाल से ही स्वीकृत है ।
- ऊपर लिखे शास्त्रीय नियमों के अनुसार ही अन्य सम्यक्त्वधारी देव-देवियों की ध्वजा का कलर उनके स्वदेह के वर्ण के अनुसार रखना चाहिए । साथ ही उस देव-देवी के जो वाहन और आयुध हो, उनके भी चिह्न उनकी ध्वजा में बना देना चाहिए, जिससे दूर से देखकर ही अमुक मंदिर किस देव या देवी का है ? यह ख्याल दर्शकों को हो सके । उन-उन देवों और देवियों के वर्ण, वाहन और आयुध का वर्णन भी ग्रंथो में मिलता ही है, इसलिए नियम का अनुसरण करने में सवाल खड़ा नहीं किया जा सकता ।
- अपने देव-देवियों के स्थान और अन्य धर्मियों के स्थान में अंतर रहे । इस दृष्टि से अपनी ध्वजा लम्ब-चौरस आकार में ही रहनी चाहिए । साथ ही उस ध्वजा में जैन धर्म के मुख्य सिद्धांतों के सूचक स्वस्तिक, रत्नत्रयी और सिद्धशिला के अतिरिक्त चौथा सूर्य और पाँचवाँ चन्द्र भी शामिल किया जाना चाहिए ।

श्री देव-देवीयों की ध्वजा का स्वरूपदर्शक कोष्टक

क्र.	नाम	ध्वज का वर्ण	वाहन	आयुध
1.	श्री माणिभद्रवीर	श्याम (काला)	७ सूंढवाला ऐरावत हाथी	डमरू, नागपाश (त्रिशूल खड्ग, मुद्गर, अंकुश)
2.	श्री घंटाकर्णवीर	पीला	–	धनुष्य, घंट (खड्ग, अंकुश)
3.	श्री नाकोडा भैरव	श्याम (काला)	नाग	खप्पर, खट्वांग (डमरू, त्रिशूल, पाश)
4.	कोई भी क्षेत्रपाल	हल्का सा लीला (हरा)	सर्प	त्रिशूल, अंकुश (खड्ग डमरू, अक्षमाला, सर्प)
5.	श्री पद्मावती माता	चमकीला पीला	पद्म (कमल)	पाश, अंकुश (बीजोरू)
6.	श्री सरस्वती माता	श्वेत	हंस-मयूर	पुस्तिका, अक्षमाला (कमल, वीणा)
7.	श्री महालक्ष्मी माता	पीला	कमल	अभय एवं वरद मुद्रा (कमल)

- जिस किसी देव या देवी का स्वतंत्र मंदिर या देरी बनायी हुई हो वहाँ शास्त्र के आधारित एवं उनके मूर्तिविधान के अनुसार किस प्रकार की ध्वजा चढाना, वो जैन शिल्प विधान ग्रंथ में दर्शाया गया है ।

ध्वजा पर अंकन एवं सुशोभन

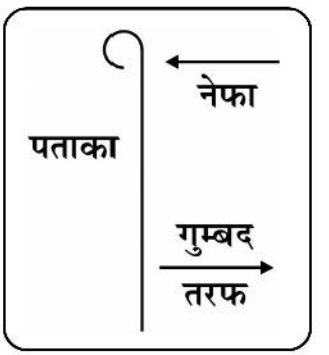
- ध्वजा में दोनों तरफ उपर से नीचे अनुक्रम से सिद्धशिला-रत्नत्रयी-स्वस्तिक-सूर्य एवं चंद्र; इतनी वस्तुओं का अंकन आवश्यक माना गया है । उसी प्रकार ध्वजा के पिछे वाले भाग में (मंदिर के पिछे से दिखायी दे वैसा) चोंत्रीशा यंत्र अवश्य करें ।
- चोंत्रीशा यंत्र (२ प्रकार से)

५	१६	३	१०
४	९	६	१५
१४	७	१२	१
११	२	१३	८

६	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

पताका में नेफ़ा के स्थान के बारे में

- पताका को बनाने में ऊपर और मोड़कर जो सिलाई की जाती है उसे नेफा कहा जाता है । पताका फहराते समय इस नेफा का मोड़कर सिलाई किया हुआ हिस्सा किस और रखें यह महत्त्वपूर्ण है, जिसका ड्रोइंग हमने यहाँ दिया हुआ है । पताका फहराने में नेफा पीछे की और ही (जहाँ चोंत्रीशा यंत्र होता है उस ओर ही) रहना चाहिए ऐसा जरूरी है । नेफा आगे आने पर पताका उलटी फहराई मानी जाएगी ।



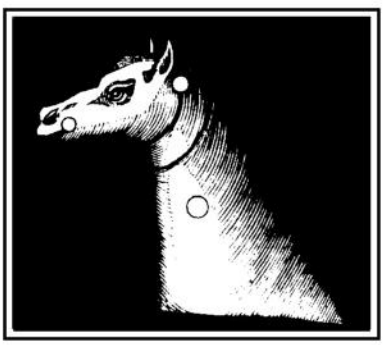
ध्वजा के विषय में ध्यान रखने योग्य बातें

- ध्वजा का नाप निश्चित होता है, उसे लिखकर रखना चाहिये, जिससे प्रतिवर्ष नयी ध्वजा बनाते वक्त उपयोगी हो ।
- ध्वजा चढ़ाते समय उपर पाटली के साथ व्यवस्थित बांधे, जिससे वह पूरे वर्ष टिक कर रहे । ध्वजा पाटली के उपर रहकर ही लहरानी चाहिए । उसका नेफा पिछे आना चाहिए । आगे से ध्वजा को देखते समय नेफा दिखना नहीं चाहिए ।
- कोई जगह ध्वजा बांधते समय ध्यान न देने के कारण थोड़े ही समय में ध्वजा नीचे उतरती जाती है, फिर जैसे ध्वजा आधे दंड पर लहराती हो, ऐसा लगता है, जो अशुभ है ।
- प्रति वर्ष, प्रतिष्ठा के दिन शुभ मुहूर्त में मध्याह्न के पूर्व ध्वजा चढानी चाहिए ।
- उतारी हुयी ध्वजा निर्माल्य होने से नदी, कुएं अथवा सागर वगैरे में पधरानी चाहिए अथवा खड्डा खोदकर उसमें विसर्जित कर देनी चाहिए ।
- ध्वज दंड जीर्ण होने पर नये ध्वज दंड की प्रतिष्ठा, जहाँ तक संभव हो मूलनायक भगवान की प्रतिष्ठा के दिन ही करनी चाहिए । यदि संभव न हो तो ३ दिन आगे-पिछे का शुभ दिन लिया जा सकता है, लेकिन वर्षगांठ तो पूर्व प्रतिष्ठा का दिवस ही गिना जायेगा ।
- पिछले कुछ समय से मूलनायक के नाप की ध्वजा घुम्मट पर तथा उससे छोटी ध्वजा गूढ मंडप की तीन श्रृंगार चौकियों पर चढानी शुरु हुयी है । अपराजितपृच्छा जैसे प्राचीन शिल्पग्रंथ में ध्वजा संबंधी विस्तृत वर्णन होने के बावजूद भी मूलनायक छोड़कर अन्य स्थान पर मंदिर में ध्वजा चढ़ाने का नहीं कहा है । यदि स्वेच्छानुसार ध्वजा चढ़ा सकते हों तो इस विषय में कोई नियम ही नहीं रहेगा एवं मूलनायक की ध्वजा का महत्त्व भी घटेगा, यह समझने योग्य बात है । इस विषय में शिल्प स्थापत्य के विद्वान स्व. पंडित

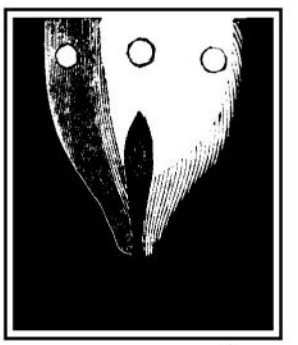
भगवानदास जैन प्रासाद मंडन की प्रस्तावना में समाधान करते हैं 'गुजरात, सौराष्ट्र एवं कच्छ आदि के कुछ गांवो में शिखर के घुम्मटों पर ध्वज दंड चढाये हुए नजर आते हैं, वे आशास्त्रीय हैं एवं देव की महत्ता भी कम होती है, क्योंकि प्रतिष्ठित देव के ऊपर ध्वजा एवं घुम्मट में दर्शन करनेवालों के ऊपर भी ध्वजा हो, वह अयोग्य है ।'

इस प्रकार मूलनायक पर ही ध्वजा हो, ऐसा हमें लगता है । इसके बावजूद भी इसे विवाद का विषय नहीं बनायें । गीतार्थ अनुभवी का मार्गदर्शन और परंपरा अनुसार विवेक एवं औचित्य पूर्वक वर्तन करें । नये बनने वाले मंदिरों में इस बात को ध्यान में लेनी चाहिए ।

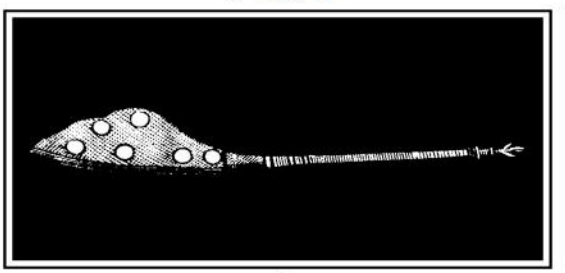
नक्षत्र चित्र पट



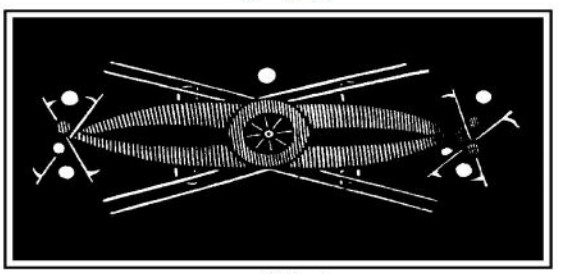
१. अश्विनी



२. भरणी



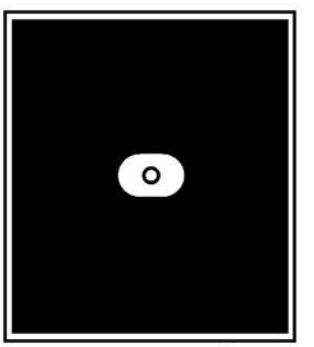
३. कृतिका



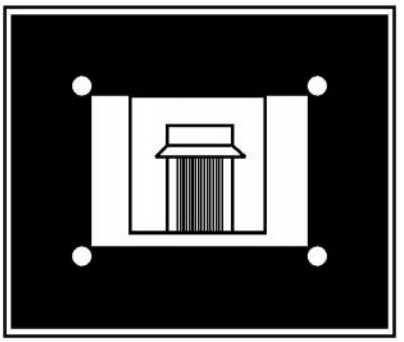
४. रोहिणी



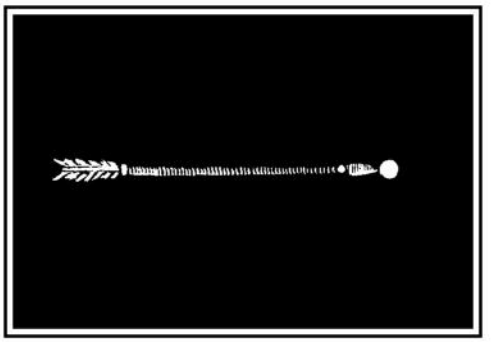
५. मृगशिर्ष



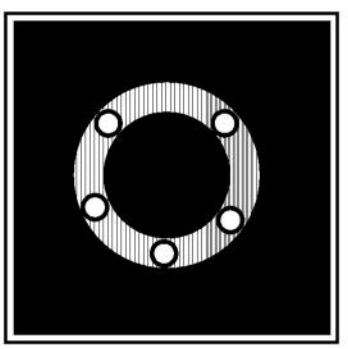
६. आर्द्रा



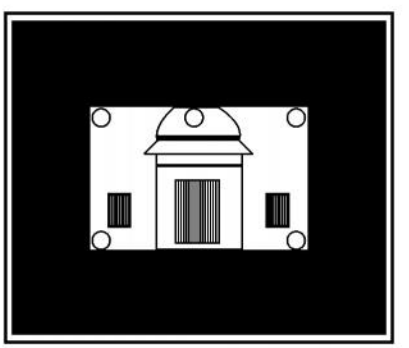
७. पुनर्वसु



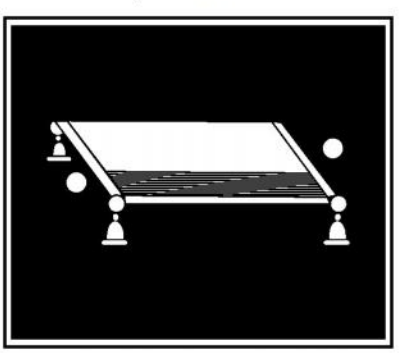
८. पुष्य



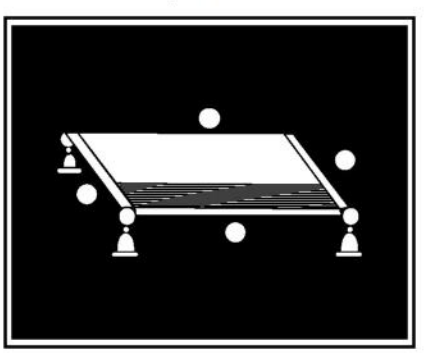
९. अश्लेषा



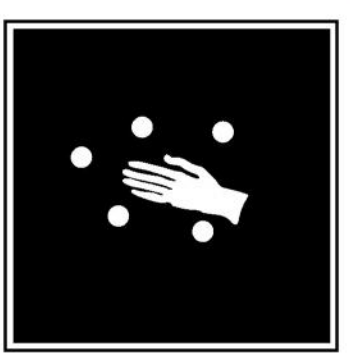
१०. मघा



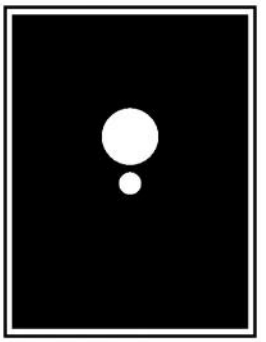
११. पूर्वाफाल्गुनी



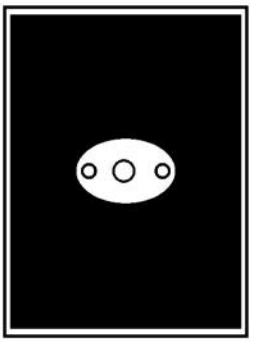
१२. उत्तराफाल्गुनी



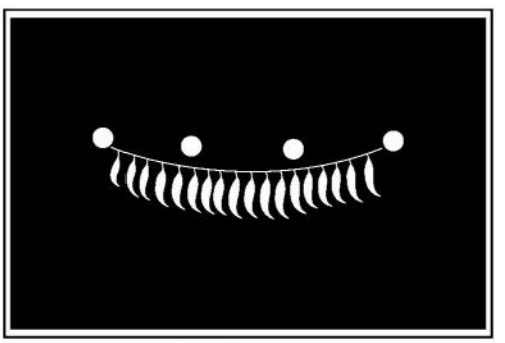
१३. हस्त



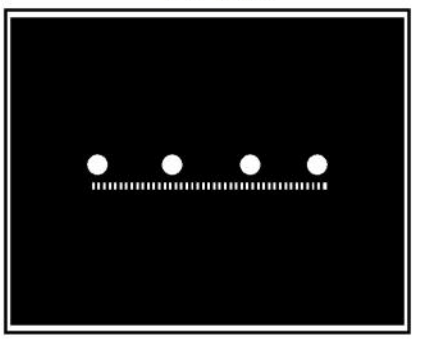
१४. चित्रा



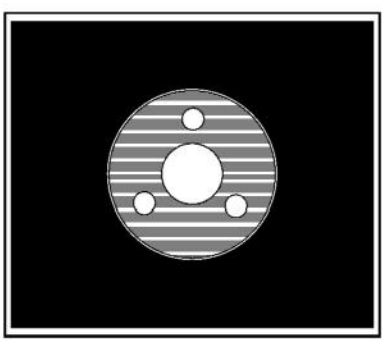
१५. स्वाति



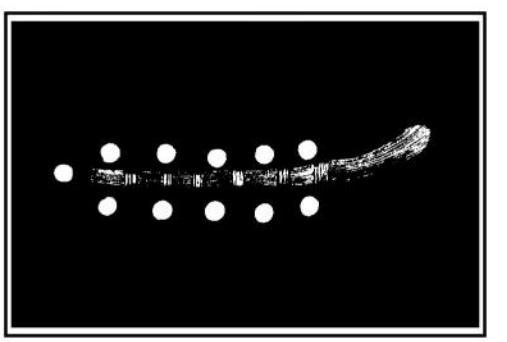
१६. विशाखा



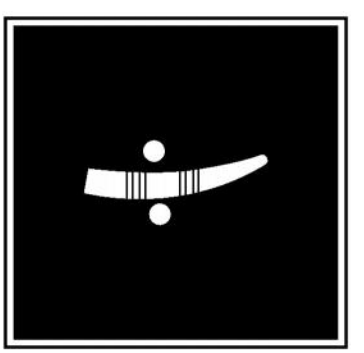
१७. अनुराधा



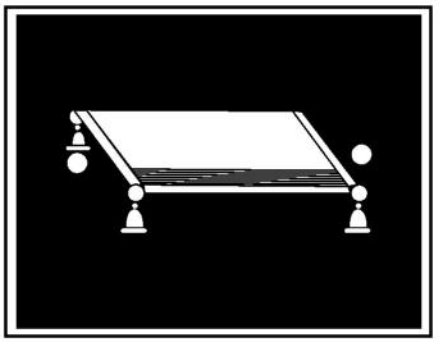
१८. ज्येष्ठा



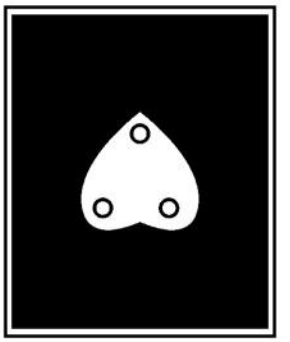
१९. मूल



२०. पूर्वाषाढा



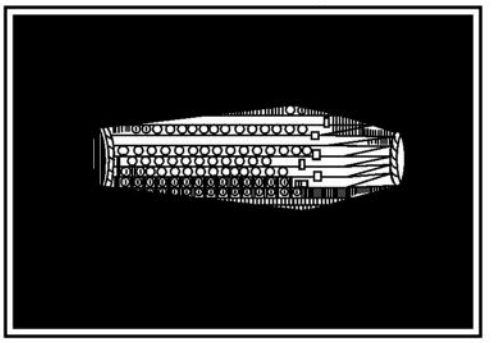
२१. उत्तराषाढा



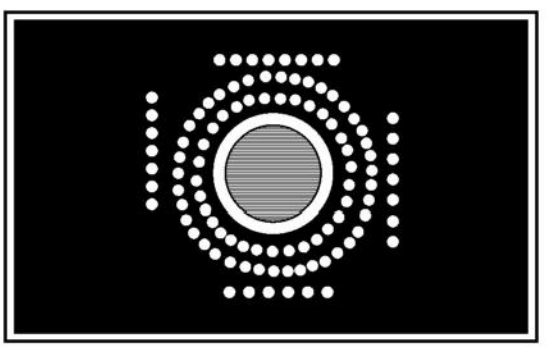
२२. अभिजीत्



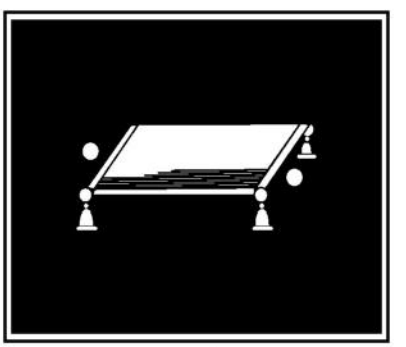
२३. श्रवण



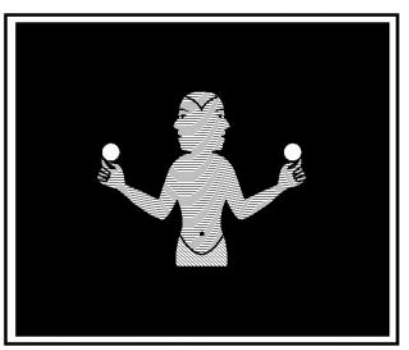
२४. धनिष्ठा



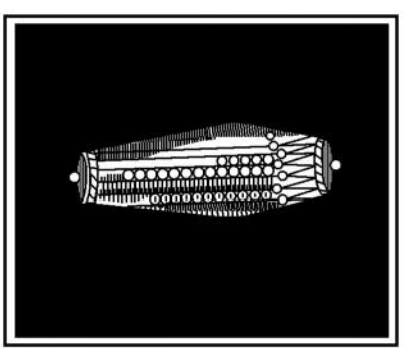
२५. शतभिषा



२६. पूर्वाभाद्रपद



२७. उत्तराभाद्रपद



२८. रेवती